☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 23.09.2017

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय में अध्ययनरत् वर्ष 2017–18 की नियमित समस्त संकायो की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि उनकी सी.सी.ई.परीक्षा दिनांक 03.10.2017 से दिनांक 10.10.2017 तक सम्पन्न होने जा रही है।

अतः समस्त छात्राएँ सी.सी.ई. परीक्षा में उपस्थित रहें।

नोट :– स्नातक स्तर पर Semi Surprise Class Test उक्त दिनांक में कभी भी कक्षा समय–सारणी अनुसार शिक्षक द्वारा ली जा सकती है।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

क्रमांक : ..../2017 खरगोन, दिनांक : 23 / 09/2017

—:: कार्यालयीन आदेश ::—

वर्ष 2017—18 के लिए नियमित विद्यार्थियों की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर सी.सी.ई. की परीक्षाऐं दिनांक 03.10.2017 से 10.10.2017 तक सम्पन्न होने जा रही है। इस हेतु सेमेस्टर प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित परीक्षा विधाऐं निम्न प्रकार से रहेगी :—

क्र.	कक्षा	विधा	प्रश्न पत्र का प्रकार
01	स्नातक स्तर —	सहसा कक्षा परीक्षण (Semi Surprise Class Test)	(Semi Surprise Class Test) के लिये विद्यार्थियों को कम से कम एक सप्ताह पूर्व तैयार रहने के लिए कहे। शिक्षक अपनी सुविधा और विद्यार्थियों की कक्षा में उप.को ध्यान में रखकर कक्षा परीक्षण आयोजित करें।
02	स्नातकोत्तर स्तर	Assingment and Presentation	आलेख पुराने प्रश्नपत्रों को हल करना संबंधित प्रदान किये जा सकते है। साथ ही आलेख प्रारंभ में विषय सूची एवं अंत में संदर्भित पुस्तकों से लिये गये अंशो के References अवश्य छात्रा से लिखे।

नोट :—

1. संबंधित प्राध्यापक स्नातकोत्तर छात्रा से आलेख ए—4 आकार के कागज पर ही तैयार करके प्राप्त करें।
2. संबंधित प्राध्यापक विषय से संबंधित छात्राओं की सूची दिनांक 28.09.2017 को श्री हरिमेश यादव से प्राप्त करें।
3. सी.सी.ई. उपरांत सम्पूर्ण दस्तावेज 7 दिवस के अंदर सेमेस्टर सेल में जमा करें।
4. सी.सी.ई. उपरांत ऑनलाईन मार्क्स एवं संबंधित दस्तावेज सेमेस्टर सेल में जमा करावें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ संयोजक
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 14.12.2017

-:: आवश्यक सूचना ::-

महाविद्यालय की समस्त नियमित बी.ए./बी.एस.सी./बी.एच.एस.सी./बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि दिनांक 15.12.2017 से 23.12.2017 तक शीतकालिन अवकाश होने से छ:माही सी.सी.ई. परीक्षा 2017–18 दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में आयोजित की जावेगी।

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

14/12/17
(सेमेस्टर प्रभारी)

D/GDC/2017-18/GENRAL/ SUCHANA Let.

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 07.03.2018

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय की समस्त स्नातक नियमित चतुर्थ एवं षष्ठम सेमेस्टर एवं स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि उनकी सी.सी.ई. परीक्षा दिनांक 12.03.2018 से 17.03.2018 आयोजित होगी। अतः समस्त छात्राऐं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

दिनांक :- 07/03/2018

पावक क्र. - 186/18

–:: कार्यालयीन आदेश ::

महाविद्यालय के समस्त शैक्षणिक स्टॉफ को सूचित किया जाता है कि स्नातक चतुर्थ एवं षष्ठम सेमेस्टर कक्षा एवं स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर वर्ष 2017–18 की छात्राओं की सी.सी.ई. परीक्षा दिनांक 12.03.2018 से 17.03.2018 तक कक्षा समय–सारणी में आयोजित कर सेमेस्टर प्रकोष्ठ को सूचित कर एम.पी.ऑनलाईन लिंक पर विषयवार अंक प्रेषित करें।

सेमेस्टर प्रभारी

प्राचार्य

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.		क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.	
	शौक्षणिक स्टॉफ					कार्यालयीन स्टॉफ			
1.	डॉ0 एम.के.गोखले	प्राचार्य			1.	श्री लालसिंह यादव	मुख्य लिपिक		
2	डॉ.आर.के.यादव	सह–प्रा. समाजशा.			2	श्री देवेसिंह चौहान	सहा.ग्रेड 2		
3	डॉ.आर.एस.कर्मा	स.प्रा. हिन्दी साहित्य			3.	श्रीमती सुनिता गौसर	सहा.ग्रेड 3		
4.	प्रो0 ए.एस.बामनिया	स.प्रा. समाजशास्त्र			4.	सुश्री ग्यारस गुप्ता	प्रयो.तक.		
5.	प्रो0 जयंती जोशी	स.प्रा. गृह विज्ञान			5.	श्रीमती मीरा गांगोडे	प्रयो.तक.		
6	प्रो0 गीता मेहरा	स.प्रा. समाजशास्त्र			6.	श्रीमती दीपिका सेठे	प्रयो.तक.		
7	डॉ.एम.एस.सोलंकी	स.प्रा. प्राणिकी			7.	श्रीमती गरिमा ठाकुर	प्रयो.तक.		
8	प्रो0 ममता गोयल	स.प्रा. गृह विज्ञान			8	श्री कन्हैया लाल यादव	भृत्य		
9	प्रो. मनीषा चौहान	स.प्रा. राजनीति			9	श्री मीरा रोकडे	भृत्य		
10	प्रो.धर्मेन्द्र भालसे	स.प्रा. भौतिकी			10	श्री मो. आरिफ	स्वीपर		
11	प्रो.के.सी. केथवास	स.प्रा. वनस्पति			11	श्री लोकेश वर्मा	प्रयो. परि.		
12	प्रो.अमरजेन्सी सोलंकी	स.प्रा. रसायन			12	श्री राजीव रोकड़े	प्रयो.परि.		
13	प्रो.प्रीती राठौड (हाड़ा)	स.प्रा. अंग्रेजी							
	अतिथि विद्वान (शैक्षणिक)								
1	डॉ0 एस.एच. जाफरी	उर्दू							
2	श्री सुभाष मण्डलोई	गणित			15	जनभागीदारी समिति (सहायक)			
3	श्री श्याम कुमार खाण्डे	ग्रंथपाल			1	श्री गोपाल पाल	भृत्य		
					2	श्री संतोष धुले	भृत्य		
	जनभागीदारी समिति (शैक्षणिक)				3	श्रीमती राधा सोलंकी	भृत्य		
1	श्री .हरीश पूरे	कम्प्यूटर			4	श्री नारायण गाड़गे	भृत्य		
2	श्री.मनीष रघुवंशी	कम्प्यूटर			5	श्री गणेश अबोले	भृत्य		
3	श्री प्रमोद सावनरे	वाणिज्य			6	श्री तुलसीराम सोनारे	भृत्य		
4	श्रीमती कविता मण्डोवरा	वाणिज्य			7	श्री पवन बागदरे	भृत्य		
5	श्रीमती रश्मि कड़वाने	समाज कार्य			8	श्री ईसाक खान	भृत्य		
6	श्री.विनोद कुमार पटेल	समाज कार्य			9	श्री राहूल खरे	भृत्य		
7	श्री.मुकेश कुमार सावंले	अर्थशास्त्र			10	श्री रामेश्वर कनौजे	भृत्य		
8	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान			11	श्री सुनिल चौहान	भृत्य		
9	प्रो.श्रृद्धा महाजन	गृहविज्ञान				जनभागीदारी समिति (अशैक्षणिक स्टॉफ)			
10	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान			1	श्री अनिल सुनेर	कम्प्यू.तक.		
11	श्री राजकुमार शिन्दे	अंग्रेजी			2	श्री हरिमेश यादव	कम्प्यू.तक.		

विद्यालय ______________________

त्रैमासिक / अर्द्धवार्षिक / वार्षिक / प्री-बोर्ड / पूरक परीक्षा सन् 20............ पेज

Terminal / Half Yearly /Annual /Pre-Board/ Supplementary Exam. Year 20..............

रोल नं. (अंको में) Roll No.(In Fig.) | | | | | | | | | | | |

संस्था कोड

रोल नं. (शब्दों में) Roll No.(In Words) | | | | | | | | | | | |

नाम(Name) आयुश्री पाटीदार कक्षा(Class) BH.Sc 1 sem विभाग(Sec.) ________

विषय(Sub.) शरीर क्रिया विज्ञान प्रश्न पत्र (Q. Paper) ________ परीक्षा का दिन(Day) गुरुवार दिनांक (Date) 28/12/2017

प्रश्न संख्या Q.No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	कुल योग Total	अन्य/Remark
प्राप्तांक Marks																	
प्रश्न संख्या Q.No.	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30		अन्य/Remark
प्राप्तांक Marks																	

सूचना : नीचे की पंक्ति से लिखना प्रारम्भ करें । पृष्ठ के दोनों ओर लिखना अनिवार्य है।

Note: Start Writing from the below line. Use both side of the Page.

हस्ताक्षर पर्यवेक्षक

Signature of Invigilator

Qus 1 -> भिन्न कोशिका की संरचना

Qus 2 -> रक्त के कार्य लिखिए एवं रक्त कणिकाओं के प्रकार को समझाए।

Qus 3 -> यकृत के कार्य लिखिए। एवं भोजन के प्रक्रिया को समझाइए।

5/10 [signature]

2

Ques ->

Ans -> रक्त के कार्य ->

रक्त एक यह प्रक्रिया है। जो भोजन के द्वारा होती है। हमारे शरीर में रक्त का अत्यधिक महत्व रक्त के द्वारा शरीर में हिमोग्लोबिन की उतेजना होती है। कोशिका झिल्ली अशुद्ध रक्त ग्रहण कर शुद्ध रक्त बाहर निकलती है। वही हमारा ह्रदय पम्प द्वारा शुद्ध रक्त ग्रहण करता है व अशुद्ध रक्त बाहर निकलता है। यह क्रिया निरंतर चलती रहती है।

1) रक्त के कार्य हमारे शरीर मे पानी की पूर्ति करता है।
2) रक्त हमारे फेफड़े मे शुद्ध रक्त पहुँचा कर उसे शुद्ध करता है। ?
3) रक्त भोजन को पचाने मे सहायक होता है।
4) भोजन पदार्थो का परिवहन करता है।
5) आयरन संतुलन बनाए रखता है।

(2)

रक्त कणिकाओ के प्रकार ->

1) रक्त कणिकाएँ लाल रक्त कणिकाओं से होता है।
2) रक्त कणिकाएँ श्वेत रक्त कणिकाओ का होता है।
3) रक्त कणिकाए रक्त मे पाई जाती है।
4) रक्त कणिकाए हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करती है।
5) रक्त कणिकाएँ अत्यधिक लाल होती है।
6) रक्त कणिकाए अत्यधिक कोशिकाओ मे पाई जाती है
7) रक्त कणिकाए गोल व रक्त मे गोलाई के रूप मे पाई जाती है।
8) रक्त की कमी होने पर रक्त कणिकाओं की भी कमी होती है।
9) रक्त कणिकाओं शरीर मे अधिक होते है।
10) रक्त कणिकाए व तरल व गाढी होती है।

3.) ~~(struck out)~~
Ans
Ans: यवृत के कार्य ->

1) यवृत पित रस का पाचन करता है।
2) यवत अशुद्ध रक्त को शुद्ध करता है
3) यवत भोज्य पदार्थों को सही करने मे मदद करता है।
4) यवत मे शुद्ध रक्त पाया जाता है। वह शुद्ध का शुद्धि करण करता है।

रवत पित रस से मिलकर पाचन की क्रिया करता है। करवे शुद्ध यवृतरक्त का निर्माण करता है। हमारे शरीर मे दो यवत होते है। शरीर में एक यवत निकल कर क्यो दे तो भी शरीर ठीक रहता है।
शरीर से यवत निकल कर दूसरा यरत किसी कारन बस लगा देते है। भी स्वस्थ शरीर होमा रहेगा।
यवत हमारे शरीर की पाचन क्रिया अच्छे से करता है। यवत शरीर की बिमारियो को मिटाने का कार्य करता है। यवत हमारे शरीर की मदद करता है।

(3)

भोजन पाचन कि क्रिया -> रवत पित रस द्वारा भोजन को पाचन करता है। जब हम शुद्ध भोजन करते है। तह चबा - चबा कर भोजन करते है। या जो जैसा भी भोजन करते है। व ब भोजन पाचन केन्द्र मे जाता है। फिर उस केन्द्र मे अशुद्ध भोजन अच्छा होता है। रक्त बनाने में सहायक होती है। जब भोजन ग्रहण किया जाता है तो ज्यादा चबा कर करना चाहिए। जिससे पाचन केन्द्र अच्छा रहता है।

भोजन शरीर मे यकृत के हृय अच्छा रहता है। पित्त रस का निर्माण करता है भोजन को पाचन केन्द्र की ओर ले जाते है यकृत हमारे शरीर को अच्छा रखता है

शासकिय कन्या शाला खरगोन

विद्यालय :

मुख्य उत्तर पुस्तिका   केन्द्र क्रमांक ....

स्थानीय परीक्षा – त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक/प्री–बोर्ड/वार्षिक/पूरक परीक्षा सन् 201

नाम परीक्षार्थी दिपाली ऑजने

रोल नम्बर अंकों में 0

रोल नम्बर शब्दों में

कक्षा/वर्ग B.H. SC   कक्ष क्र.

विषय शरिर क्रिया विज्ञान

दिनांक 28/12/2017 201.7   वार गुरुवार

पूरक उ. पुस्तिका संख्या X   माध्यम हिन्दी

हस्ताक्षर पर्यवेक्षक (1) ....

(2) ....

अंक–तालिका

प्र.क्र.	प्राप्तांक	प्र.क्र.	प्राप्तांक	प्र.क्र.	प्राप्तांक
1		11		21	
2		12		22	
3		13		23	
4		14		24	
5		15		25	
6		16		26	
7		17		27	
8		18		28	
9		19		29	
10		20		30	

कुल योग

हस्ताक्षर परीक्षक ....

नोट : कृपया नीचे से लिखना प्रारंभ करें । पृष्ठ के दोनों ओर लिखें ।

(1) कोशिका के कार्य एव सरचना लि

(2) रक्त के कार्य एव रक्त कणिकाए प्रका

(3) लिवर या यकृत के कार्य लि एव भोजन के पाचन को समझाइए

5/10

Sradhaji

① रक्त के कार्य एव प्रकार को समझाइए

उ० => रक्त के कार्य :-

रक्त एक वह प्रक्रिया है जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है।

2] रक्त भोजन ~~को~~ का पाचन करता है।

3) ~~रक्त हमारे शरिर फेफड़ो को स्वस्थ रखता है।~~

(3) पानी का सन्तुलन बनाए रखना

4] निरन्थयोगी पदार्थो का निष्कासन

5] अम्ल क्षार सन्तुलन बनाए रखना

(6) आचन सन्तुलन बनाये रखना

(7) शारिरिक ताप का नियमन

8] भोज्य पदार्थो का परिवरवहन

1] रक्त भोजन का पाचन करता है :-

रक्त हमारे शरिर मे भोजन का पाचन करता है। भोजन को हम धिरे-धिरे चबाते है। इस से हमारे भोजन का पाचन होता है,

2] पानी का सन्तुलन बनाए रखना :-

हमारे शरीर मे पानी की बहुत अवश्यकता होती है। पानी ज्यादा से ज्यादा पिना चाहिए

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 23.09.2017

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय में अध्ययनरत् वर्ष 2017–18 की नियमित समस्त संकायो की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि उनकी सी.सी.ई.परीक्षा दिनांक 03.10.2017 से दिनांक 10.10.2017 तक सम्पन्न होने जा रही है।

अतः समस्त छात्राएँ सी.सी.ई. परीक्षा में उपस्थित रहें।

नोट :– स्नातक स्तर पर Semi Surprise Class Test उक्त दिनांक में कभी भी कक्षा समय–सारणी अनुसार शिक्षक द्वारा ली जा सकती है।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

क्रमांक : ~~/2017 खरगोन, दिनांक : 23 / 09/2017

—:: कार्यालयीन आदेश ::—

वर्ष 2017—18 के लिए नियमित विद्यार्थियों की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर सी.सी.ई. की परीक्षाऐं दिनांक 03.10.2017 से 10.10.2017 तक सम्पन्न होने जा रही है। इस हेतु सेमेस्टर प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित परीक्षा विधाऐं निम्न प्रकार से रहेगी :—

क्र.	कक्षा	विधा	प्रश्न पत्र का प्रकार
01	स्नातक स्तर —	सहसा कक्षा परीक्षण (Semi Surprise Class Test)	(Semi Surprise Class Test) के लिये विद्यार्थियों को कम से कम एक सप्ताह पूर्व तैयार रहने के लिए कहे। शिक्षक अपनी सुविधा और विद्यार्थियों की कक्षा में उप.को ध्यान में रखकर कक्षा परीक्षण आयोजित करें।
02	स्नातकोत्तर स्तर	Assingment and Presentation	आलेख पुराने प्रश्नपत्रों को हल करना संबंधित प्रदान किये जा सकते है। साथ ही आलेख प्रारंभ में विषय सूची एवं अंत में संदर्भित पुस्तकों से लिये गये अंशो के References अवश्य छात्रा से लिखे।

नोट :—

1. संबंधित प्राध्यापक स्नातकोत्तर छात्रा से आलेख ए—4 आकार के कागज पर ही तैयार करके प्राप्त करें।
2. संबंधित प्राध्यापक विषय से संबंधित छात्राओं की सूची दिनांक 28.09.2017 को श्री हरिमेश यादव से प्राप्त करें।
3. सी.सी.ई. उपरांत सम्पूर्ण दस्तावेज 7 दिवस के अंदर सेमेस्टर सेल में जमा करें।
4. सी.सी.ई. उपरांत ऑनलाईन मार्क्स एवं संबंधित दस्तावेज सेमेस्टर सेल में जमा करावें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ संयोजक
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 14.12.2017

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय की समस्त नियमित बी.ए./बी.एस.सी./बी.एच.एस.सी./बी. कॉम. प्रथम वर्ष की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि दिनांक 15.12.2017 से 23.12.2017 तक शीतकालिन अवकाश होने से छः माही सी.सी.ई. परीक्षा 2017–18 दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में आयोजित की जावेगी।

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

14/12/17
(सेमेस्टर प्रभारी)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226
e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 07.03.2018

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय की समस्त स्नातक नियमित चतुर्थ एवं षष्ठम सेमेस्टर एवं स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि उनकी सी.सी.ई. परीक्षा दिनांक 12.03.2018 से 17.03.2018 आयोजित होगी। अतः समस्त छात्राऐं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

☎:(07282)-231372
Fax:(07282)-232226

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

दिनांक :- 07/03/2018

आवक क्र. - 186/18

–:: कार्यालयीन आदेश ::

महाविद्यालय के समस्त शैक्षणिक स्टॉफ को सूचित किया जाता है कि स्नातक चतुर्थ एवं षष्ठम सेमेस्टर कक्षा एवं स्नातकोत्तर द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर वर्ष 2017–18 की छात्राओं की सी.सी.ई. परीक्षा दिनांक 12.03.2018 से 17.03.2018 तक कक्षा समय–सारणी में आयोजित कर सेमेस्टर प्रकोष्ठ को सूचित कर एम.पी.ऑनलाईन लिंक पर विषयवार अंक प्रेषित करें।

सेमेस्टर प्रभारी

प्राचार्य

क्र.	नाम	पदनाम	हस्ता.	क्र.	नाम	पदनाम	हस्ता.
	शैक्षणिक स्टॉफ				कार्यालयीन स्टॉफ		
1.	डॉ0 एम.के.गोखले	प्राचार्य		1.	श्री लालसिंह यादव	मुख्य लिपिक	
2	डॉ.आर.के.यादव	सह–प्रा. समाजशा.		2	श्री देवेसिंह चौहान	सहा.ग्रेड 2	
3	डॉ.आर.एस.कर्मा	स.प्रा. हिन्दी साहित्य		3.	श्रीमती सुनिता गौसर	सहा.ग्रेड 3	
4.	प्रो0 ए.एस.बामनिया	स.प्रा. समाजशास्त्र		4.	सुश्री ग्यारस गुप्ता	प्रयो.तक.	
5.	प्रो0 जयंती जोशी	स.प्रा. गृह विज्ञान		5.	श्रीमती मीरा गांगोडे	प्रयो.तक.	
6	प्रो0 गीता मेहरा	स.प्रा. समाजशास्त्र		6.	श्रीमती दीपिका सेठे	प्रयो.तक.	
7	डॉ.एम.एस.सोलंकी	स.प्रा. प्राणिकी		7.	श्रीमती गरिमा ठाकुर	प्रयो.तक.	
8	प्रो0 ममता गोयल	स.प्रा. गृह विज्ञान		8	श्री कन्हैया लाल यादव	भृत्य	
9	प्रो. मनीषा चौहान	स.प्रा. राजनीति		9	श्री मीरा रोकडे	भृत्य	
10	प्रो.धर्मेन्द्र भालसे	स.प्रा. भौतिकी		10	श्री मो. आरिफ	स्वीपर	
11	प्रो.के.सी. केथवास	स.प्रा. वनस्पति		11	श्री लोकेश वर्मा	प्रयो. परि.	
12	प्रो.अमरजेन्सी सोलंकी	स.प्रा. रसायन		12	श्री राजीव रोकड़े	प्रयो.परि.	
13	प्रो.प्रीती राठौड (हाड़ा)	स.प्रा. अंग्रेजी					
	अतिथि विद्वान (शैक्षणिक)						
1	डॉ0 एस.एच. जाफरी	उर्दू					
2	श्री सुभाष मण्डलोई	गणित		15	जनभागीदारी समिति (सहायक)		
3	श्री श्याम कुमार खाण्डे	ग्रंथपाल		1	श्री गोपाल पाल	भृत्य	
				2	श्री संतोष धुले	भृत्य	
	जनभागीदारी समिति (शैक्षणिक)			3	श्रीमती राधा सोलंकी	भृत्य	
1	श्री .हरीश पूरे	कम्प्यूटर		4	श्री नारायण गाड़गे	भृत्य	
2	श्री.मनीष रघुवंशी	कम्प्यूटर		5	श्री गणेश अबोले	भृत्य	
3	श्री प्रमोद सावनरे	वाणिज्य		6	श्री तुलसीराम सोनारे	भृत्य	
4	श्रीमती कविता मण्डोवरा	वाणिज्य		7	श्री पवन बागदरे	भृत्य	
5	श्रीमती रश्मि कड़वाने	समाज कार्य		8	श्री ईसाक खान	भृत्य	
6	श्री.विनोद कुमार पटेल	समाज कार्य		9	श्री राहूल खरे	भृत्य	
7	श्री.मुकेश कुमार सावंले	अर्थशास्त्र		10	श्री रामेश्वर कनौजे	भृत्य	
8	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान		11	श्री सुनिल चौहान	भृत्य	
9	प्रो.श्रृद्धा महाजन	गृहविज्ञान			जनभागीदारी समिति (अशैक्षणिक स्टॉफ)		
10	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान		1	श्री अनिल सुनेर	कम्प्यू.तक.	
11	श्री राजकुमार शिन्दे	अंग्रेजी		2	श्री हरिमेश यादव	कम्प्यू.तक.	

विद्यालय

त्रैमासिक / अर्द्धवार्षिक / वार्षिक / प्री–बोर्ड/ पूरक परीक्षा सन् 20.................. पेज

Terminal / Half Yearly /Annual /Pre-Board/ Supplementary Exam. Year 20..............

रोल नं. (अंको में) Roll No.(In Fig.)

रोल नं. (शब्दों में) Roll No.(In Words)

संस्था कोड

नाम(Name) आयुषी पाटीदार कक्षा(Class) BH.Sc 1 sem विभाग(Sec.)

विषय(Sub.) शरीर क्रिया विज्ञान प्रश्न पत्र (Q. Paper) परीक्षा का दिन(Day) गुरुवार दिनांक (Date) 28/12/2017

प्रश्न संख्या Q.No.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	कुल योग Total	अन्य/Remark
प्राप्तांक Marks																	

प्रश्न संख्या Q.No.	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30		अन्य/Remark
प्राप्तांक Marks																	

सूचना : नीचे की पंक्ति से लिखना प्रारम्भ करें . पृष्ठ के दोनों ओर लिखना अनिवार्य है।

Note: Start Writing from the below line. Use both side of the Page.

हस्ताक्षर पर्यवेक्षक
Signature of Invigilator

Qus 1 → निम्न कोशिका की संरचना

Qus 2 रक्त के कार्य लिखिए एवं रक्त कणिकाओं के प्रकार को समझाए।

Qus 3 → यकृत के कार्य लिखिए। एवं भोजन के प्रक्रिया को समझाए।

5/10

2

Qus ->

Ans -> रक्त के कार्य ->

रक्त एक यह प्रक्रिया है। जो भोजन के द्वारा होती है। हमारे शरीर में रक्त का अत्यधिक महत्व रक्त के द्वारा शरीर में हिमोग्लोबिन की उतेजना होती है। कोशिका झिल्ली अशुद्ध रक्त ग्रहण कर शुद्ध रक्त बाहर निकलती है। वही हमारा हृदय पम्प द्वारा शुद्ध रक्त ग्रहण करता है। व अशुद्ध रक्त बाहर निकलता है। यह क्रिया निरंतर चलती रहती है।

1) रक्त के कार्य हमारे शरीर मे पानी की पूर्ति करता है।

2) रक्त हमारे फेफड़े मे शुद्ध रक्त पहुँचा कर उसे शुद्ध करता है। — ?

3) रक्त भोजन को पचाने मे सहायक होता है।

4) भोजन पदार्थो का परिवहन करता है।

5) आयरन संतुलन बनाए रखता है।

(2)

रक्त कणिकाओं के प्रकार ->

1) रक्त कणिकाएँ लाल रक्त कणिकाओं से होता है।

2) रक्त कणिकाएँ श्वेत रक्त कणिकाओ का होता है।

3) रक्त कणिकाएँ रक्त मे पाई जाती है।

4) रक्त कणिकाएँ हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करती है।

5) रक्त कणिकाएँ अत्यधिक लाल होती है।

6) रक्त कणिकाएँ अत्यधिक कोशिकाओ मे पाई जाती है

7) रक्त कणिकाएँ गोल व रक्त मे गोलाई के रूप मे पाई जाती है।

8) रक्त की कमी होने पर रक्त कणिकाओं की भी कमी होती है।

9) रक्त कणिकाओं शरीर मे अधिक होते है।

10) रक्त कणिकाएँ व तरल व गाढ़ी होती है।

3->
ans
Ans >

यकृत के कार्य ->

1) यकृत पित्त रस का पाचन करता है।
2) यकृत अशुद्ध रक्त को शुद्ध करता है
3) यकृत भोज्य पदार्थों को सही करने मे मदद करता है।
4) यकृत मे शुद्ध रक्त पाया जाता है। वह शुद्ध का शुद्धि करण करता है।

रक्त पित्त रस से मिलकर पाचन की क्रिया करता है। करके शुद्ध यकृत रक्त का निर्माण करता है। हमारे शरीर मे दो यकृत होते है। शरीर में एक यकृत निकल कर बचा हो तो भी शरीर ठीक रहता है।
शरीर से यकृत निकल कर दूसरा यकृत किसी कारन बस लगा देते है। भी स्वस्थ शरीर हेमत रहेगा।
यकृत हमारे शरीर की पाचन क्रिया अच्छे से करता है। यकृत शरीर की बिमारियों को मिटाने का कार्य करता है। यकृत हमारे शरीर की मदद करता है।

(3)

भोजन पाचन कि क्रिया -> रक्त पित्त रस द्वारा भोजन को पाचन करता है। जब हम शुद्ध भोजन करते है। वह चबा - चबा कर भोजन करते है। या जो जैसा भी भोजन करते है। व भोजन पाचन केन्द्र मे जाता है। फिर उस केन्द्र मे अशुद्ध भोजन अच्छा करता है। रक्त बनाने मे सहायक होती है। जब भोजन ग्रहण किया जाता है तो ज्यादा चबा कर करना चाहिए। जिससे पाचन केन्द्र अच्छा रहता है।

भोजन शरीर मे रक्त के हाय अच्छा रहता है। वित्त रस का निर्माण करता है भोजन को पाचन केन्द्र की ओर ले जाते है रक्त हमारे शरीर को अच्छा रखता है

शासकिय कन्या शाला खरगोन

विद्यालय :

मुख्य उत्तर पुस्तिका   केन्द्र क्रमांक ....

स्थानीय परीक्षा – त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक/प्री–बोर्ड/वार्षिक/पूरक परीक्षा सन् 201

नाम परीक्षार्थी दिपाली आँजने

रोल नम्बर अंकों में 0

रोल नम्बर शब्दों में

कक्षा/वर्ग B.H.SC   कक्ष क्र.

विषय शरिर क्रिया विज्ञान

दिनांक 28/12/2017 201.7   वार व गुरुवार

पूरक उ. पुस्तिका संख्या X   माध्यम हिन्दी

हस्ताक्षर पर्यवेक्षक (1) ....

(2) ....

अंक–तालिका

प्र.क्र.	प्राप्तांक	प्र.क्र.	प्राप्तांक	प्र.क्र.	प्राप्तांक
1		11		21	
2		12		22	
3		13		23	
4		14		24	
5		15		25	
6		16		26	
7		17		27	
8		18		28	
9		19		29	
10		20		30	

कुल योग

हस्ताक्षर परीक्षक ....

नोट : कृपया नीचे से लिखना प्रारंभ करें । पृष्ठ के दोनों ओर लिखें ।

(1) कि कोशिका के कार्य एव सरचना लि
(2) रक्त के कार्य एव रक्त कणिकाए प्रका
(3) लिवर या यकृत के कार्य लि एव भोजन के पाचन को समझाइए

5/10

Snehajain

① रक्त के कार्य एवं प्रकार को समझाइए
उ० => रक्त के कार्य :-
रक्त एक वह प्रक्रिया है। जो हमारे शरीर को स्वस्थ रखता है।

2] रक्त भोजन का पाचन करता है।

3) ~~रक्त हमारे शरिर फेफडो को स्वस्थ रखता है।~~
③ पानी का सन्तुलन बनाए रखना
4] निरुपयोगी पदार्थो का निष्कासन

5] अम्ल क्षार सन्तुलन बनाए रखना

⑥ आयन सन्तुलन बनाये रखना।
⑦ शारिरिक ताप का नियमन

8] भोज्य पदार्थों का परिवहन

1] भोजन का पाचन करता है :-
रक्त हमारे शरिर मे भोजन का पाचन करता है। भोजन को हम धिरे-धिरे चबाते है। इसे हमारे भोजन का पाचन होता है,

2] पानी का सन्तुलन बनाए रखना :-
हमारे शरीर मे पानी की बहुत अवश्यकता होती है। पानी ज्यादा से ज्यादा पिना चाहिए

3) **निरूपयोगी भोज्य पदार्थो का निष्काशन :-**

भोज्य पदार्थो का निष्कासन करना होता है। हमे ज्यादातर हरि-सब्जियो का निष्काशन करना चाहिए।

4) **अम्ल एव क्षार का सन्तुलन बनाए रखना :-**

2½

अम्ल लिटमस पेपर को लाल कर देता है। क्षार लिटमस पेपर को निला कर देता है।

5) **आयन सन्तुलन बनाए रखना :-**

6) **शारिरिक तापमान का नियमन :-**

7) **भोज्य पदार्थो का परिवहन :-**

8) **रक्त हमारे शरिर को स्वस्थ रखता है :-**

(2) कोशिका के कार्य एव सरचना कीजिए

उ० = कोशिका की सरचना :-

कोशिका आकार - प्रकार मे छोटी होती है, तथा एक - दुसरे से भिन्न होती है। इसको देखने कि के लिए सुक्ष्मदर्शी की ह र सहायता लिए जाती है।

सन 1950 मे इलेक्ट्रान सुक्ष्मदर्शी की सहायता से वास्तविक सरचना समझी गई तथा जीव कोशिकाओ पर एक हल्का अवरण चढा होता है। इसे कोशिका भित्ती कहते है,

कोशिका के कार्य :-

यह कोशिका कोशिका निश्चित आकार प्रदान करता है।

2) कोशिका के कोमल अगो कि रक्षा करता है।

(3) इससे होकर कोशिका का निष्काशन करता है,

e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

दिनांक :- 01/11/2019

-:: आवश्यक सूचना ::

सत्र 2019-20 के नियमित विद्यार्थियों की स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर (UG एवं PG) पर प्रथम तिमाही आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा की सीसीई परीक्षा 4/11/19 से 9/11/19 तक सम्पन्न होने जा रही है। जिसमें [illegible] विद्यार्थियों हेतु सैद्धांतिक आधारित प्रश्न पत्र तैयार कर परीक्षा ली जावे प्रथम एवं द्वितीय प्रश्न पत्र 10 अंक का होगा। जिसमें 2.5 अंक के 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न एवं 2.5×3=(7.5 अंक) के तीन लघु उत्तरीय प्रश्न होंगे।

$\frac{1}{2}\times 5 = 2.5$
$2.5 \times 3 = 7.5$ = 10 अंक

प्राचार्य

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.		क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.	
	शैक्षणिक स्टॉफ					कार्यालयीन स्टॉफ			
1	डॉ. एम.के.गोखले	प्राचार्य			1	श्री लालसिंह यादव	मुख्य लिपिक		
2	डॉ.आर.के.यादव	सह–प्रा. समाजशा.			2	श्री देवेसिंह चौहान	सहा.ग्रेड 2		
3	प्रो. जयंती जोशी	स.प्रा. गृह विज्ञान			3	श्रीमती सुनिता गौसर	सहा.ग्रेड 3		
4	डॉ.एम.एस.सोलंकी	स.प्रा. प्राणिकी			4	श्रीमती मीरा गांगोडे	प्रयो.तक.		
5	डॉ.सेवंती डावर	स.प्रा. हिन्दी			5	श्रीमती गरिमा ठाकुर	प्रयो.तक.		
6	प्रो.प्रीती राठौड (हाड़ा)	स.प्रा. अंग्रेजी			6	श्री अंकित चौहान	सहा.ग्रेड 3		
7	प्रो. ममता गोयल	स.प्रा. गृह विज्ञान			7	श्री मीरा रोकडे	भृत्य		
8	डॉ.मनीषा चौहान	स.प्रा. राजनीति			8	श्री लोकेश वर्मा	प्रयो. परि.		
9	डॉ.धर्मेन्द्र भालसे	स.प्रा. भौतिकी			9	श्री राजीव रोकड़े	प्रयो.परि.		
10	प्रो.के.सी. केथवास	स.प्रा. वनस्पति			10	श्रीमती दुर्गा बामनीया	भृत्य		
11	प्रो.अमरजेन्सी सोलंकी	स.प्रा. रसायन							
	अतिथि विद्वान (शैक्षणिक)								
1	डॉ. एस.एच. जाकरी	उर्दू							
2	डॉ. सुभाष मण्डलोई	गणित				जनभागीदारी समिति (सहायक)			
3	श्री श्याम कुमार खाण्डे	ग्रंथपाल			1	श्री गोपाल पाल	भृत्य		
4	सुश्री संगीता खरे	समाजशास्त्र			2	श्री संतोष धुले	भृत्य		
जनभागीदारी समिति (शैक्षणिक)					3	श्रीमती राधा सोलंकी	भृत्य		
1	श्री .हरीश पूरे	कम्प्यूटर			4	श्री नारायण गाड़गे	भृत्य		
2	श्री.मनीष रघुवंशी	कम्प्यूटर			5	श्री गणेश अबोले	भृत्य		
3	श्री प्रमोद सावनरे	वाणिज्य			6	श्री तुलसीराम सोनारे	भृत्य		
4	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान			7	श्री पवन बागदरे	भृत्य		
5	प्रो.श्रद्धा महाजन	गृहविज्ञान			8	श्री ईसाक खान	भृत्य		
6	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान			9	श्री राहुल खरे	भृत्य		
7	श्री राजकुमार शिन्दे	अंग्रेजी			10	श्री रामेश्वर कनौजे	भृत्य		
8	श्री विनोद पटेल	समाजकार्य			11	श्री सुनिल चौहान	भृत्य		
9	कु.सुमित्रा अजनारे	अर्थशास्त्र				जनभागीदारी समिति (अशैक्षणिक स्टॉफ)			
					1	श्री हरिमेश यादव	कम्प्यू.तक.		

सत्र - 2019-20 समय - 1 घण्टा
विषय - समाजशास्त्र पूर्णांक - 10
कक्षा - B.A. I st year

प्र.1 वस्तुनिष्ठ प्रश्न —

1. विश्व में समाजशास्त्र का नाम सबसे पहले प्रयोग में आया।
(A) 1798 (B) 1842 (C) 1851 (D) 1838

2 प्राथमिक समूह किस विद्वान की अवधारणा है?
(A) कामटे (B) दुर्खीम (C) कूले (D) समनर

3 समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। यह कथन किसका है?
(A) ज्ञानसन (B) कामटे (C) मैकाइवर एवं पेज (D) गिलिन एवं गिलिन

4 "कास्ट इन इंडिया" पुस्तक के लेखक कौन है?
(A) हट्टन (B) घुरिये (C) कूले (D) रिजले

5 प्राथमिक श्रेणी के नातेदारी के प्रकार कितने है?
(A) चार (B) तीन (C) आठ (D) छः

Q.2 लघु उत्तरीय प्रश्न (कोई तीन)

प्र.1 समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा।
प्र.2 प्राथमिक समूह किसे कहते है।
प्र.3 धर्म की विशेषताएं बताइये।
प्र.4 हिन्दू संस्कारों के प्रमुख उद्देश्य का वर्णन।
प्र.5 समुदाय का अर्थ एवं परिभाषा।

शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

वर्ष 2019–20

CCE TIME TABLE : BA					
कक्षा	दिनांक	विषय	समय	कक्ष क्र.	वीक्षक
BA I YEAR	04-11-2019	हिन्दी साहित्य	12.00 से 1.00	1 से 7	
BA II YEAR	04-11-2019	समाजशास्त्र	1.00 से 2.00		
BA III YEAR	04-11-2019	राजनीति विज्ञान	2.00 से 3.00		
BA I YEAR	05-11-2019	समाजशास्त्र	12.00 से 1.00	1 से 7	
BA II YEAR	05-11-2019	राजनीति / गृहविज्ञान	1.00 से 2.00		
BA III YEAR	05-11-2019	हिन्दी साहित्य	2.00 से 3.00		
BA I YEAR	06-11-2019	राजनीति	12.00 से 1.00	1 से 7	
BA II YEAR	06-11-2019	हिन्दी साहित्य	1.00 से 2.00		
BA III YEAR	06-11-2019	समाजशास्त्र	2.00 से 3.00		
BA I YEAR	07-11-2019	अर्थशास्त्र / गृहविज्ञान	12.00 से 1.00	1 से 7	
BA II YEAR	07-11-2019	अंग्रेजी सा. / कम्प्यूटर / उर्दु	1.00 से 2.00		
BA III YEAR	07-11-2019	गृहविज्ञान / अर्थशास्त्र / उर्दु / अंग्रेजी सा.	2.00 से 3.00		
BA I YEAR	08-11-2019	कम्प्यूटर / अंग्रेजी सा.	12.00 से 1.00	1 से 7	
BA II YEAR	08-11-2019	आधार पाठयक्रम	1.00 से 2.00		
BA III YEAR	08-11-2019	कम्प्यूटर	2.00 से 3.00		
BA I YEAR	09-11-2019	आधार पाठयक्रम	12.00 से 01.00	1 से 7	
BA II YEAR	09-11-2019	उर्दु / अर्थशास्त्र	12.00 से 02.00		
BA III YEAR	09-11-2019	आधार पाठयक्रम	12.00 से 03.00		

नोटः– समस्त छात्राएँ निर्धारित समय से आधा घण्टा पूर्व महाविद्यालय में उपस्थित रहेगी अनुपस्थित रहने पर छात्राएँ स्वयं जिम्मेदार रहेगी।

संबंधित प्राध्यापक ली जाने वाली कक्षाओं से संबंधित प्रश्न–पत्र तैयार कर दिनांक 02.11.19 तक प्रो.ममता गोयल के पास जमा करावें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

वर्ष 2019–20

CCE TIME TABLE : Bsc & Bhsc

कक्षा	दिनांक	विषय	समय	कक्ष क्र.	वीक्षक
BSC I YEAR	04-11-2019	रसायन	9.00 से 10.00		
BSC II YEAR	04-11-2019	वनस्पति / भौतिकी	10.00 से 11.00	1 से 7	
BSC III YEAR	04-11-2019	प्राणीकी / कम्प्यूटर	11.00 से 12.00		
BSC I YEAR	05-11-2019	वनस्पति	9.00 से 10.00		
BSC II YEAR	05-11-2019	रसायन	10.00 से 11.00	1 से 7	
BSC III YEAR	05-11-2019	गणित	11.00 से 12.00		
BSC I YEAR	06-11-2019	प्राणीकी / कम्प्यूटर	9.00 से 10.00		
BSC II YEAR	06-11-2019	प्राणीकी / कम्प्यूटर	10.00 से 11.00	1 से 7	
BSC III YEAR	06-11-2019	रसायन	11.00 से 12.00		
BSC I YEAR	07-11-2019	गणित	9.00 से 10.00		
BSC II YEAR	07-11-2019	गणित	10.00 से 11.00	1 से 7	
BSC III YEAR	07-11-2019	वनस्पति / भौतिकी	11.00 से 12.00		
BSC I YEAR	08-11-2019	उद्यमिता	9.00 से 10.00		
BSC II YEAR	08-11-2019	पर्यावरण आधार पा.	10.00 से 11.00	1 से 7	
BSC III YEAR	08-11-2019	कम्प्यूटर	11.00 से 12.00		
BSC/BHSC I-II-III YEAR	09-11-2019	हिन्दी नैतिक मूल्य	9.00 से 10.00		
	09-11-2019	अंग्रेजी ~~पाठ्यक्रम~~	10.00 से 11.00	1 से 7	
	~~09-11-2019~~	~~नैतिक मूल्य~~	~~11.00 से 12.00~~		

नोटः– समस्त छात्राएँ निर्धारित समय से आधा घण्टा पूर्व महाविद्यालय में उपस्थित रहेगी एवं परीक्षा उत्तर पुस्तिका भी साथ लावें अनुपस्थित रहने पर छात्राएँ स्वयं जिम्मेदार रहेगी।
स[illegible]त प्राध्यापक आवश्यकतानुसार वीक्षक की ड्यूटी लगाये।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

वर्ष 2019–20

CCE TIME TABLE : BA

कक्षा	दिनांक	विषय	समय	कक्ष क्र.	वीक्षक
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	04-11-2019	समाजशास्त्र		1 से 5	प्रो.संगीता खरे श्री विनोद पटेल डॉ.एस.एच.जाफरी प्रो.प्रमोद सावनेर प्रो.हरिश पुरे कु. अजनारे
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	05-11-2019	राजनीति विज्ञान		1 से 5	डॉ.मनीषा चौहान डॉ.सेवंती डावर डॉ.एस.एच.जाफरी प्रो.प्रमोद सावनेर प्रो.राजकुमार शिन्दे
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	06-11-2019	हिन्दी			डॉ.सेवंती डावर डॉ.मनीषा चौहान प्रो.प्रीति हाड़ा प्रो.संगीता खरे प्रो.हरिश पुरे कु. अजनार
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	07-11-2019	अर्थशास्त्र		1 से 5	कु. अजनार डॉ.सेवंती डावर प्रो.संगीता खरे प्रो.प्रमोद सावनेर प्रो.राजकुमार शिन्दे प्रो.हरिश पुरे
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	07-11-2019	गृहविज्ञान		1 से 5	प्रो.जयंती जोशी प्रो.ममता गोयल डॉ.मनीषा चौहान
BA I YEAR BA II YEAR BA III YEAR	08-11-2019	आधार पाठ्यक्रम		1 से 5	डॉ.सेवंती डावर प्रो.प्रीति हाड़ा प्रो.राजकुमार शिन्दे डॉ.एस.एच.जाफरी प्रो.हरिश पुरे प्रो.प्रमोद सावनेर कु. अजनारे डॉ.मनीषा चौहान प्रो.ममता गोयल

नोटः– समस्त छात्राएँ निर्धारित समय से आधा घण्टा पूर्व महाविद्यालय में उपस्थित रहेगी अनुपस्थित रहने पर छात्राएँ स्वयं जिम्मेदार रहेगी।

ली जाने वाली कक्षाओं से संबंधित प्रश्नपत्र तैयार कर दिनांक 02.11.19 तक प्रो.ममता गोयल के पास अनिवार्य रूप से जमा करें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

सत्र 2019-2020 दिनांक - 09/11/19

विषय - हिन्दी भाषा एवं नैतिक मूल्य समय = 1 घंटा

कक्षा - B.A.I, B.com.I, B.Sc.I, B.H.Sc.I

25 पूर्णांक

खण्ड 'अ'

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर दीजिए।

प्र. (1) 'स्वतंत्रता पुकारती' कविता के रचनाकार है -

(अ) प्रसाद (ब) निराला (स) प्रेमचंद (द) महादेवी वर्मा

प्र. (2) 'पुष्प की अभिलाषा' हिन्दी की कौनसी विधा है -

(अ) कहानी (ब) कविता (स) निबंध (द) रेखाचित्र

प्र. (3) 'पूस की रात' कहानी के लेखक है -

(अ) प्रसाद (ब) प्रेमचंद (स) महादेवी वर्मा (द) निराला

खण्ड 'ब'

प्र. 1 'पुष्प की अभिलाषा' कविता का सारांश लिखिए।

प्र. 2 'पूस की रात' कहानी का सार लिखिए।

सत्र 2019 - 2020 दिनांक 08/11/19

समय = 1 घंटा

विषय - हिन्दी भाषा एवं नैतिक मूल्य

कक्षा - B.A. II, B.com. II, B.Sc. II, B.HSC II

खण्ड 'अ' पूर्णांक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर दीजिए। (2.5)

प्र.① सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना है।

(अ) सपड़ों की उड़ान (ब) वह तोड़ती पत्थर

(स) चीफ की दावत (द) सादगी

प्र.② - रवीन्द्रनाथ टैगोर को किस कृति के लिए नोबल पुरस्कार मिला -

(अ) गीतांजलि (ब) गीतगोविंद (स) साकेत (द) कामायनी

प्र. ③ 'दिमागी गुलामी' हिन्दी गद्य की कौन-सी विधा है -

(अ) कहानी (ब) जीवनी (स) निबंध (द) संस्मरण

खण्ड 'ब'

प्र. ① - 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का सारांश लिखिए।

प्र. ② - 'चीफ की दावत' कहानी का सार लिखिए।

सत्र – 2019–20 समय 1 घंटा
विषय – हिन्दी साहित्य दिनांक 05/11/19
कक्षा – B.A. III year पूर्णांक – 10

खण्ड 'अ' वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र. 1 'हिन्दी दिवस' कब मनाया जाता है –
(अ) 14 सितम्बर (ब) 24 सितम्बर (स) 8 मार्च (द) 5 जून

प्र. 2 'नाटक' विधा के कितने तत्व होते हैं –
(अ) 5 (ब) 6 (स) 7 (द) 8

प्र. 3 'संत पीपा' की भाषा क्या है –
(अ) निमाड़ी (ब) मालवी (स) बघेली (द) बुन्देली

प्र. 4 'करुणा' साहित्य की कौन सी विधा है –
(अ) कहानी (ब) निबंध (स) उपन्यास (द) नाटक

प्र. 5 प्रयोजनमूलक हिन्दी का पर्याय क्या है –
(अ) मातृभाषा (ब) राजभाषा (स) कामकाजी (द) पल्लवन

खण्ड 'ब' लघुउत्तरीय प्रश्न कोई (3)

प्र. 1 पल्लवन क्या है

प्र. 2 भाषा के विविध रूपों का वर्णन कीजिए

प्र. 3 दीपदान एकांकी का सारांश लिखिए

प्र. 4 प्रयोजनमूलक हिन्दी पर लेख लिखिए

e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 12.10.2019

-:: आवश्यक सूचना ::-

महाविद्यालय की सत्र् 2019–20 की समस्त नियमित स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष एवं स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि वार्षिक पद्धति की प्रथम तिमाही आतंरिक मूल्यांकन परीक्षा (CCE) सैद्धांतिक परीक्षा प्रश्न पत्र प्रणाली से कक्षा समय सारणीनुसार दिनांक 17.10.2019 से 23.10.2019 तक सम्पन्न होगी एवं स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं की सी.सी.ई परीक्षा (Assingment its Presentation) विद्या पर आधारित दिनांक 21.10.2019 से 24.10.2019 तक सम्पन्न होगी।

अतः छात्राऐं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित होंवे।

नोट :– सीसीई हेतु छात्राऐं परीक्षा उत्तर पुस्तिका स्वयं लावें (कॉपी नहीं लावें)

(प्रो.ममता गौयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

e-mail:hcggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 12.10.2019

—:: आवश्यक सूचना ::—

महाविद्यालय की सत्र् 2019–20 की समस्त नियमित स्नातक प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष एवं स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि वार्षिक पद्धति की प्रथम तिमाही आतंरिक मूल्यांकन परीक्षा (CCE) सैद्धांतिक परीक्षा प्रश्न पत्र प्रणाली से कक्षा समय सारणीनुसार दिनांक 17.10.2019 से 23.10.2019 तक सम्पन्न होगी एवं स्नातकोत्तर प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं की सी.सी.ई परीक्षा (Assingment its Presentation) विधा पर आधारित दिनांक 21.10.2019 से 24.10.2019 तक सम्पन्न होगी।

अतः छात्राऐं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित होंवे।

नोट :– सीसीई हेतु छात्राऐं परीक्षा उत्तर पुस्तिका स्वयं लावें (कॉपी नहीं लावें)

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन(म.प्र.),Pin-451001
07282-कार्या.231372

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

नाम - भारती गोपिचंद बड़दे

कक्षा - B.A. II nd year

विषय - गृह विज्ञान C.C.E. II

कॉलेज - शासकीय कन्या महाविद्यालय

खरगोन (म.प्र.)

दिनांक - 29/01/2019

ToPiC - गृह विज्ञान विषय का अन्तर सम्बन्ध एवं स्टैन्सिल छपाई

रोल नम्बर :- 324

प्र० गृह विज्ञान विषय का अन्तर सम्बंध है?

उद्देश्य :- गृह विज्ञान विषय का अन्तर संबंध गृह विज्ञान मे अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण स्थान है। आज के कठिन समय मे बिना अर्थशास्त्र के सिद्धान्तो के परिवार की आर्थिक व्यवस्था को संतुलित स्थिति मे बनाये रखना बहुत कठिन है। गृह के प्रत्येक पक्ष की आवश्यकताओं के लिए आर्थिक समस्या की कमी रहती है। खाने-पीने, वस्त्रों, गृह और गृह-सज्जा बालको की शिक्षा और स्वास्थ्य तथा गृह-व्यवस्था मे अन्य साधनो के लिए धन पर्याप्त नही होता। जब प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति ही नही तो गौण आवश्यकताओ का क्या कहना। कहा जाता है कि भविष्य के लिए भी कुछ आर्थिक प्रबन्ध करना बुद्धिमता है, परन्तु हो कहाँ से? अर्थशास्त्र के नियमो और सिद्धान्तो के अध्ययन से गृहिणी मितव्ययिता की विधियो का उपयोग सीख जाती है, जैसे सामान को अधिक मात्रा मे इकट्ठा खरीदना मौसम मे फलो सब्जियों आदि का संरक्षण करना, वस्त्रों का स्वयं निर्माण करना आदि। वह कम से कम खर्च मे यथा सम्भव बढ़िया सामान क्रय करने का प्रयास करती है। वह बहुत आवश्यक वस्तुओं व खर्चो के अन्तर को पहचानने लगती है और अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार उन पर खर्च करती है। अर्थशास्त्र और गृह-विज्ञान मे इतनी घनिष्ठता है कि गृह-विज्ञान को "गृह-अर्थशास्त्र" भी कहते हैं। अर्थशास्त्र गृहिणी को धन के प्रयोग मे ही नही श्रम व समय के प्रयोग मे भी मितव्ययिता के सिद्धान्त सिखाता है। इन विषय के अन्तर्गत गृह के कार्यों को इस प्रकार नियंत्रित किया जाता है तथा ऐसे उपकरणों का प्रयोग किया जाता है, जिनसे धन, श्रम व समय की बचत हो और नौकर के बिना काम चल सके।

अर्थशास्त्र के नियम गृह की आर्थिक परिस्थितियों को इस प्रकार नियंत्रित रखते है कि आर्थिक कठिनाई मे भी (बजट) बनाने से परिवार की आवश्यकताओं की बहुत कुछ पूर्ति हो सकती है। अतः सामान्य आर्थिक सुव्यवस्था के परिवार सुख-शांति से जीवन व्यतीत कर सकता है।

गृह विज्ञान का वाणिज्य से भी गहरा संबंध है, क्योंकि महिला जब पारिवारिक बजट बनाती है अथवा गृहस्थी के आय एवं व्यय का लेखा-जोखा रखती है, तो वह ऐसा तभी कर सकती है जबकि उसे लेखाकर्म का ज्ञान हो एवं अन्य छोटी-मोटी अनेक जरूरतों की पूर्ति करते समय भी वाणिज्य होने से ही गहरा संबंध है एवं अंत: अनुशासन है।

गृह-विज्ञान का गणित से सह-संबंध:-

गणित का गृह-विज्ञान से सह-संबंध स्वाभाविक ही है। ऐसा ही कोई भी गृह व पारिवारिक जीवन का क्षेत्र नहीं जिसमे थोड़ा बहुत गणित की आवश्यकता न हो। भोजन की व्यवस्था करने मे गणित के बिना काम नही चल सकता सामान सामग्री खरीदने मे उसके नापतोल मे भोजन आवश्यकताओं व इन पर व्यय का गणित ज्ञान से ही ज्ञात हो सकता है। वस्त्रों के लिए कपड़े आवश्यकताओं है। गृह-सज्जा मे कमरों के साइज के अनुकूल फर्नीचर दरवाजों-खिड़कियों के लिए परदे आदि की व्यवस्था करने मे कुछ-थोड़ा-बहुत आना ही चाहिये। जब गृह मे बढ़ाई राजगीर मजदूर व पेन्टरी काम कर तो उनकी मजदूरी आदि का भुगतान करने मे भी रुपये-पैसे, मीटरो, लीटरो, किलोग्राम आदि

विभिन्न कुलो की गृह व्यवस्था देश - विदेश के पारिवारिक रहन - सहन नही। साहित्य विभिन्न व सामाजिक मान्यताओ और आदर्शो को चिंतित करना है और उन्हे सोचने यह गृह - विज्ञान की छात्राओं को उन आदर्शों की दिशा मे प्रेरित करता है और उन्हे सोचने विचारने को विवश करता है।
गृह - विज्ञान का व्यापक क्षेत्र भी भाषा के शब्द भण्डार की वृद्धि करता ही है - गृह - विज्ञान संबंधी लेखो नाटको और वाद - विवाद के कार्य क्रम इसे अधिक सम्पन्न कर सकती जैसे पहले कहा जा चुका है अन्य विषयो मे हो तो उसमे सम्बन्धी कारण स्वाभाविक रूप के होना चाहिए। यदि व्यावहारिक पाठ खाना पकाने के विषय मे हो तो उसमे स्वच्छता स्वास्थ्य विज्ञान शिक्षा आवश्यकताओं है। उसे न तो सही सह - संबंध की स्थापना मे अवहेलना करना चाहिए। और न ही जहां संबंध नही है। वहाँ सह - संबंध करने का निरर्थक प्रयास ही करना है। 1. गृह विज्ञान का भूगोल कृषि शास्त्र 2. व उद्योगो से सह - संबंध 3. गृह विज्ञान का इतिहास से सह - संबंध 4. गृह विज्ञान का भूगोल, कृषि शास्त्र व उद्योगों से सह - संबंध शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पौष्टिक और पर्याप्त भोजन का ज्ञान देना है। अपनी - आदतों को बदले इसरे देशो से भोजन के विषय मे कुछ सीखे उन्हे कुछ सिखाये। यातायात के गतिमय साधनो की उपलब्धि ने भौगोलिक फासले बहुत कम किए है। गृह - विज्ञान का इतिहास से सह - संबंध का मानव की प्रगति का इतिहास गृह - परिवार तथा समाज

का हिसाब करना आना चाहिए। दुकानदारों के बिलों का भुगतान करने से पहले उनकी जाँच करना आवश्यक होता है। सिलाई बुनाई व कढ़ाई का भुगतान करने वाले और गृह में रोगी का ताप मान आदि लेने के लिए भी गणित की आवश्यकता है।

परिवार के कार्य :- परिवार के कार्य का हिसाब रखने तथा बजट बनाने के लिए बिना गणित के ज्ञान के काम ही नहीं चल सकता है।

गृह- विज्ञान का कला एवं हस्त कौशल सह- संबंध:-

कला और हस्तकौशल का प्रवेश गृह के प्रत्येक क्षेत्र में है। सभी गृह कार्यों में हस्त कौशल का स्थान - खाना पकाने, वस्त्र बनाने, कढ़ाई - बुनाई करने, वस्त्रों की धुलाई और गृह सज्जा में प्रमुख है। इन दस्तकारियों का आकर्षण बहुत - कुछ उनके कलात्मक प्रभाव के कारण ही है कला को दस्तकारी से अलग नहीं किया जा सकता। हाथ से बनी वस्तुओं की शोभा उनमें कला के सिद्धान्तों का मुख्य स्थान है। इसलिए गृह-विज्ञान कला व हस्त कौशलों में सहसंबंध का होना स्वाभाविक ही है। गृहविज्ञान के पाठ्यक्रम में अवश्य ही कोई ऐसा प्रकरण है, जिसका कला से संबंध न हो। कलाओं के ज्ञान से छात्राओं में कलात्मक विकास और सौन्दर्यानुभूति होती है। जिससे वे भविष्य में अपने गृहों को सुन्दर बनाने में सफल हो सकेंगी।

गृह - विज्ञान का भाषा व साहित्य से सह संबंध :- गृह- विज्ञान का भाषा व साहित्य से सह- संबंध है। भाषा के माध्यम के बिना गृह - विज्ञान शिक्षण सम्भव नहीं। साहित्य

Date: / / Page no:

विभिन्न कालों की गृह व्यवस्था देश-विदेश के पारिवारिक रहन-सहन व सामाजिक मान्यताओं और आदर्शों को चित्रित करना है। इस प्रकार यह गृह-विज्ञान की छात्राओं को उन आदर्शों की दिशा मे प्रेरित करता है। और उन्हे सोचने विचारने को विवश करता है। गृह विज्ञान का व्यापक क्षेत्र भी भाषा के शब्द भण्डार की वृद्धि करता है। गृह-विज्ञान संबंधी लेखों नाटकों और वाद-विवाद के कार्यक्रम इसे अधिक सम्पन्न कर सकते है। जैसा पहले कहा जा चुका है अन्य विषयों से सम्बन्धीकरण स्वाभाविक रूप से होना चाहिये। यदि व्यावहारिकता, पाठ खाना पकाने के विषय मे हो तो उसमें स्वच्छता स्वास्थ्य बल्कि उसकी अवहेलना करना अनुचित होगा परन्तु यहाँ गृह-विज्ञान का किसी अन्य विषय से कोई महत्वपूर्ण संबंध नही है। वहाँ ऐसा महत्वपूर्ण संबंध होता है, जो नष्ट करना है और आपने पाठ के लक्ष्य की दिशा से दूर हटना है गृह-विज्ञान शिक्षिका को अन्य विषय से सह-संबंध प्रदि प्रदर्शित करने के लिए विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है। उसे न तो सही सह-संबंधों की स्थापना मे अवहेलना करनी है। और न ही जहाँ संबंध नही है। वहाँ सह-संबंध करने का निरर्थक प्रयास ही करना है। 1. गृह-विज्ञान का भूगोल कृषि शास्त्र 2. व उद्योगों से सह-संबंध 3. गृह-विज्ञान का इतिहास से सह-संबंध गृह-विज्ञान

Date: / / Page no:

का भूगोल, कृषि शास्त्र व उद्योगों से सह-संबंध है। शरीर की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पौष्टिक और पर्याप्त भोजन का ज्ञान देना गृह-विज्ञान शिक्षण का प्रमुख अंग है। खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति भूगोल के ज्ञान का भाग है। अपने देश का उत्पादन हमारे भोजन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। विषयों में उत्पन्न होने वाले निर्मित खाद्य भी अब सरलता से उपलब्ध होने लगे हैं। देश में भोज्य पदार्थों की कमी हमें विवश करती है कि हम अपने भोजन में परिवर्तन लाये अपनी आदतों को बदल ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए हम अपनी बदलती हुई परिस्थितियों को जिनकी अध्ययन कर छात्राऐं इन्ही

1 आहार एवं पोषण विज्ञान
2 पारिवारिक संसाधनों का व्यवस्थापन
3 वस्त्र - विज्ञान एवं परिधान
4 मानव - विकास
5 गृह - विज्ञान प्रसार शिक्षा

जिनका अध्ययन कर छात्राऐं इन्ही विषय के अन्तर्गत स्नातक प्रतिष्ठा / सामान्य एवं स्नातकोत्तर डिग्री ग्रहण करती है। अनुसंधान करती है। निम्नलिखित है।

Date: / / Page no:

प्र० 2
उ० स्टैन्सिल प्रिन्टिंग :- स्टैन्सिल छपाई का प्रयोग प्राचीनकाल से ही होता है चला आ रहा है। इस विधि का उपयोग मिस्र, इटली, चीन तथा जापान मे काफी समय से होता है। आ रहा है। इसका प्रयोग दीवार, फर्श, बर्तन तथा वस्त्रों को सजावटी बनाने के लिए किया जाता था। इस सर्वप्रथम उन्नीसवीं शताब्दी के आसपास रेशमी वस्त्रों को छापने के लिए इसका उपयोग किया। इस समय यह विधि जापान तथा यूरोप मे अधिक लोकप्रिय हुई लेकिन यह एक महंगी विधि है।

1 स्टैन्सिल का निर्माण :- स्टैन्सिल बनाना एक आसान काम है। इसमे पहले नमूनो को बनाकर स्टैन्सिल को काटा जाता है।

अ. नमूना बनाना :- नमूना कागज पर बनाया जाता है, इसमे ज्यादातर ज्यामितिय फूल वाले नमूनो को बनाया जाता है, लेकिन ये सभी सरल बनाये जा सकने वाले नमूने होते है।

ब) स्टैन्सिल का काटना :- नमूना बनाने के बाद उसे पुष्टा पर उतारा जाता है, इसके लिए पहले नमूने को ट्रेसिंग पेपर पर उतारा जाता है। और कार्बन की सहायता से कार्डबोर्ड पर उतारा कर काटा जाता है। नमूने की सहायता से कार्डबोर्ड पर लगाकर काटना चाहिए।

ii **स्टेन्सिल द्वारा :-** छपाई से पहले स्टैन्सिल को टेप की सहायता से कपड़े पर चिपकाते है। फिर रंग तैयार करके उसमे स्पंज के टुकड़ों को भिगो कर स्पंज को स्टैन्सिल पर लगाकर छोड़ दिया जाता है। इसी प्रकार से पुनः स्टैन्सिल का प्रयोग किया जा सकता है। छपाई के लिए रंगों का प्रयोग विभिन्न रूपों मे करके नवीनता लाई जा सकता है।

स्टैन्सिल मे नकारात्मक नमूना :- सामान्यतः स्टैन्सिल को नमूने के हिस्से से काटा जाता है परन्तु नकारात्मक नमूना मे नमूना को छोड़कर उसकी पृष्ठ भूमि को काट कर रंगा जाता है।

स्प्रे - प्रिंटिंग द्वारा स्टैन्सिल छपाई :-

स्प्रे प्रिंटिंग द्वारा भी स्टैन्सिल छपाई की जा सकती है। इसकी मुख्यता तीन विधियाँ है।

1 पुराने दाँतों के ब्रुश द्वारा

2 गोंद से छिड़काव द्वारा

3 स्प्रे द्वारा

4 फोटो छपाई :- इस छपाई मे वस्त्र पर पहले ऐसे रसायन का लेप लगा दिया जाता है। जो कि प्रकाश का सुग्राही हो। फिर इस पर कोई की फोटो उसी प्रकार है।

कक्षा :- B.A II Year CCE I (तिमाही परीक्षा) 2019-20
प्रश्न पत्र - तंतु एवं वस्त्रविज्ञान
विषय - गृह विज्ञान

कुल अंक 10
समय 1 घंटा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न हल कीजिए (कोई 5) $\frac{1}{2} \times 5 = 2.5$ अंक

प्र० (1) जब दो या दो से अधिक एक रेशीय धागा मिलकर एंठन देकर धागे का निर्माण होता है तो वह कौन सा धागा कहलाता है।
(A) एक रेशीय धागा (B) बहुरेशीय (C) स्पन धागा (D) टेक्चर धागा।

प्र० (2) ..... प्रोटीन रेशा है।
(A) रेशम (B) लिनन (C) ग्लास (D) कपास

प्र० (3) सभी प्राकृतिक रेशों में सबसे कमजोर रेशा कौनसा है।
(A) पूर (B) कपास (C) ऊन (D) हेम्प

प्र० (4) व्यक्तित्व के मिश्रित तत्व है -
(A) अन्तःस्रावी ग्रंथियां (B) भोजन (C) पानी (D) अ-ब

प्र० (5) स्वयं को समझना का अर्थ है -
(A) स्वयं की अन्तर्वस्तु से है (B) स्वयं के विचार से है (C) अ-ब

लघु उत्तरीय प्रश्न हल कीजिए कोई तीन ($2.5 \times 3 = 7.5$ अंक)

प्र० (1) वस्त्र तंतुओं का वर्गीकरण करते हुए तंतुओं की विशेषताएँ लिखिए।

प्र० (2) रेशम के तंतु के उत्पादन की प्रक्रिया लिखिए।

प्र० (3) व्यक्तित्व का अर्थ एवं व्यक्तित्व के प्रकार लिखिए।

प्र० (4) वस्त्रोपयोगी रेशों के भौतिक एवं रासायनिक परीक्षण लिखिए।

सतत मूल्यांकन परीक्षा 2019-20
विषय :- राजनीति विज्ञान
कक्षा :- B.A. IInd year
C.C.E

पूर्णांक - 10
समय - एक घण्टा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :- इनमे से सभी - दो नम्बर

Q.1) रामायण के रचियता कौन थे।
A) तुलसीदास B) वाल्मीकि C) वेदव्यास D) बृहस्पति।

Q.2) महाभारत में शान्ति पर्व में भारतीय राजदर्शन को किस नाम से पुकारा गया है।
A) राजधर्म B) दण्डनीति C) नीतिशास्त्र D) अर्थशास्त्र।

Q.3) राजा को प्रजा के सुख में ही सन्तुष्टि प्राप्त करनी चाहिए और प्रजा के दुःख से ही दुःखी होना चाहिए।
A) महाभारत में B) रामायण में, C) शुक्रनीति में,
D) श्रीमद्भगवत गीता में।।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :- इनमे से कोई दो प्रश्न - प्रत्येक 2 नम्बर के

प्रश्न (1) प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए!

अथवा

प्रश्न मनु के सप्तांग सिद्धांत की विवेचना कीजिए!

प्रश्न (2) कौटिल्य के प्रमुख सामाजिक विचारो की विवेचना कीजिए!

अथवा

प्रश्न कौटिल्य के सप्तांग सिद्धांत का वर्णन कीजिए!

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :- इनमे से कोई दो प्रश्न - प्रत्येक प्रश्न 2 नम्बर के

प्रश्न (1) ब्रिटिश संविधान की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

प्रश्न मनु के अनुसार दण्ड की अवधारणा की परीक्षा कीजिए!

प्रश्न (2) ब्रिटिश राजमुकुट की शक्तियां एवं कार्यों की विवेचना कीजिए।

अथवा

प्रश्न राजा एवं ताज में क्या अन्तर है?

सत्र 2019-20 समय 1 घण्टा
विषय - हिन्दी साहित्य दिनांक 06/11/19
कक्षा - B.A. II year पूर्णांक = 10

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र. 1 - कवि 'निराला' का पूरा नाम क्या है -
(अ) अमरकान्त (ब) निर्मल वर्मा (स) सूर्यकांत त्रिपाठी
(द) जयशंकर प्रसाद

प्र. 2 - 'आधुनिक मीरा' किसे कहा जाता है -
(अ) कृष्णा सोबती (ब) महादेवी वर्मा (स) अमृतासिंह
(द) सुभद्रा कुमारी चौहान

प्र. 3 'आधुनिक महाकाव्य' किसे माना जाता है -
(अ) साकेत (ब) कामायनी (स) रामायण (द) यशोधरा

प्र. 4 संचारी भावों की संख्या कितनी है -
(अ) 20 (ब) 25 (स) 30 (द) 33

प्र. 5 किस काल को 'स्वर्णयुग' कहा जाता है -
(अ) आदिकाल (ब) भक्तिकाल (स) रीतिकाल (द) आधुनिक काल

लघुउत्तरीय प्रश्न (कोई तीन)

प्र. 1 - 'स्वर्णयुग' पर लेख लिखिए -

प्र. 2 - हिन्दी भाषा की उत्पत्ति पर निबंध लिखिए

प्र. 3 - मैथिली शरण गुप्त के काव्य की विशेषताएँ लिखिए

प्र. 4 - निरालाजी के प्रकृति चित्रण पर लेख लिखिए -

सत्र 2019-20 दिनांक 09/11/19

समय 1 घंटा

विषय - हिन्दी भाषा और नैतिक मूल्य

कक्षा - B.A. III, B.Com. III, B.Sc. III, B.HSc. III

खण्ड 'अ'

(2.5) प्राप्तांक

वस्तुनिष्ठ प्रश्न के उत्तर दीजिए

प्र. (1) 'सनातन धर्म' कहलाता है -

(अ) जैन धर्म (ब) हिन्दू धर्म (स) बौद्ध धर्म (द) सिक्ख धर्म

प्र. (2) भारत में रंगीन टेलीविजन कब से प्रारम्भ हुआ -

(अ) 1981 (ब) 1982 (स) 1983 (द) 1984

प्र. (3) सिक्ख धर्म के संस्थापक कौन है -

(अ) कबीर (ब) नानक (स) रैदास (द) महादेवी वर्मा

खण्ड 'ब'

प्र.1-'जनसंचार' से क्या आशय है ?

अथवा

इंटरनेट के उपकरणों पर प्रकाश डालिए।

e-mail:heggckhr@mp.gov.in Website-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 14.12.2019

–:: आवश्यक सूचना ::–

महाविद्यालय की समस्त नियमित स्नातक बी.ए./बी.कॉम./ बी.एएसी.प्रथम–द्वितीय–तृतीय वर्ष की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि छः माही आतंरिक मूल्यांकन परीक्षा सी.सी.ई.–II 27.12.2019 से प्रारंभ होगी। अतः छात्राऐं नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहें।

सेमेस्टर प्रभारी
Mamta Goyal

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

त्रिमाही आंतरिक मूल्यांकन I[st] C.C.E time table 2019-20

Department of Home Science

कक्षा → दिनांक	I 17.10.2019	II 18.10.2019	III 19.10.2019
B.H.Sc I[st] year कक्ष क्रमांक-05	1. आहारीय पोषण समय (9-10 बजे) 2. संसाधन प्रबंध का परिचय (10-11 बजे)	1. शरीर क्रिया विज्ञान (9-10) 2. प्रसार एवं संचार (10-11)	1) वस्त्र एवं तंतु विज्ञान (9-10 बजे) 2) मानव विकास का परिचय (10-11 बजे)
B.H.Sc II[nd] year कक्ष क्रमांक→ 06	1. गर्भकालीन विकास (9-10 बजे) 2. पूर्व शालेय शिक्षा (10-11 बजे)	1) पोषणिक जीव रसायन (9-10 बजे) 2) पूर्व बाल्यावस्था एवं बाल्यावस्था शिक्षा (10-11 बजे)	1) आंतरिक सज्जा आवास (9-10 बजे) 2) वस्त्र एवं परिधान (10-11 बजे)
B.H.Sc III[rd] year कक्ष क्रमांक→ 07	1. अपेरल डिजाईनिंग (9-10 बजे) 2. सामान्य एवं उपचारात्मक पोषण (10-11 बजे)	1) मार्गदर्शन एवं परामर्श (9-10 बजे) 2) घरेलू उपकरण एवं परिसज्जा (10-11 बजे)	1) किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था (9-10 बजे) 2) संचार एवं प्रसार (10-11 बजे

e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 03.10.2019

–:: आवश्यक सूचना ::–

महाविद्यालय की वर्ष 2019–20 की समस्त संकाय बी.ए.,बी.एससी.,बी.कॉम, एवं बी.एच.एससी. प्रथम/द्वितीय एवं तृतीय वर्ष एवं एम.ए.,एम.एस.डब्ल्यु, एवं एम.एच. एससी.–मानव विकास प्रथम/ तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि प्रथम तिमाही आतंरिक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) परीक्षा दिनांक 17.10.2019 से 23.10.2019 तक आयोजित होगी। सी.सी.ई. परीक्षा प्रश्न–पत्र पर आधारित होगी। साथ ही सी. सी.ई. महाविद्यालय, समय–सारणी पर ही सम्पन्न होगी। अतः नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित होवें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रभारी
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(डॉ.एम.के.गोखले)
प्राचार्य
शास.कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

D/GDC/2019-20/GENRAL/ SUCHANA Let.

"बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओं"

e-mail : heggckhr@mp.gov.in Website-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 03/02/2021

आवश्यक सूचना

महाविद्यालय की सत्र 2020–21 की अध्ययनरत समस्त नियमित छात्राओं को सूचित किया जाता है, कि स्नातक स्तर एवं स्नातकोत्तर स्तर पर सी.सी.ई. आंतरिक मूल्याकन परीक्षा फरवरी माह की निम्न तिथियों में सम्पादित होना है।

अतः छात्राऐ नियमित रूप से कक्षा में उपस्थित रहै।

क्र.	कक्षा	विधा	दिनांक	रिमार्क
1	MHSC/MA 1nd,3rd Semester .	Assignment its Presentation	5 फरवरी से 13 फरवरी 2021 तक	छात्राएँ अपने कक्षा प्राध्यापक से अपने टॉपिक प्राप्त करे।
2	MSW 1st ,3rd Sem	Assignment	5 फरवरी से 13 फरवरी 2021 तक	छात्राएँ अपने कक्षा प्राध्यापक से अपने टॉपिक प्राप्त करे।
3	BA, B.Sc., BHSC, B.Com., प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	Assignment	19 फरवरी से 27 फरवरी तक	छात्राएँ अपने कक्षा प्राध्यापक से अपने प्रश्न प्राप्त करे।

नोट– उक्त सी.सी.ई. कक्षा समय सारणी अनुसार सम्पन्न होगी।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी एवं
आनलाईन अंक प्रेषण
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

(डॉ.आर.के.यादव)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

e-mail : heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

/2021 खरगोन, दिनांक : 3/02/2021

कार्यालयीन सूचना

महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापको को सूचित किया जाता है, सत्र 2020–21 की अध्ययनरत समस्त नियमित छात्राओं के आतंरिक मूल्यांकन कार्य अपर सचिव म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल के आदेश क्र./147/188/2020/38–3 भोपाल, दिनांक 01/02/2021 के निर्देशानुसार निम्न तिथियों में सम्पादित किया जाना है। इस हेतु परीक्षा प्रभारी एवं सेमेस्टर प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित विधाएँ निम्न प्रकार से होगी।

क्र	कक्षा	विधा	दिनांक	प्रश्न पत्र का प्रकार
1	स्नातकोत्तर MHSC/MA/MSW 1nd,3rd Semester	Assignment its presentation	5 फरवरी से 13 फरवरी 2021 तक	संबंधित प्राध्यापक छात्राओं से विषय संबंधित आलेख तेयार करावे एवं प्रस्तुतीकरण मोखिक परीक्षा लेवे। **(प्रस्तुतीकरण में चार्ट,पोस्टर, PPT,Black Bord का प्रयोग किया जा सकता है)**
2	BA, B.Sc., BHSC, B.Com., प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	Assignment	19 फरवरी सक 27 फरवरी तक	इस विधा हेतु विद्यार्थियो से 01 दिर्घउत्तरीय एवं 05 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर असाइनमेट लेवे जो कि 10 अंक के होगे।

3/2/21

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी एवं
आनलाईन अंक प्रेषण
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

(डॉ.आर.के.यादव)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

"बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं"

C.C.E 2022 | चतुर्थ सेमेस्टर

(समस्त कॉलम परीक्षार्थी द्वारा स्वच्छता से भरे जाना आवश्यक है)

1.	विश्वविद्यालय का नाम	देवी अहिल्या विश्व विद्यालय इन्दौर
2.	महाविद्यालय का नाम	शा. कन्या मा. विद्यालय खरगोन
3.	पूर्व / वर्तमान परीक्षा केन्द्र का नाम यदि हो तो	खरगोन
4.	कक्षा	M.A. II year.
5.	छात्र का स्टेटस (नियमित/स्वाध्यायी/एटीकेटी/भूतपूर्व)	कुमारी अनिता भूसांकले
6.	विषय	परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र
7.	प्रश्न पत्र	प्रथम
8.	प्रश्नपत्र शीर्षक	परिवर्तन एवं विकास का समाजशास्त्र
9.	प्रश्नपत्र कोड	
10.	रोल नम्बर (अनुक्रमांक) अंकों में	3 0 8 2 0 0 1 5 - - -
	शब्दों में	तीन शून्य आठ दो शून्य शून्य एक पांच
11.	एनरोलमेंट नम्बर (नामांकन क्रमांक)	1718418
12.	प्रश्नपत्र का दिनांक	6/04/22
13.	उत्तरपुस्तिका जमा करने का दिनांक	12/04/22
14.	केन्द्र पर जमा की गई उत्तरपुस्तिका के कुल पृष्ठों की संख्या (अनिवार्यतः अधिकतम 16 पृष्ठों की होगी)	

12/15

परीक्षार्थी की घोषणा : उत्तरपुस्तिका के सभी उत्तर मेरी स्वयं की हस्तलिपि में है।

परीक्षार्थी के हस्ताक्षर अनिता

संग्रहण केन्द्र का नाम एवं सील

		प्राप्तांक						
खंड	पूर्णांक	1	2	3	4	5	6	कुल
अ								
ब								
स								

परीक्षक के हस्ताक्षर

इकाई 1. प्र.1

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ

उ.=> चेतन जगत का अनिवार्य तत्व परिवर्तन है अर्थात जो भी वस्तु चेतन है, उसमें परिवर्तन होना अवश्यम्भावी है। सामाजिक व्यवस्था एक चेतन व्यवस्था है, क्योंकि समाज या सामाजिक सम्बन्धों का अस्तित्व व्यक्तियों की चेतना में होता है, उनके अनुभवों में होता है। अतः उनमें निरन्तर परिवर्तित होते रहना स्वाभाविक है। सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता को तो भी विद्वान स्वीकार करते हैं, परन्तु सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा के विषय में समाज शास्त्रियों के विचारों में बहुत अधिक अन्तर पाया जाता है जिसके फलस्वरूप इसकी कोई सर्वसम्मत एक परिभाषा अभी तक निश्चित नहीं हो पायी है। प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं को निम्न वर्णित किया जा सकता है।

I किंग्सले डेविस

=> "सामाजिक परिवर्तन से हमारा अभिप्राय केवल उन्हीं परिवर्तनों से है जो सामाजिक संगठन अर्थात सामाजिक संरचना तथा कार्यों में घटित है।"

II जोन्स

=> "सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है जो सामाजिक प्रक्रियाओं सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक अन्तः क्रियाओं तथा सामाजिक संगठन के किसी पक्ष में होने वाले अन्तर या रूपान्तर का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया जाता है।"

सामाजिक परिवर्तन

I सार्वजनिक परिवर्तन सार्वभौमिक

⇒ सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। इसका तात्पर्य है कि यह प्रत्येक काल, क्षेत्र एवं समाज में पाई जाती है।

II सांस्कृतिक परिवर्तन का अंग

⇒ सामाजिक परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन का अंग है। सांस्कृतिक परिवर्तन अधिक विस्तृत है, क्योंकि इसमें संस्कृति के सभी तत्व आ जाते हैं।

III गति में असमानता

⇒ सामाजिक परिवर्तन की गति भिन्न होती है। प्रत्येक समाज समान क्रियाशील नहीं होते हैं, इस कारण समाज में इसकी गति तेज होती है, तो किसी में बहुत कम।

IV सामाजिक परिवर्तन अनिवार्य नियम है

⇒ सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य तथ्य है। सामाजिक संरचना कभी एक जैसी नहीं रहती। प्राकृतिक एवं सामाजिक दशाएं निरन्तर इसमें परिवर्तन करती रहती हैं।

तटस्थ अवधारणा

⇒ सामाजिक परिवर्तन एक तटस्थ अवधारणा है इसमें किसी नियम, सिद्धान्त, दिशा या अच्छे बुरे का बोध नहीं होता। इस प्रकार इसकी अवधारणा वैयक्तिक नहीं होती। एक रूप में यह सामाजिक सामुदायिक परिवर्तन है क्योंकि वह सम्पूर्ण समाज या समुदाय से संबंधित होता है।

Page No.:
Date: / /

सामाजिक परिवर्तन

सामाजिक परिवर्तन चाहे किसी भी कारण से हो, उसके लिए कुछ साधनों का होना अनिवार्य है। इन साधनों को सामाजिक परिवर्तन के स्रोत भी कहा जाता है, प्रमुख स्रोतों अथवा अभिकरणों का वर्णन इस प्रकार है-

(I) परिवार

⇒ परिवार सम्पूर्ण सामाजिक संगठन का केन्द्र बिन्दु है। परिवार से ही व्यक्ति का समाजीकरण प्रारम्भ होता है। यही कारण है कि परिवार सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन है। समाज का संगठन तथा उसका स्वरूप काफी हद तक विचार समाज संयुक्त परिवार प्रणाली के विघटन का भारतीय समाज पर पड़ा प्रभाव, उसका उदा॰ है।

II शिक्षा

⇒ सामाजिक परिवर्तनों में शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्रोत है। शिक्षा का सामाजिक मूल्यों आदि पर प्रभाव पड़ता है। समाज में किसी भी प्रकार का परिवर्तन लाने हेतु शिक्षा प्रणाली, पाठ्यक्रम आदि में परिवर्तन लाना आवश्यक होता है। व्यक्ति के सामाजिक पर इसका बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है।

III प्रचार

⇒ प्रेस, रेडियो, टेलीफोन, सिनेमा आदि प्रचार के साधनों द्वारा भी समाज में परिवर्तनों की क्रिया में महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकता है। लोगों की मनोवृतियों को यह प्रचार के साधन बहुत प्रभावित करते हैं।

IV मनोरंजन के साधन

⇒ चलचित्र आज एक प्रमुख मनोरंजन का साधन बन चुका है। चलचित्र का प्रयोग प्रचार व मनोरंजन दोनों के लिए किया जाता है।

Page No.:
Date : / /

सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप

समाज में होने वाले परिवर्तन का स्वरूप सदैव एक जैसा नहीं होता है। भिन्न-भिन्न समय में अनेक भिन्न-भिन्न रूप देखे जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त एक ही समय में किसी समाज के अनेक परिवर्तन एक साथ देखे जा सकते हैं। सामाजिक परिवर्तनों के इन स्वरूप को हम निम्नलिखित प्रकारों में बाँट सकते हैं।

I सामाजिक परिवर्तन का चक्रीय प्रतिमान

⇒ जिस प्रकार एक मौसम के बाद दूसरा, फिर तीसरा, चौथा और पुनः वही मौसम आ जाता है उसी प्रकार समाज में भी कुछ परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार का परिवर्तन एक चक्रीय प्रतिमान पेश करता है अर्थात् परिवर्तनों जिस बिंदु से आरंभ होता है उस बिंदु पर वह कुछ क्रमों के बाद पुनः आ जाता है। अर्थात् परिवर्तन जनसंख्या के क्षेत्र में जन्म एवं मृत्यु दर में उतार-चढ़ाव आता है व्यापार में कभी तेजी और कभी मंदी होती रहती है।

II सामाजिक उद्विकास

⇒ उद्विकास प्रतिमान स्पेंसर आदि के विचारों में उद्धृत है। इनके अनुसार समाज की आंतरिक संरचना में ही कुछ ऐसे तत्व रहते हैं जो समय बीतने के साथ प्रकट होते हैं। समाज में भी परिवर्तन की प्रक्रिया चलती रहती है। प्रकृति के नियमों के अनुसार धीरे-धीरे समाज में परिवर्तन होते हैं; जिनकी दिशा सरल से जटिल की ओर होती है।

Unit-2 | पृ.2 |

30 ⇒ सामाजिक परिवर्तन = 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक भारतीय समाज को परम्परागत समाज समझा जाता था। यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने हमारे देश को औद्योगिक बनाने का प्रयत्न किया और अनेक सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन लाने की भी कोशिश की, लेकिन लोगों के जीवन में गुणात्मक सुधार करने तथा उनका जीवन स्तर उठाने में उनकी कोई रुचि नहीं थी। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद क्या हम अपने समाज का आधुनिकीकरण करने में सफल हुए हैं। यदि हाँ तो परिवर्तन का स्वरूप क्या रहा है। इस प्रश्न के लिए समझना आवश्यक है कि एक परम्परागत समाज क्या है और आधुनिक समाज क्या है।

परम्परागत समाज वह है जिसमें

I. व्यक्ति की प्रस्थिति उसके जन्म से निश्चित व निर्धारित होती है अर्थात् व्यक्ति सामाजिक गतिशीलता के लिए संघर्ष नहीं करता है;

II. व्यक्ति का व्यवहार, प्रथाओं व रिवाजों से संचालित होता है और लोगों के व्यवहार में पीढ़ी दर पीढ़ी थोड़ा ही परिवर्तन आता है;

III. सामाजिक संगठन का आधार संरचना होता है;

IV. व्यक्ति अपनी पहचान प्राथमिक समूह से बनाता है तथा परस्पर अन्तर्क्रिया में नातेदारी सम्बन्ध महत्वपूर्ण होते हैं;

V परिस्थिति की अपेक्षा व्यक्ति को सामाजिक सम्बन्धों की स्थापना में अधिक महत्व दिया जाता है;

VI लोग भाग्यवादी होते हैं; अर्थव्यवस्था सरल होती है तथा जीविका से परे आर्थिक उत्पादन अपेक्षाकृत कम होता है;

इसके विपरीत आधुनिक समाज वह है जिसमें सब नया रहता अर्थ यह हुआ कि परम्परावाद तथा आधुनिक दो परम सीमाएँ हैं और ये दोनों एक साथ नहीं चल सकतीं। योगेन्द्र सिंह तथा एस. सी. दुबे जैसे विद्वानों का मत है कि दोनों का सह-अस्तित्व हो सकता है। परम्परावाद को स्वीकारने का यह अर्थ नहीं कि आधुनिकता को अस्वीकार कर दिया जाता है। इसका सरल सा अर्थ है आधुनिक की शक्तियों पर नियंत्रण। इसी प्रकार आधुनिकता के स्वीकार करने का यह अर्थ नहीं है कि परम्परावाद के केवल उन तत्वों को रखा जाए जिनको समाज द्वारा प्रकार्यात्मक माना जाए। इस दृष्टिकोण के आधार पर हमें यह पता लगाना है कि किस सीमा तक भारतीय समाज परम्परागत और किस सीमा तक यह आधुनिक हो गया है।

सामाजिक परम्परा

प्रत्येक समाज में कुछ वैचारिक, सांस्कृतिक एवं संस्थागत आधार होते हैं। इन्हीं आधारों पर किसी देश की संस्कृति की पहचान बनती है तथा उसकी प्राचीनता एवं विशेषताओं को परखा जा सकता है। किन्तु बहुत जनसंख्या वाले भारतीय समाज के भी परम्परागत रूप से इन्हें भारतीय समाज की संरचना के आधार पर विश्लेषित किया जाता है।

संस्कृतिकरण की अवधारणा

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन की एक प्रक्रिया को 'संस्कृतिकरण' कहा गया है। समाजशास्त्र में इस अवधारणा के प्रतिपादन का श्रेय डॉ. एम. ए. श्रीनिवास को जाता है। उन्होंने अपने ग्रंथ "दी रिलिजियन एण्ड सोशायटी एमंग दी कुर्ग" में इस अवधारणा का प्रतिपादन किया। इसके पश्चात उन्होंने अपने ग्रंथ "Social Change in modern India" में भी किया है।

संस्कृतिकरण एक विशिष्ट सामाजिक परिवर्तन है। इस प्रक्रिया का सीधा सम्बन्ध सामाजिक संस्तरण की व्यवस्था से है। इसके अन्तर्गत जातीय गतिशीलता देखी जाती है।

संस्कृतिकरण की परिभाषा

प्रथम :- "संस्कृतिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई हिन्दू जाति या कोई जनजाति अथवा अन्य समूह किसी उच्च एवं प्रायः द्विज जाति की दिशा में अपने रीति-रिवाज, आचार, विचारधारा और जीवन पद्धति को बदलता है।"

द्वितीय :- "संस्कृतिकरण का अर्थ केवल नई प्रथाओं और आदतों को ग्रहण करना नहीं है अपितु नए विचारों और मूल्यों को भी अभिव्यक्त करना है जो कि धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष संस्कृत साहित्य के विशाल भण्डार में बहुधा अभिव्यक्त हुआ है।"

Page No.:
Date: / /

संस्कृतिकरण

1) आधुनिक शिक्षा = भारत की परम्परागत शिक्षा कुछ खास व्यक्तियों और समुदायों तक सीमित थी। अंग्रेज भारत में आए। यहां का शासन चलाने के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार किया। अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली को भारत में सर्वप्रथम मद्रास में 1773 में खोला गया जिसका नाम "सिविलियन स्कूल" था। अनेक भारतीय शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश गए। इनके विचार और दृष्टिकोण में उदारता आई। खान-पान और रहन-सहन में परिवर्तन आया।

II नगरीकरण = भारत गांवों का देश है। यहां ग्रामीण जीवन को आदर्श माना जाता है। धीरे-धीरे ग्रामीण जनसंख्या का नगरों की ओर प्रवाह प्रारम्भ हुआ। फलस्वरूप नगरीकरण की प्रक्रिया तीव्र हुई। नगरीकरण ने लोगों के जीवन में नए परिवर्तनों का सूत्रपात किया। पवित्र कर्मों का स्थान नल ने ले लिया।

III यातायात और संचार → अंग्रेजी व्यापारी बनकर भारत आए। व्यापार की प्रगति के लिए इन्होंने यातायात और संचार साधनों का विकास किया। इन का हमारी संस्कृति के मानकों में परिवर्तन आया। सामुदायिकता की भावना का विकास हुआ। विदेशी भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रचार हुआ। संस्कृतिकरण कहलाता है।

unit 3 | प्र. 3

उ0 => नियोजन से आशय

= प्रत्येक नियोजन किसी न किसी उद्देश्य को लेकर सम्पन्न किया गया हो, उसके दो रूप होते हैं- अल्पकालीन नियोजन तथा दीर्घकालीन नियोजन अल्पकालीन नियोजन हमेशा किसी एक उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जाता है तथा इसका क्षेत्र सीमित होता है इसके विपरीत दीर्घकालीन नियोजन का क्षेत्र व्यापक एवं उद्देश्य अनेक होते हैं। नियोजन के उद्देश्यों को आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा अन्य उद्देश्यों के रूप में अध्ययन किया जा सकता है। एक नियोजन जो अर्थव्यवस्था के लिए किया जाता है उसके निम्न उद्देश्य होते हैं-

समाज में जब किसी काम को योजनाबद्ध ढंग से किया जाता है तो सामाजिक परिवर्तन में भी सुधार आता है। अतः हम स्पष्टतः कह सकते हैं। यदि समाज में योजना बनाकर परिवर्तन की दिशा निश्चित कर दी जाए तो इसे नियोजित सामाजिक परिवर्तन कहा जायेगा। एडरसन के अनुसार नियोजित परिवर्तन एक ऐसी योजना है। जिसके द्वारा सुनिश्चित सामान्यतः प्राप्त उद्देश्यों को निश्चित अवधि में प्राप्त करने का उपाय किया जाता है। सामाजिक नियोजित परिवर्तन से हमारे सैनिक परिवर्तन के सम्बन्ध हैं। अतः स्पष्ट है कि नियोजित परिवर्तन परिभाषित सामाजिक उद्देश्यों के विषय में साधनों को संगठित एवं एकत्रित कर अधिकतम लाभ उठाने की एक प्रणाली है।

Page No.:
Date: / /

नियोजन की परिभाषा

1) लॉकिन – " नियोजन का अर्थ एक ऐसे सामाजिक आर्थिक संगठन से है। जिसमें व्यक्तिगत और सार्वजनिक साधनों को निर्धारित अवधि में सामाजिक उद्देश्य की तरह स्वीकार किया जाये।"

II कार्ल मैनहीम – " हम नियोजन तथा वियोजन विज्ञान से मानव और समाज के उस विकास को समझते है जो वस्तुओं के मध्य सम्बन्धों को जान बूझकर विपरीत तथा स्वामित्व प्राप्त करते है।"

I) सामाजिक उद्देश्य – नियोजन के सामाजिक उद्देश्य के अन्तर्गत सामाजिक कल्याण कार्यक्रम आते है जैसे अधिक जनता के अधिकतम हितों को ध्यान में रखा जाता है। समाज के लिए हितकर बातों में बच्चों के लिए शिक्षा की व्यवस्था मनोरंजन की सुविधा, चिकित्सा सुविधा आती है तथा दूसरी और अहितकर बातों में शराब जैसी विनाशी वस्तुओं के उत्पादन पर नियन्त्रण आदि आता है।

II राजनैतिक उद्देश्य – नियोजन का उद्देश्य राज्य आदेशों की अधिक शक्तिशाली बनाना है क्योंकि इस पर सारे देश की अर्थव्यवस्था निर्भर है।

राजनैतिक उद्देश्य
(1) आक्रमणात्मक (2) सुरक्षात्मक हो सकते है यद्यपि किसी भी देश का अपने में आत्मनिर्भर होना उसका राजनैतिक उद्देश्य भी कहा जा सकता है।

वास्तव में नियोजन के उद्देश्य एक दूसरे के पूरक हैं तथा एक-दूसरे का एक-दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव पड़ता है। अतः किसी भी उद्देश्य को स्पष्ट रूप में किसी श्रेणी में रखना असम्भव है। मोटे रूप में कहें तो प्रत्येक नियोजन का उद्देश्य एक सामाजिक आर्थिक प्रजातन्त्र का निर्माण करना होता है। अन्य उद्देश्य समा जाते हैं।

नियोजन के प्रकार

समाजवादी नियोजन

= इस प्रकार के नियोजन में केन्द्रीय सरकार के नियन्त्रण करता जाता है उत्पादन व उपभोक्ता की स्वतन्त्रता को सामान्य नहीं दी जाती इस प्रकार की व्यवस्थाएं व्यक्तिगत राजनैतिक स्वतन्त्रता की रक्षा में बाधा उत्पन्न करती है क्योंकि राजनैतिक स्थिति को एक समान रखना होता है जिससे लम्बी अवधि के लिए जो राजनैतिक कार्यक्रम अपनाए गए हैं उन्हें पूरा किया जा सके।

I साम्यवादी नियोजन

= यह पूरी तरह से केन्द्रित होता है तथा यह समाजवादी नियोजन का ही कठोर रूप है केन्द्रीकरण पर जोर दिया जाता है मूल उद्देश्य आर्थिक व्यवस्था को पूरी तरह आर्थिक और सामाजिक समानता देना है जिसका आधार राजनैतिक नियन्त्रण होता है नियोजन का उद्देश्य समाजवादी समाज की स्थापना करना होता है इसमें शक्तियों का केन्द्रीकरण पर जोर दिया जाता है मूल उद्देश्य आर्थिक व्यवस्था को तरह आर्थिक और सामाजिक समानता देना है।

Page No.:
Date: / /

पूँजीवादी नियोजन – इसमें केन्द्रीय व्यवस्था का स्थान सीमित तथा अस्थायी होता है। इसमें नियोजन के उद्देश्य को पूरा करने हेतु बाजार मूल्य में हेरफेर करना पड़ता है इसमें उपभोक्ता पर कोई नियन्त्रण नहीं होता तथा आर्थिक पिछड़ों के बचाने के लिए होता है।

प्रजातान्त्रिक नियोजन – इसमें पूँजीवादी और समाजवादी विचारधारा का मेल होता है। उपयोग में लाया जाता है। इसमें निजी और सरकारी दोनों ही क्षेत्र होते हैं। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को मान्यता दी जाती है। उपभोक्ता की सुविधाओं को रखकर लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं।

तानाशाही नियोजन – इसमें सत्ता का केन्द्रीकरण मनुष्य विशेष में होता है जनता द्वारा भेजी गई सरकार में नहीं होता है। डिक्टेटर की इच्छानुसार ही राष्ट्रीय साधनों का उपयोग किया जाता है। इसकी रक्षा में ही सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक स्वतन्त्रता निषेधित की जाती है।

गाँधीवादी नियोजन – नियोजन का मुख्य उद्देश्य यही मानव समाज श्रम के महत्व को जानकर ऐसे कार्यों में लगना है जिससे अधिकतम लाभ हो। इस नियोजन का मूल अंग छोटे और संगठित गृह उद्योगों की उन्नति करना तथा उद्योगों की छोटी-छोटी इकाइयाँ करना।

स्वतन्त्र नियोजन – इस स्वतन्त्रता के लिए नियोजन करने पर जोर दिया जाता है यह ऐसी कार्यविधि को इंगित करता है। जिसमें योजना का विकास हो।

Date: / / Page no:

इकाई-5 प्र: 5

उ0 ⇒ विकास के मार्ग

- "पूंजीवादी या पूंजीवादी प्रणाली या पूंजीवादी सभ्यता से हमारा अभिप्राय औद्योगिक एवं वैधानिक विकास की उस विशेष अवस्था से है जिसमें श्रमिकों को उत्पत्ति के साधनों के स्वामित्व में इस प्रकार वंचित कर दिया जाता है कि वह मजदूरी कमाने वालों की स्थिति में परिणित हो जाता है तथा उनकी आजीविका उनकी सुरक्षा और उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता राष्ट्र के उन थोड़े से व्यक्तियों की इच्छा पर निर्भर हो जाती है जो भूमि, पूंजी और समाज की श्रम शक्ति के स्वामी हैं और जो अपने वैधानिक स्वामित्व के कारण उनके प्रबन्ध का निपटारा करते हैं और जो अपने वैधानिक स्वामित्व के कारण उसके प्रबन्ध का निपटारा करते हैं और जो ये सब कार्य अपने निजी एवं व्यक्तिगत लाभ के लिए करते हैं।"

पूंजीवादी अवधारणा

1) व्यवसाय की स्वतन्त्रता

- पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था में सब मनुष्यों को यह स्वतन्त्रता रहती है कि इच्छानुसार काम-धन्धा, पेशा, व्यापार व व्यवसाय कर सके। उनका काम व धन्धा जन्म व सामाजिक स्थिति द्वारा निर्धारित नहीं होता बल्कि मनुष्य जो चाहे काम कर सकता है। इस प्रकार व्यवसाय में अपना कार्य के स्थिति के साथ कार्यों को पूर्ण करना चाहिए।

Date: / / Page no:

लोक कल्याणकारी राज्य की कोई सर्वमान्य परिभाषा करना कठिन है। डॉ. अब्राहम के अनुसार "कल्याणकारी राज्य वह है जो अपनी आर्थिक व्यवस्था का संचालन आय के अधिकाधिक समान वितरण के उद्देश्य से करता है।" पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपने एक भाषण में कहा था कि "सबके लिए समान अवसर प्रदान करना, अमीरों और गरीबों के बीच अन्तर मिटाना और जीवन स्तर को ऊपर उठाना लोकहितकारी राज्य के आधारभूत तत्व हैं।" इस प्रकार कल्याणकारी राज्य की विचारधारा व्यक्तिवाद और समाज के लाभों को स्वीकार करती है तथा उनके दोषों से बचने का प्रयत्न करती है। सामाजिक कल्याण का अधिकार प्रदान करती है परन्तु व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की आड़ में राज्य के हस्तक्षेप का विरोध है।

कल्याणकारी राज्य में पूंजीवादी समाज

आजादी के पश्चात् भारत की अपनी सरकार बनी जिसके सामने उस समय कई समस्यायें थीं। एक ओर तो उसे देश में चल रही उपनिवेशवादी अर्थव्यवस्था को समाप्त कर उसके स्थान पर आधुनिक, स्वाधीन तथा एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का आधार खड़ा करना था वहीं दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा वर्षों से शोषित समाज को ~~सर्वां~~ सर्वांगीण विकास की दिशा भी देना था। इसके लिए भारत सरकार ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया अर्थात् कुछ क्षेत्रों को निजी हाथों में सौंप दिया गया ~~तथा गया~~ तथा कुछ को सार्वजनिक क्षेत्र के नाम से अपने पास ही रखा। इसमें भी निजी उद्यमों में मौलिक

Date: / / Page no:

यह तो रही आर्थिक क्षेत्र की बात, इसके अतिरिक्त राज्य के सम्बन्ध में समाजवाद को ध्यान में रख कर पृथक विचारधारा, कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को अपनाया गया। उपनिवेशवादी युग में अंग्रेजों ने राज्य को एक प्रकार से "पुलिस" का स्वरूप दे दिया था। अतः उसे स्वतंत्र भारत की सरकार जन कल्याणकारी राज्य का स्वरूप देने का प्रयास किया गया।

किन्तु कुछ विचारकों का मानना है कि भारत ने जिस मिश्रित अर्थव्यवस्था का चोला पहना है उसमें सार्वजनिक क्षेत्र में केवल उन उद्यमों को ही रखा है जो अधिकतर घाटे के सौदे थे हैं। जबकि लाभ कमाने वाले उद्यमों को निजी क्षेत्र को सुपुर्द कर दिया। इस प्रकार परोक्ष रूप से पूँजीवाद को भी बढ़ावा दिया।

वैसे स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में आर्थिक विकास को वास्तविक क्रान्तिकारी परिवर्तन कहा जा सकता है। मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीति को अमल में लाने पर 1950 से 1990 तक के 40 वर्षों के अनुभव ने भारत सरकार को 1990 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों के आर्थिक मामलों में संरचनात्मक परिवर्तन लाने अर्थात समाजवादी स्वरूप की अवहेलना करने, निजीकरण में परिवर्तन तथा राष्ट्रीयकरण को सीमित करने को प्रेरित किया। इस कारण राज्य का प्रभुत्व कम होना शुरू हो गया तथा उदारीकरण केन्द्रीय बिन्दु हो गया। इसी धारणा को साकार स्वरूप देने के फलस्वरूप केन्द्रीय नरसिंहराव सरकार ने 1991-92 में समाजवादी स्वरूप की अवहेलना की तथा उदारीकरण, आर्थिक

बाजारीकरण एवं निजीकरण के दर्शन पर आधारित पुनर्गठित नीति जिसे कि 'आर्थिक सुधार' नाम दिया गया। प्रारम्भ की जिसे लोग अब नेहरूवादी पूंजीवादी के नाम से जानते हैं। इसके अन्तर्गत प्रमुख बातें इस प्रकार रखी गई- विभिन्न क्षेत्रों में राज्य स्थापना में कोटा लाइसेंस व परमिट राज की समाप्ति विपात नीति का समारम्भ, बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए देश को मुक्त करना, आयात नियंत्रणों को हटाया या शिथिल करना तथा साथ ही सार्वजनिक क्षेत्र को मात्र नौकरी दिलाने वाली एक एजेन्सी जिसमें काम न करना की नैतिकता होती है। इस प्रकार सुर तो कल्याणकारी व समाजवादी ही रहा परन्तु नीतियों में निहित तत्व पूंजीवादी बन गए।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में किये जा रहे आर्थिक सुधारों जैसे उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण को बढ़ावा देने - नियमों में शिथिलता लाने तथा इनके लिए संवैधानिक स्तर पर और शासन प्रणाली में आवश्यकतानुसार बदलाव लाने पर बल दिया जाता है। इसका उद्देश्य राज्य को 'व्यावसायिक राज्य' या बाजार का स्वरूप देना तथा राज्य पूंजीवादी तत्वों के कृतसाधी होने से काफी हद तक पूंजीवादी समाज का स्वरूप धारण करता जा रहा है।

B.A. III year. Feb – 2020-21

Home Science.

C.C.E

पूर्णांक 10

प्रथम प्रश्नपत्र – आहार एवं पोषण - Food & Nutrition.

प्रश्न 1 प्रोटीन की प्राप्ति के साधन, कार्य वर्गीकरण व दैनिक आवश्यकता लिखिये

प्रश्न 2 कुपोषण के कारण व इसे करने के उपाय लिखिये

प्रश्न 3. खनिज लवण पर संक्षिप्त निबंध लिखिये

प्रश्न 4. आहार आयोजन के सिद्धान्त लिखिये

पूर्णांक 10.

द्वितीय प्रश्नपत्र – प्रसार एवं संचार Extension & Communicatic

प्रश्न – 1 संचार का अर्थ व परिभाषा लिखते हुये संचार प्रक्रिया के महत्वपूर्ण मॉडल को समझाइये।

प्रश्न 2 - श्रव्य दृश्य साधनों के प्रकारों का वर्णन करिये

प्रश्न 3 - संचार में सहायक व बाधक तत्व कौन से ५ लिखिये।

प्रश्न 4 – टिप्पणी लिखिये

(A) कठपुतली (B) फ्लैश कार्ड (C) साक्षात्कार

e-mail : heggckhr@mp.gov.inWebsite-www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

क्र. /2021 खरगोन, दिनांक : 3 /02/2021

कार्यालयीन सूचना

महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापको को सूचित किया जाता है, सत्र 2020–21 की अध्ययनरत समस्त नियमित छात्राओं के आतंरिक मूल्यांकन कार्य अपर सचिव म.प्र. शासन उच्च शिक्षा विभाग, भोपाल के आदेश क्र./147/188/2020/38–3 भोपाल, दिनांक 01/02/2021 के निर्देशानुसार निम्न तिथियों में सम्पादित किया जाना है। इस हेतु परीक्षा प्रभारी एवं सेमेस्टर प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित विधाएँ निम्न प्रकार से होगी।

क्र	कक्षा	विधा	दिनांक	प्रश्न पत्र का प्रकार
1	स्नातकोत्तर MHSC/MA/MSW 1nd,3rd Semester	Assignment its presentation	5 फरवरी से 13 फरवरी 2021 तक	संबंधित प्राध्यापक छात्राओं से विषय संबंधित आलेख तेयार करावे एवं प्रस्तुतीकरण मोखिक परीक्षा लेवे। **(प्रस्तुतीकरण में चार्ट,पोस्टर, PPT,Black Bord का प्रयोग किया जा सकता है)**
2	BA, B.Sc., BHSC, B.Com., प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष	Assignment	19 फरवरी सेक 27 फरवरी तक	इस विधा हेतु विद्यार्थियो से 2। दिर्घउत्तरीय एवं 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर असाइनमेट लेवे जो कि 10 अंक के होगे। ~~प्रथम~~

नोट : सभी प्राध्यापक अपने विषय के प्रश्नपत्र बनाकर दिनांक 10 फरवरी 21 तक सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी प्रो. ममता गोयल के पास जमा करावें।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी एवं
आनलाईन अंक प्रेषण
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

3/2/21
(डॉ.आर.के.यादव)
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन

D/GDC 20-21/Notic 20-21

"बेटी बचाओं–बेटी पढ़ाओं"

e-mail:heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

सीसीई से संबंधित संलग्न पत्र का अवलोकन करें।

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.
	शैक्षणिक स्टॉफ		
1	डॉ.आर.के.यादव	प्राचार्य	
2	डॉ.एम.के.गोखले	सहा.प्रा. अर्थशास्त्र	
3	प्रो.प्रीती राठौड (हाड़ा)	स.प्रा. अंग्रेजी	
4	प्रो. जयंती जोशी	स.प्रा. गृह विज्ञान	
5	प्रो.के.सी. केथवास	स.प्रा. वनस्पति	
6	डॉ.एम.एस.सोलंकी	स.प्रा. प्राणिकी	
7	डॉ.धर्मेन्द्र भालसे	स.प्रा. भौतिकी	
8	डॉ.सेवंती डावर	स.प्रा. हिन्दी	
9	प्रो.अमरजेन्सी सोलंकी	स.प्रा. रसायन	
10	प्रो. ममता गोयल	स.प्रा. गृह विज्ञान	
11	डॉ.मनीषा चौहान	स.प्रा. राजनीति	
12	डॉ.रफिया अजीज	स.प्रा. गणित	
13	श्री नरेन्द्र डोडिया	ग्रंथपाल	
	अतिथि विद्वान (शैक्षणिक)		
1	डॉ. एस.एच. जाफरी	उर्दू	
2	सुश्री संगीता खरे	समाजशास्त्र	
	जनभागीदारी समिति (शैक्षणिक)		
1	श्री .हरीश पूरे	कम्प्यूटर	
2	श्री.मनीष रघुवंशी	कम्प्यूटर	
3	श्री प्रमोद सावनरे	वाणिज्य	
4	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान	
5	प्रो.श्रृद्धा महाजन	गृहविज्ञान	
6	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान	
7	श्री राजकुमार शिन्दे	अंग्रेजी	
8	श्री विनोद पटेल	समाजकार्य	
9	कु.सुमित्रा अजनारे	अर्थशास्त्र	
10	अनिता मालवीय	समाजकार्य	

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.
	कार्यालयीन स्टॉफ		
1	श्री लालसिंह यादव	मुख्य लिपिक	
2	श्री देवेसिंह चौहान	सहा.ग्रेड 2	
3	श्रीमती सुनिता गौसर	सहा.ग्रेड 3	
4	श्रीमती मीरा गांगोडे	प्रयो.तक.	
5	श्रीमती गरिमा ठाकुर	प्रयो.तक.	
6	श्री अंकित चौहान	सहा.ग्रेड 3	
7	श्री मीरा रोकडे	भृत्य	
8	श्री लोकेश वर्मा	प्रयो. परि.	
9	श्री राजीव रोकड़े	प्रयो.परि.	
10	श्रीमती दुर्गा बामनीया	भृत्य	
	जनभागीदारी समिति (सहायक)		
1	श्री गोपाल पाल	भृत्य	
2	श्री संतोष धुंले	भृत्य	
3	श्रीमती राधा सोलंकी	भृत्य	
4	श्री नारायण गाड़गे	भृत्य	
5	श्री गणेश अबोले	भृत्य	
6	श्री तुलसीराम सोनारे	भृत्य	
7	श्री पवन बागदरे	भृत्य	
8	श्री ईसाक खान	भृत्य	
9	श्री राहुल खरे	भृत्य	
10	श्री रामेश्वर कनौजे	भृत्य	
11	श्री सुनिल चौहान	भृत्य	
	जनभागीदारी समिति (अशैक्षणिक स्टॉफ)		
1	श्री हरिमेश यादव	कम्प्यू.तक.	

Date: / / Page no:

Name - Rupali Patidar

class - M. H. Sc (Human Development)

Subject - Principle of Guidance and counselling - II

College - G. D. C (Khargone M. P)

Year - 2020-21

Date: / / Page no: 1

14/15

स्थानापन्न सेवा (placement service)

निर्देशन एवं परामर्श सेवाओ की प्रक्रिया के अन्तर्गत स्थानापन्न सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है वास्तव मे निर्देशन कार्यक्रम तभी सुचारू रूप से महत्वपूर्ण हो सकता है जब नियोजन (स्थानापन्न) एवं अनुवर्ती सेवाएँ समुचित प्रकार से उपलब्ध हो। हमारे देश मे निर्देशन सेवाओ मे उचित प्रकार मे संगठित नही किया गया है वर्तमान समय मे प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चो को अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाने चाहते है तथा उस पर व्यय करने के लिए तत्पर रहते है इस दिशा की ओर अपने प्रयासो को भी जारी रखना है क्योकि शिक्षा प्रक्रिया आगामी जीवन की तैयारी की मार्ग होती है शिक्षा समाप्ति के बाद व्यक्ति किसी भी व्यवसाय मे स्थान प्राप्त कर लेना है आज अनेको व्यवसायिक पाठ्यक्रमो के संचालित होने के बावजूद निर्मित कारण व्यवसाय चयन मे कठिनाई नही आती है क्योकि इसका स्थानापन्न पाठ्यक्रम के द्वारा निर्धारित हो जाता है

स्थानापन्न या नियुक्ति सेवा से हमारा अभिप्राय है व्यक्ति को उनकी योग्यता एवं व्यक्तित्व संबंधी गुणो के आधार पर उचित स्थान पर नियुक्ति कराने मे सहायता प्रदान की जाए। जिससे वह सरलता पूर्वक सामंजस्य स्थापित कर सके। किसी भी व्यवसाय या व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम मे उपयुक्त स्थान दिलाने की प्रक्रिया को स्थानापन्न सेवा कहा जाता है

स्थानापन्न सेवा की आवश्यकता
(Needs of placement service)

स्थानापन्न सेवा की आवश्यकता दोनो प्रकार के निर्देशन मे होती है

1) स्थानापन्न सेवा के माध्यम से विद्यार्थी को अपनी योग्यताएँ व क्षमताओ के विषय मे ज्ञान हो जाता है जिसमे वह किस कार्य के लिए उपयुक्त है तथा किस कार्य के लिए अधिक सफल हो सकेगा। इसका पर्याप्त ज्ञान विद्यार्थी को स्वय हो जाता है व उचित समायोजन कर लेता है

2) व्यवसायिक एवं शैक्षिक कार्य प्रणाली से सम्बधित सामाजय की समस्याओ को उम करने मे स्थानापन्न सेवा सहयोग प्रदान करती है

3) विद्यार्थी को विद्यालय मे उन्ही विषयो को पढना चाहिए जो उसके आगामी जीवन के कार्यक्रम मे सहायक हो।

4) स्थानापन्न सेवा के माध्यम से प्रबंध व्यवस्था को प्रभावशाली बनाया जाता है

5) स्थानापन्न सेवा के माध्यम विभिन्न संस्थाओ के कार्यकर्ता की मांग व पूर्ति मे सतुंलन स्थापित करने मे अपना विशेष योगदान

6) महत्वपूर्ण अध्ययनो व शोध कार्यो को बढावा देने की दृष्टि से स्थानापन्न सेवाओ का महत्वपूर्ण

योगदान है।

7) स्थानापन्न सेवाएं समाज के आर्थिक स्तर पर अपना प्रभाव डालता है जब व्यक्ति को जीविकोपार्जन हेतु व्यवसाय अपनी रुचि व योग्यतानुसार प्राप्त हो जाता है तो उनका समायोजन संतोषप्रद होने के कारण उत्पादन को सीधा-सीधा प्रभावित करना है।

8) स्थानापन्न सेवाएं समाज के विद्यालय का सम्मान बढ़ाने में मददगार होती है यह देखा जाता है कि विद्यालय छोड़ने के पश्चात् छात्र क्यों उरते है? किस प्रकार के रोजगार में नियुक्ति पाते है।

9) स्थानापन्न सेवाएं समाज विद्यालयों की स्थानापन्न सेवा से नियुक्तिकर्ता भी लाभान्वित होता है विभिन्न व्यवसायों में उचित स्थान रिक्त होने पर योग्य व्यक्ति इन नियुक्ति सेवाओं के माध्यम से स्थान प्राप्त कर सकते है।

10) नवयुवकों को रोजगार ढूंढने में कठिनाई होने के कारण स्थानापन्न सेवा उन व्यवसायों के विषय में बतानी है कि कहा रिक्त स्थान है।

व्यवसायिक स्थानापन्न
(Vocational Placement)

निर्देशन क्षेत्र के विद्वान जार्ज ई० मायर्स ने

इस बात को स्वीकार किया है कि व्यवसाय जगत मे छात्रो को प्रवेश दिलाने का कार्य विद्यालय का ही है। उन्होने कहा है " एक वि नवयुवक को विद्यालय मे से व्यवसायिक क्रियाओ मे भेजना शैक्षिक सेवा है" अतः समाज द्वारा चुनी हुई शैक्षिक संस्था - विद्यालय उचित कार्य है परन्तु अभी यह एक विवादास्पद विषय है कि विद्यालय व्यवसायिक नियुक्ति संबंधी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकेगा। या नही। शिक्षा - विशेषज्ञो का मत है कि छात्र अपने जीवन का निर्माण काल विद्यालय मे व्यतीत करता है अतः उससे सम्बंधित सभी सूचनाएं विद्यालय मे रखी जाती है विद्यालय नियुक्ति सम्बंधी कार्य समाज व व्यक्ति दोनो के लिए ठीक रहता है

1) समाज के सहयोग से नियुक्ति ⇒ जीविका में नियुक्ति कराने से पहले जीविका से संबंधित समस्त सूचनाएं विद्यालय की नियुक्ति सेवा को प्राप्त होनी चाहिए। निकट के समाज एवं क्षेत्र के व्यवसाय की मांग एक व्य- -वसायिक अवसर से संबंधित सूचनाएं एकत्रित करनी चाहिए।

2) नियुक्ति क्रियाएँ सबके सहयोग से ⇒ नियुक्ति सेवा का कुछ विद्यालयो मे केन्द्रीय संगठित रूप होता है परन्तु नियुक्ति सम्बंधी कार्य केवल कुछ संस्थानो व विशेषज्ञो द्वारा ही नही होना चाहिए। विद्यालय के सभी अध्यापको एवं निर्देशन से संबंधित कर्मचारियो

को सामूहिक रूप से यह कार्य करना चाहिए। एक बात का ध्यान रखना चाहिए की सामाजिक संस्था या नियुक्तिकर्ता को जो छात्र भेजे जाये वे उस कर्मचारी द्वारा भेजे जाए वे इन व्यापारिक संस्थाओ से सम्बद्ध स्थापित करने का समय हो।

(3) स्थानन सेवा को लोकप्रिय बनाना ⇒

नियुक्ति सेवा का प्रचार भी करना चाहिए। भारत जैसे देश मे इस प्रकार की सेवाओ को अधिक लोकप्रिय बनाने के आवश्यकता है छात्रो अध्यापको एवं नियुक्तिकर्ताओ द्वारा नियुक्ति सेवा का उपयोग पर्याप्त नही किया जाता है नियुक्ति सेवा के उद्देश्य एवं कार्यो का ज्ञान सभी को होना चाहिए।

नियुक्ति सेवा के प्रकार के लिए पत्र - पत्रिका , परामर्श सेवा , स्थानीय समाचार पत्र माता - पिता को पत्र व वार्तालाप आदि प्रयोग मे लाये जा सकते है।

शैक्षिक स्थानापन्न
(educational Placement Service)

स्थानन सेवा का कार्य केवल व्यवसायिक नियुक्ति तक ही सीमित नही रहता है परंतु इस सेवा को छात्रो की विभिन्न विषयो को चुनने मे भी सहायता करनी चाहिए कुछ छात्र अध्ययन की समाप्ति पर प्रशिक्षण - विद्यालयो मे प्रवेश लेते है छात्रो की विभिन्न विषय एवं विद्यालय से सम्बन्धित सूचनाए प्रदान करना शैक्षिक नियोग सेवा का ही कार्य है।

शैक्षिक स्थानन सेवा निरंतर चलती रहती है क्योकि छात्रो को नवीन विद्यालय के वातावरण मे समायोजित के लिए आवश्यकता रही है यहा निर्देशन अधिकारियो को निर्देशन देने मे उन सूचनाओ से अधिक सहायता मिलेगी |

नियमित पाठ्यक्रम मे स्थानन ⇒

निर्देशन का कार्य केवल इतने तक ही सीमित नही है कि विद्यालय मे प्रवेश लेने वाले नवीन विद्यार्थियो को उन पाठ्य -विषयो से अवगत करा दिया जाए तो उसके यहा पढाये जाते है नवीन छात्रो के लिए उससे भी बढकर कार्य विद्यालय को करना चाहिए| छात्रो की योग्यता व रुचि के अनुसार ही विषय का चुनाव करने मे उसको सहायता करनी चाहिए | मुदालियर कमीशन के सुझाव के परिणामस्वरूप माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विविध पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है अतः 8 वी कक्षा उत्तीर्ण कर लेने पर प्रत्येक बालक / बालिका का एक सा ही अध्ययन प्रश्न एक सा होता है मैं कौन से विषय का अध्ययन करू ? ऐसे छात्रो को अध्यापक परामर्श देते है|

1) विद्यालय मे पढाए जाने वाले पाठ्य विषयो की सूची तथा आवश्यकताए |

2) छात्रो द्वारा विचारे गये कार्य-क्षेत्र मे प्रवेश करने हेतु लिए आवश्यक प्रशिक्षण |

3) उच्च अध्ययन के लिए छात्र को प्रवेश करने

आवश्यकताओ की पूर्ति करनी होगी।
अधिकांश विद्यालयो मे सहायता कार्य अध्यापको द्वारा दिया जाता है परंतु एक अध्यापक को बहुत से व्यवसाय या प्रशिक्षण विद्यालय को बहुत से व्यवसाय शर्तो का ज्ञान नही हो।

पाठ्य - सहगामी क्रियाओ मे स्थानन ⇒ शिक्षा का उद्देश्य छात्र का सर्वांगीण विकास करना है अतः बौद्धिक विकास के साथ शारिरिक विकास पर भी विद्यालय को ध्यान देना चाहिए। शारिरिक विकास व अनेक सामाजिक गुणो के विकास के लिए विद्यालय मे खेलकूद व्यवस्था होनी चाहिए। आज निर्देशन - कार्यकर्ताओ का भी संकुचित दृष्टिकोण है वे अपना कार्यक्षेत्र केवल पाठ्य - विषय या व्यवसाय के चयन तक ही समझते है।
यद्यपि खेलकूद आदि मे जो अनुभव छात्र सीखते है उनका स्वभाव कक्षा के अनुभव के विपरीत होता है।

अग्रिम शिक्षा मे स्थानन ⇒

भारत मे अधिकाश छात्र माध्यमिक शिक्षा को पूर्ण करने के बाद अनेक प्रशिक्षण विद्यालयो मे प्रवेश लेना चाहते है परन्तु प्रशिक्षण विद्यालय से सम्बंधित समस्याए इत्यादि उनको प्राप्त नही होती है।
वे यह निश्चय नही कर पाते है कि उनको किस विद्यालय मे प्रवेश लेना चाहिए। यह कार्य नियुक्ति सेवा द्वारा किया जाना चाहिए।

1) उनकी रुचानुसार प्रशिक्षण का चुनाव करना।
2) प्रशिक्षण कहा दिया जाना है
3) रुचिकर प्रशिक्षण के लिए योजना तैयार करना।

Refrance

शैक्षिक तथा व्यवसायिक निर्देशन, सिंह रामपाल उपाध्याय राधावल्लभ अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा - 2 Page - Page 113 - 123

e-mail : heggckhr@mp.gov.in Website-
www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन (म.प्र.)

खरगोन, दिनांक : 26/11/2021

–:: आवश्यक सूचना::–

सत्र 2021–22 में अध्ययरत समस्त नियमित स्नातकोत्तर छात्राओं को सूचित किया जाता है कि आतंरिक मूल्यांकन कार्य सी.सी.ई. परीक्षा म.प्र.शासन उच्च शिक्षा विभाग,भोपाल के आदेश एवं शैक्षणिक कैलेण्डर के निर्देशानुसार निम्न तिथियो में सम्पादित किया जाना है। इस हेतु सेमेस्टर प्रकोष्ठ द्वारा निर्धारित विधाए निम्न प्रकार से होगी।

क्रं.	कक्षा	विधा	दिनांक	विधा/प्रश्न पत्र का प्रकार
1	MA, MSW, MHSc 3rd Sem	Assignment its presentation	29/11/2021 से 05/12/2021	संबंधित प्राध्यापक छात्राओं से विषय से संबंधित आलेख तैयार करावे एवं मौखिक प्रस्तुतीकरण लेवे। (प्रस्तुतीकरण में चार्ट/पोस्टर/ PPT/Black Bord का प्रयोग किया जावें।
2	MA, MSW, MHSc 1st Sem	पुस्तकालय अध्ययन (Bibliography संदर्भ गृंथ तैयार करना)	29/11/2021 से 05/12/2021	संबंधित प्राध्यापक विषय से संबंधित शिर्षक छात्रा को देगे व छात्रा पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तको की मदद से शीर्षक पर आलेख Bibliography तैयार करेगी जिसमे पुस्तक का शीर्षक, संस्करण, वर्ष प्रकाशक एवं संबंधित पृष्ठ कृमांक का भी उल्लेख होगा।

नोटः–

1. सीसीई परीक्षा निर्धारीत समय सारणी के अनुसार समपन्न होगी।
2. आलेख हेतु शीर्षक विषय से सम्बधित प्राध्यापक से प्राप्त करे।

प्रो.ममता गोयल
सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(प्रो.प्रीति राठौर)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन
e-mail : heggckhr@mp.gov.in Website- www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

-:: सूचना ::-

खरगोन, दिनांक :28/03/2022

महाविद्यालय की अध्ययनरत सत्र 2021–22 की **MA/ MSW / MHSc IV** चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है दिनांक 04/04/2022 से 08/04/2022 तक **CCE** आतंरिक मूल्यांकन कार्य आयोजित होना है। जिसमें छात्राएँ विषय से से संबंधित पुराने प्रश्न पत्र ग्रंथालय से प्राप्त कर असाइनमेंट जमा करेंगी।

(प्रो.ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोष्ठ प्रभारी,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(प्रो.प्रीति राठौर)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

e-mail : heggckhr@mp.gov.inWebsite-
www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

खरगोन. दिनांक :28 /02/2022

–:: कार्यालयीन सूचना ::–

महाविद्यालय के शेक्षणीक स्टाफ को सूचित किया जाता है की MA/MSW/MHSC IV द्वितीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर की छात्राओं के CCE अनतर्गत ग्रंथालय से पुराने वर्षो के प्रश्न पत्र को हल कर असाइन्मेंट दिनांक 04/04/2022 से 08/04/2022 तक संबंधित विषय के प्राध्यापक के पास जमा कराना सुनिश्चित करें।

क्रं.	नाम	विषय	हस्ता.
1	प्रो. ममता गोयल	गृह विज्ञान	
2	सुश्री गनबाई डावर	गृहविज्ञान	
3	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान	
4	प्रो.श्रृद्धा महाजन	गृहविज्ञान	
5	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान	
6	डॉ.अनुराधा ठाकुर	समाजशास्त्र	
7	सुश्री संगीता खरे	समाजशास्त्र	
8	डॉ.पवन नामदेव	समाजशास्त्र	
9	श्री विनोद पटेल	समाजकार्य	

(प्रो. ममता गोयल)
सेमेस्टर प्रकोस्ट प्रभारी
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

(प्रो.प्रीति राठौर)
प्राचार्य,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.)

दिनांक 11/11/2021

महाविद्यालय की सत्र 2021-22 की समस्त बी.ए. प्रथम, द्वितीय व तृतीय वर्ष, एम.ए., एम.एस.डब्ल्यू. की प्रथम एवं तृतीय सेमेस्टर की छात्राओं को सूचित किया जाता है कि प्रथम त्रिमाही आंतरिक मूल्यांकन (सीसीई) परीक्षा दिनांक 16.11.21 से 22.11.21 तक आयोजित की जा रही है। सीसीई परीक्षा (प्रश्न पत्र) सैद्धांतिक प्रश्नपत्र आधारित होगी।

अतः नियमित रूप से कक्षाओं में उपस्थित रहे छात्रा के अनुपस्थित रहने पर समस्त जवाबदेही स्वयं की होगी।

डॉ. अनुराधा ठाकुर
प्रभारी NEP
शास. कन्या महाविद्यालय,
खरगोन (म.प्र.)

प्रो. प्रीति हाड़ा राठौर
प्राचार्य
प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.) – 451001
शास. कन्या महाविद्यालय
खरगोन

e-mail : heggckhr@mp.gov.in Website-
www.mp.gov.in/highereducation/ ggckhargone/index.htm

कार्यालय प्राचार्य, शासकीय कन्या महाविद्यालय, खरगोन

खरगोन. दिनांक : 13/11/2021

समस्त शैक्षणिक स्टाफ को सूचित किया जाता है कि सत्र 2021-22 के नियमित विद्यार्थियों की स्नातक स्तर की प्रथम तिमाही आंतरिक मूल्यांकन परीक्षा (CCE-I) दिनांक 16.11.21 से 22.11.21 तक आयोजित की जाएगी। जिसमें विद्यार्थियों हेतु सैद्धांतिक प्रश्नपत्र तैयार कर परीक्षा ली जाना है। प्रथम प्रश्नपत्र व द्वितीय प्रश्नपत्र कुल 10-10 अंकों का होगा जिसमें वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय व दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों का समावेश किया जाएगा।

प्राचार्य

क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.	क्रं.	नाम	पदनाम	हस्ता.
	शैक्षणिक स्टॉफ				अतिथि विद्वान (शैक्षणिक)		
1	डॉ.एम.के.गोखले	सहा.प्रा. अर्थशास्त्र		1	डॉ. एस.एच. जाफरी	उर्दू	
2	डॉ.आर.के.यादव	सह.प्रा. समाजशास्त्र		2	सुश्री गनबाई डाबर	गृहविज्ञान	
3	प्रो.के.सी. केथवास	स.प्रा. वनस्पति		3	डॉ.पवन नामदेव	समाजशास्त्र	
4	डॉ.एम.एस.सोलंकी	स.प्रा. प्राणिकी		4	श्री सखाराम मकवाने	ग्रंथपाल	
5	डॉ.धर्मेन्द्र भालसे	स.प्रा. भौतिकी					
6	डॉ.सेवंती डावर	स.प्रा. हिन्दी			जनभागीदारी समिति (शैक्षणिक)		
7	प्रो.अमरजेन्सी सोलंकी	स.प्रा. रसायन		1	श्री प्रमोद सावनरे	वाणिज्य	
8	प्रो. ममता गोयल	स.प्रा. गृह विज्ञान		2	कु.अनुराधा बरूड़	गृहविज्ञान	
9	डॉ.मनीषा चौहान	स.प्रा. राजनीति		3	प्रो.श्रृद्धा महाजन	गृहविज्ञान	
10	डॉ.रफिया अजीज	स.प्रा. गणित		4	प्रो.शर्मिला किराड़े	गृहविज्ञान	
11	डॉ.अनुराधा ठाकुर	स.प्रा. समाजशास्त्र		5	श्री राजकुमार शिन्दे	अंग्रेजी	
12	डॉ.भालचंन्द्र भाटे	क्रीड़ा अधिकारी		6	श्री विनोद पटेल	समाजकार्य	

प्राचार्य
शासकीय कन्या महाविद्यालय
खरगोन (म.प्र.) - 451001

सत्र - 2021 - 22

नाम संगीता पिता कनरसिंह खीड़ै

कक्षा एम . ए II year IV seem

विषय :- समाज शास्त्र

प्रश्न पत्र :- राजनीतिक समाजशास्त्र IV

रोल नं : 30820035

DA N: 1718592

12/15

प्रश्न 1 राजनीतिक समाजशास्त्र की परिभाषा देते हुए विषय-वस्तु एवं क्षेत्रों को समझाइये

उ०=> समाज विज्ञानों के अन्तर्गत समाजशास्त्र सबसे नया विज्ञान है। वैधानिक रूप से इसका जन्म 1838 में फ्रांस में हुआ। इसके जन्मदाता अगस्त कॉम्ट है। राजनीतिक समाजशास्त्र भी समाजशास्त्र की एक शाखा है, जिसका स्वतंत्र रूप से अध्ययन प्रारंभ हो चुका है।

— परिभाषा :-

ग्रीर एवं ऑरलियन्स :- " राजनीतिक समाजशास्त्र की प्रमुख सैद्धान्तिक समस्या राज्य नामक सामाजिक संरचना का वर्णन, विश्लेषण एवं समाजशास्त्रीय निर्वचन करना है।

डाउसे एवं ह्यूज :- " राजनीतिक समाजशास्त्र मूल रूप में समाजशास्त्र की वह शाखा जिसका सम्बन्ध राजनीति एवं समाज में अन्तःक्रिया का विश्लेषण करना है।"

स्टुवर्ट राइस :- " राजनीतिक समाजशास्त्र मूल रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो राजनीतिक व्यवहार एवं राजनीतिक संस्थाओं के अध्ययन में विभिन्न समाजशास्त्रीय अवधारणाओं एवं पद्धतियों का प्रयोग करते हैं।"

लेविस ए. कोजर :- " राजनीतिक समाजशास्त्र वह भाग है जो समाजों में या समाजों के मध्य दिए गए शक्ति वितरण के कारणों प्रभावों तथा उन सामाजिक व राजनीतिक संघर्ष

इसमें राज्यों की अवधारणा तथा उसके लिए राज्य की उत्पत्ति तथा राज्य सत्ता के विभिन्न सिद्धान्तों एवं राज्य की संरचना का अध्ययन किया जाता है। सरकार राज्य का बड़ा मूर्त रूप है। अतः राजनीतिक समाजशास्त्र में परम्परागत तथा आधुनिक सामाजिक व्यवस्थाओं में सरकार के प्रमुख कार्यों तथा प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त राजनीतिक समाजशास्त्र में नेतृत्व की प्रकृति प्रकारों प्रमुख लक्षणों राजनीतिक दल दबाव समूहों आदि का अध्ययन किया जाता है। मतदान व्यवहार के अध्ययन के बिना राजनीतिक समाजशास्त्र का विषय क्षेत्र अधूरा है। साथ ही साथ राजनीतिक सत्ता का विश्लेषण भी करना इसके क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

(2) नौकरशाही एवं अभिजात वर्ग का अध्ययन -
राजनीतिक समाजशास्त्र में इनकी प्रकृति संरचना प्रकार व्यवहार आदि का अध्ययन किया जाता है। साथ ही प्रजातंत्र में कर्मचारीतंत्र का क्या स्वरूप है। किस प्रकार प्रजातंत्रीय व्यवस्था में कर्मचारी तंत्र साधना को प्रभावित करने की कोशिश की है ये सभी राजनीतिक समाजशास्त्रीय के विषय क्षेत्र से सम्बन्धित है।

(3) प्रजातंत्रीय सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन :- आधुनिक राजनैतिक व्यवस्थाओं में प्रजातंत्र को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

सिद्धान्तों, क्रान्ति के लक्षणों, क्रान्ति के कारणों, क्रान्ति संबंधी दृष्टिकोण आदि का अध्ययन प्रस्तुत करता है। साथ ही इनका समाज पर पड़ने वाले प्रभावों की भी विवेचना करता है।

उपर्युक्त घटकों द्वारा राजनीतिक समाजशास्त्र का अध्ययन एक स्वतंत्र सामाजिक विज्ञान के रूप मे हो रहा है फिर भी अपनी नवीनता के कारण इसका अध्ययन क्षेत्र अनिश्चितता की स्थिति में है। मिचेल ने राजनीतिक समाजशास्त्र की विषय-वस्तु को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है–

① औपचारिक एवं अनौपचारिक संस्थाएँ
② सम्भ्रान्त जन एवं उनकी संरचना
③ संघर्ष के आविर्भाव एवं नियम
④ हित समूह एवं दबाव समूह
⑤ राजनीतिक मतों का निर्माण एवं
⑥ राजनीतिक संस्थाओं के रूप में राजनीतिक दलों तथा विभिन्न प्रकार की शासन पद्धतियों के अध्ययन को सम्मिलित किया है।

राजनीतिक समाजशास्त्र की प्रकृति

राजनीतिक समाजशास्त्र की प्रकृति क्या है? इसे विज्ञान की श्रेणी में रखा जाये या कला की; यह प्रश्न विद्वानों के समक्ष रहा है। हम इसे दोनों रूपों में स्वीकार करते है। अतः हमे पहले विज्ञान का अर्थ समझना होगा। सामान्य विज्ञान यथार्थ के अध्ययन, अवलोकन एवं प्रयोग द्वारा प्राप्त तथ्यों के सामान्यीकरण के द्वारा प्राप्त का एक वस्तुनिष्ठ आगम माना जाता है।

(ग) राजनीतिक समाजशास्त्र कला के रूप में

किन्हीं विशेष संदर्भों में राजनीतिक समाजशास्त्र कला के रूप में भी माना जाता है। कला का संबंध निर्माण से घटनाओं तथा मानवीकरण से प्राप्त की नवीन अवधारणाओं का निर्माण होता है अनेक सिद्धान्तों का सामान्यीकरण से प्राप्त है।

कला की विशेषता है कौशल को व्यवहार में लाना। राजनीतिक समाजशास्त्र कला है, क्योंकि इसमें निर्णय-शक्ति है नियोजन क्षमता कौशल व्यूह रचना विधियों तथा प्रविधियों का उपयोग आदि पर विशेष बल दिया जाता है

1) राजनीतिक समाजशास्त्र राजनीतिक विज्ञान नहीं है क्योंकि यह राजनीतिक विज्ञान तरह राज्य का विज्ञान नहीं है

2) राजनीतिक समाजशास्त्र राजनीति का समाजशास्त्र भी नहीं है क्योंकि यह केवल सामाजिक ही नहीं अपितु राजनीतिक से भी समान रूप से सम्बन्ध है।

3) राजनीतिक समाजशास्त्र यद्यपि राजनीति में रुचि रखता है लेकिन यह राजनीति को नीः विशिष्ट एवं नवीन परिप्रेक्षय से देखता है

4) राजनीतिक समाजशास्त्र मूलतः मान्यता पर आधारित है कि सामाजिक प्रक्रिया एवं राजनीतिक प्रक्रिया के बीच आकृति की एकरूपता एवं समरूपता विद्यमान है।

जिसका उद्देश्य समायोजन के लिए समय विशेष में स्थायी प्रतिमानों को खोजना है।

रॉबर्ट डहल — "मानव सम्बन्धों का ऐसा प्रतिमान जिसमें कतिपय अंश में दृढ़ता या स्थायित्व हो तथा जो महत्वपूर्ण रूप में शक्ति, शासन के साथ जुड़ा हो उसे राजनैतिक व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।"

—: राजनैतिक व्यवस्था उल्लेख :—

राजनैतिक व्यवस्था परिस्थिति का परिणाम है। बिना कारण के व्यवस्था का औचित्य नहीं होता है। राजनैतिक व्यवस्था की कुछ प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख निम्नानुसार है—

(1) राजनैतिक व्यवस्था में वैधानिक तत्व :—
सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में राजनीतिक संरचनाएँ होती हैं। इन संरचनाओं में वैधिक अंश होता है और यही वैधिक प्रतिमान राजनैतिक व्यवस्था को जन्म देता है।

(2) राजनैतिक व्यवस्थाएँ परिवर्तनशील होती हैं :—
परिवर्तन के दौर में राजनैतिक व्यवस्था में भी परिवर्तन एवं गतिशीलता आती है। यह कारण है कि प्राचीन राजनैतिक व्यवस्था और आज की राजनैतिक व्यवस्था में काफी अन्तर देखने को मिलता है।

(6) राजनैतिक व्यवस्थाओं में संघर्षों के समाधान की प्रक्रिया चलती रहती है।

राजनैतिक व्यवस्था के सन्दर्भ में व्यक्तियों और राजनैतिक समूहों में अनेक वैचारिक व्यावहारिक संघर्ष चलते रहते हैं। राजनैतिक में इन संघर्षों के समाधान की एक प्रक्रिया सदैव चलती रहती है। इन संघर्षों का समाधान, मध्यस्थता पंच निर्णय आपसी आन्दोलनों, गृहयुद्धों एवं अन्तर्राष्ट्रीय युद्धों के द्वारा होता है।

(7) राजनैतिक व्यवस्था की सभी इकाइयों में संरचनात्मक प्रकार्यात्मक संबंध पाए जाते हैं।

राजनैतिक व्यवस्था के सभी भाग व तत्व अपने - अपने वैधिक कार्यों को करते रहते हैं। परिणामस्वरूप राजनैतिक व्यवस्था की संरचना को स्थायित्व मिलता रहता है।

(8) प्रत्येक राजनैतिक व्यवस्था की धारणा भिन्न - भिन्न :-

सामान्यता जन - कल्याण प्रत्येक राजनैतिक व्यवस्था का उद्देश्य होता है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के प्रभावशाली अंग उसका प्रतिपादन व प्रचार करते हैं जिससे जन - साधारण का सहयोग व समर्थन उन्हें प्राप्त होता है इन दर्शनों या विचारों का रूप बदलता रहता है। ये विचार अलग - अलग राजनीतिक व्यवस्थाओं में अलग - अलग भी होते हैं। जैसे पश्चिम के देशों में विकासवादी समाजवादी के दर्शन पाए जाते हैं। भारत की आर्थिक व्यवस्था की धारणा मिश्रित अर्थव्यवस्था है।

② परम्परागत व्यवस्थाएँ :- परम्परागत व्यवस्थाओं में राजनैतिक संरचनाएँ एवं संस्थाएँ निर्मित तो होती हैं परन्तु वे रूढ़िवादी रहती हैं। अर्थात इनमें परिवर्तन नहीं होती है यदि होता भी है तो धीमी गति से। इसमें समाज के धनी लोग या सामन्ती लोग अपने स्वार्थ की पूर्ति कर व्यवस्था को अपने अनुरूप ढालने का प्रयास करते हैं। ऐसी व्यवस्थाएँ भी तीन भागों में विभक्त हैं

(अ) आनुवंशिक व्यवस्थाएँ (ब) आधिकारिक व्यवस्थाएँ
(स) सामन्तवादी व्यवस्थाएँ

③ आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाएँ :- ऐसी व्यवस्थाएँ जो पूर्णता की ओर एक पूर्णरूपेण से परिपक्व होती हैं, उन्हें आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था कहा गया है। प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं को आधुनिक व्यवस्था माना जा सकता है। ऐसी व्यवस्था की संस्कृति समानता, स्वतन्त्रता एवं धर्म निरपेक्ष युक्त होती है। आमण्ड एवं पावेल ने ऐसी व्यवस्थाओं को तीन उपभागों में विभाजित किया है।

(अ) लौकिक नगर राज्य (ब) गतिशील आधुनिक व्यवस्थाएँ
(स) पूर्व गतिशील आधुनिक व्यवस्थाएँ

—: प्रजातन्त्र की परिभाषाएँ :—

प्रजातन्त्र की भिन्न - भिन्न विद्वानों ने भिन्न - भिन्न परिभाषाएँ दी हैं, जो निम्न हैं।

① लार्ड ब्राइस के अनुसार - "लोकतंत्र शासन का वह प्रकार होता है, जिसमें राज्य के शासन की शक्ति किसी विशेष वर्ग अथवा वर्गों में निहित न होकर सम्पूर्ण राज्य के सदस्यों में निहित होती है।"

② शीले के अनुसार - "लोकतंत्रीय शासन वह है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का भाग होता है।"

③ डायसी के अनुसार - "लोकतंत्रीय शासन का वह प्रकार है, जिसमें शासक समुदाय सम्पूर्ण राष्ट्र का अपेक्षाकृत एक बड़ा भाग हो।

अब्राहम लिंकन के शब्दों में - "लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता द्वारा शासन है।" इन द्वारा शासन है। इन परिभाषाओं को देखने के पश्चात् प्रजातंत्र की तीन विशेषताएँ होती है।

① जनता प्रतिनिधित्व ② जनता के हितों का रक्षक
③ जनता के प्रति उत्तरदायित्व।

(4) जनता का शासन →

प्रजातन्त्र व्यक्तियों पर अन्य, द्वारा लादा गया शासन नहीं है। इसमें तो व्यक्ति स्वयं अपने ऊपर शासन करते हैं यह शासन का एक सभ्य तरीका है व्यक्ति स्वयं अप्रत्यक्ष रूप से कानूनों को बनाने में भाग लेते हैं।

(5) उत्तरदायी शासन →

प्रजातांत्रिक शासन उत्तरदायी शासन होता है। इसमें सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी रहती है इसका बहुत बड़ा लाभ यह होता है कि शासन निरंकुश नहीं बन सकता है।

(6) रक्तपूर्ण क्रांति का भय नहीं →

प्रत्येक प्रजातन्त्रिक देश में एक निश्चित अवधि के पश्चात जब शान्तिपूर्ण ढंग से अपने शासकों को बदलने की सुविधा है तो फिर एक रक्त पूर्ण क्रांति का प्रश्न है उत्पन्न नहीं होता।

राजनैतिक व्यवस्था के निर्माण में सामाजिक संरचना की ही भांति कई महत्वपूर्ण तत्व व घटना कार्य करते हैं राजनैतिक प्रक्रियाओं का राजनैतिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहता है राजनैतिक प्रक्रियाओं के आधार पर उस राजनैतिक समाज की राजनैतिक संस्कृति निर्धारित होती है प्रत्येक समाज का राजनैतिक विकास बहुत कुछ वहाँ की राजनैतिक प्रक्रिया पर निर्भर करता है राजनैतिक प्रक्रियाएं भी सामाजिक प्रक्रियाओं की भांति समाज में निरन्तर चलती रहती है। भारतीय सामाजिक संरचना का प्रभाव राजनैतिक प्रक्रियाओं पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पड़ता है। इसी प्रकार राजनैतिक प्रक्रियाएं सामाजिक संरचना को भी प्रभावित करती है। इन दोनों अवधारणाओं के पारस्परिक प्रभाव का अध्ययन करने से पूर्व हम यहाँ संक्षेप में प्रमुख राजनैतिक प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालेंगे।

① राजनैतिक समाजीकरण →

प्रत्येक राजनैतिक समाज की राजनैतिक संस्कृति विशेष रहती है। राजनैतिक संस्कृति को विशेष बनाने वाले अनेक तत्व और कारण होते हैं। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण राजनैतिक

③ राजनैतिक आधुनिकीकरण →

राजनैतिक व्यवस्था में राजनैतिक आधुनिकीकरण एक व्यापक आयाम व प्रक्रिया है, राजनैतिक आधुनिकीकरण राजनीति से सम्बन्धित पहलुओं को लेकर मानव दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना है राजनैतिक दृष्टि से आधुनिक समाज वही है जिसमें व्यक्ति का अभिज्ञान राजनैतिक व्यवस्था और इसके विभिन्न पक्षों से होने लगता है।
इस प्रकार राजनैतिक व्यवस्था में प्रत्येक इकाई मांग को स्वीकार करने के साथ ही साथ उसे पूरा करने को राजनैतिक दृष्टि से आधुनिक राजनैतिक व्यवस्था कहा जा सकता है।

④ राजनैतिक संचार :

राजनैतिक संचार भी एक महत्वपूर्ण राजनैतिक प्रक्रिया व संकल्पना है राजनैतिक संचार के विभिन्न अभिकरणों के माध्यम से राजनैतिक व्यवस्था का निर्धारण को गति मिलती है राजनैतिक संचार के परिणामस्वरूप लोगों को राजनैतिक सहभागिता व राजनैतिक विभिज्ञान में वृद्धि हुई राजनैतिक संचार का सम्बन्ध मुलतः राजनैतिक व्यवस्था से है जिसका सम्बन्ध को गतिशीलता प्राप्त होती है राजनैतिक व्यवस्था में जानकारी कैसे आती है।

भारत जैसे विकासशील देशों में राजनैतिक भर्ती कई बार भंग होता देखा गई है। सेना द्वारा या किसी व्यक्ति द्वारा सत्ता हथिया लेना और सैनिक शासक के रूप में बने रहना राजनैतिक भर्ती का समाप्त होना है

(7) राजनैतिक सहभागिता →

राजनैतिक सहभागिता राजनैतिक व्यवस्था के लोगों की ऐसी राजनैतिक सक्रियता है जो राजनैतिक व्यवस्था की ओर उन्मुख हो नहीं होती वरन उसकी निर्णय करने की प्रक्रिया पर सीधा प्रभाव डालती है। यह व्यक्ति का ऐसा राजनैतिक कार्य है जिससे राजनैतिक पद धारकों का चयन व उसकी निर्णय कारिता प्रभावित होती है, व्यक्ति की एक विशेष प्रकार की गतिविधि या उसकी राजनैतिक कृपा ही राजनैतिक सहभागिता है।
आमण्ड तथा पॉवेल राजनैतिक सहभागिता को एक व्यापक अवधारणा मानते यह प्रक्रिया व्यक्ति की राजनैतिक क्रिया के आसपास घूमती है यह व्यक्ति का व्यक्तिगत प्रयास से किया गया राजनैतिक कृत्य राजनैतिक गतिविधि या राजनैतिक व्यवहार होता है।

प्र.5

वास्तविक प्रजातन्त्र उसी समय होता होगा जब गाव-गाव मे ग्राम सभाएँ एवं ग्राम पंचायते स्थापित हो जायेगी वास्तविक स्वतन्त्रता का अनुभव भी सामान्य नागरिक को तभी होगा पंचायती राज की स्थापना ही प्रजातन्त्रिक विकेन्द्रीकरण का परम लक्ष्य है।

पंचायती राज का अर्थ एवं परिभाषा

पंचायती राज एक निश्चित व्यवस्था है पंचायती राज का अभिप्राय राजनीतिक सत्ता को केन्द्र से लेकर प्रत्येक ग्राम तक मे बाट देना है। यही प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की भी मूल भावना है सामान्य जनता का सम्बन्ध प्रशासन से प्रत्येक स्तर पर होना चाहिए विशेष रूप से प्रतिनिधियो के द्वारा सक्रिय नियन्त्रण शासन व्यवस्था का एक स्वरूप है अपितु वह जीवन का एक नवीन तरीका है भारत की सामुदायिक विकास एवं सहकारी प्रशासन के अनुसार पंचायती म राज इस प्रकार जीवन का एक भाग है और सरकार को एक नवीन शक्ति से मिलाता है।

(4) ग्रामीण समाज की अर्थव्यवस्था का दूसरा आधार लघु उद्योग है ग्रामों में लघु उद्योगों विस्तार करना भी पंचायती राज का उद्देश्य है

(5) देश में सहकारिता का विस्तार करना तथा विभिन्न प्रकार के सामूहिक आवश्यक पूर्ति के लिये सहकारी जीवन का विकास करना।

(6) ग्रामीण भारत में अपार जन शक्ति तथा प्राकृतिक साधन उपलब्ध है इस मानव शक्ति का ग्रामीण विकास के लिये समुचित उपयोग करना तथा साधनों को जुटाकर उनका अधिकाधिक उपयोग करना

(7) ग्रामों में रहने वाले तथा दरिद्रता और अज्ञान में फँसे हुए कमजोर तथा पिछड़े वर्ग करोड़ों लोगों को आत्म सम्मान का जीवन बिताने के लिए आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि समर्थ बनाना।

(8) सत्ता का विकेन्द्रीकरण करके स्थानीय प्रतिनिधि को सामाजिक आर्थिक नियोजन राजनैतिक और प्रशासनिक व्यवस्था से सम्बन्धित प्रदान करना और लोकतान्त्रिक प्रणाली का विस्तार करना।

पंचायती राज के मौलिक सिद्धान्त

① इसको ग्राम से लेकर जिले तक स्थानीय स्वायत्त संस्थाओं को तीन पंचों वाली संरचना होना चाहिए ये संस्थाए चेतन रूप से सम्बन्धित हों।

② उनको शक्ति और उत्तरदायित्वों का वास्तविक हस्तान्तरण होना चाहिए।

③ पर्याप्त स्रोतों को इन उत्तरदायित्वों से अलग करने के लिए योग्य बनाने में नवीन संस्थाओं को हस्तांतरित होना चाहिए।

④ इन स्तरों पर समस्त विकासात्मक कार्यक्रमों को इन संस्थाओं द्वारा सम्पादित होना चाहिए।

⑤ निहित प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो आगे की अवनति और शक्ति तथा उत्तरदायित्वों के वितरण को भविष्य में सरल बनाये।
इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमें ग्राम पंचायत को शक्तिशाली बनाना होगा।

Date: / / Page no:

Name - Subhadra Badole

Class - M. H. Sc. IVth Sem

Sub - Advanced Study in Human Development - II

2021-22

11/15

Date: / / Page no:

Endex

		पे.न.
प्र.1	→	2. से 7 तक
प्र.2	→	8 से 11 तक
प्र.3	→	11 से 15 तक
प्र.4	→	15 से 21 तक
प्र.5.	→	21 से - 25 तक

DATE
PAGE 1

प्र० 1

वृद्धावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों का वर्णन कीजिए। विकासात्मक कार्य किस प्रकार शारीरिक परिवर्तनों को प्रभावित करते हैं। वर्णन कीजिए।

उ०⇒

वृद्धावस्था के दौरान दिखाई देने वाले शारीरिक परिवर्तन

" इस उम्र में आंतरिक और बाह्य सामाजिक परिवर्तन होने लगते हैं, इनके लक्षण अलग से दिखाई देते हैं चेहरा व्यक्ति की आयु को दर्शाता है।

सिर के क्षेत्र में परिवर्तन :-

- नाक लम्बाई में बढ़ जाती है।
- दांतों के टूट जाने या घिस जाने से जबड़ा छोटा पड़ जाता है एवं नकली दांत लगाने आवश्यक होते हैं।
- आँखे निस्तेज तथा धुंधुल लगती है तथा अश्रुतंत्रियों का कार्य ठीक न रहने से वे प्रायः चिपचिपी सी दिखाई हैं।
- त्वचा झुर्रीदार तथा रूखी हो जाती है।
- सिर के बाल कम तथा धूसर या सफेद हो जाते हैं।

धड़ क्षेत्र (Trunk Region):-

- व्यक्ति के कन्धे झुक जाते हैं, जिससे वह पहले से छोटा लगता है।
- उदर (पेट) फूट तथा लटक जाता है।
- नितम्ब पहले की अपेक्षा अधिक थुलथुले एवं चौड़े हो जाते हैं।
- कमर चौड़ी हो जाती है, जिससे धड़ ढोलेनुमा दिखाई देने लगता है।
- स्त्रियों के वक्ष थुलथुले होकर लटक जाते हैं।

अवयव अथवा अंग (Limbs):—

- ऊपरी भुजा थुलथुली तथा भारी हो जाती है, जबकि निचली भुजा का व्यास कम प्रतीत होता है।
- टाँगों पर मांस चढ़ जाता है तथा इनके ऊपर शिराएँ भी स्पष्ट दिखाई देने लगती हैं।
- ढीली पेशियों के कारण पांव प्राय बड़े हो जाते हैं तथा इनके ऊपर मस्से, सूजन इत्यादि विकृतियां उत्पन्न हो जाती हैं।

Sensory Changes :— आयु के साथ इंद्रियों की संवेदनशीलता में ह्रास अनिश्चितता प्रवृत्ति एवं लक्षण दिखाई देते हैं, वृद्धावस्था में संवेदी अंगों की कुशलता यौवनावस्था ~~की~~ से अपेक्षाकृत घट जाती है, फिर भी चूंकि अधिकतर मामलों में ज्ञानेन्द्रियों में होने वाला परिवर्तन धीमा तथा क्रमिक होता है।

अतः व्यक्ति को इन परिवर्तनों से पर्याप्त समायोजन करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। ज्ञानेन्द्रियों में सबसे अधिक उपयोगी इन्द्रियाँ आँख तथा कान है तथा वृद्धावस्था का सबसे गंभीर दुष्प्रभाव इन पर होता है। वृद्धावस्था में ज्ञानेद्रियों की क्रियाशीलता में निम्नलिखित सामान्य परिवर्तन होते हैं :—

दृष्टि :— आँखों की कुशलता में, जो अधिक ह्रास होता है वह अंशतः परिवर्तन अवस्था के दिनों उचित सावधानी न रखने या वृद्धावस्था में शारीरिक स्वास्थ्य में गिरावट आने के कारण हो सकता है। यद्यपि आयु के साथ तारा (Pupil) के आकार में बृहत क्षय हो जाता है तथा यह दृष्टि संबंधी परिवर्तनों का एक आंशिक कारण हो सकता है आयु के साथ मस्तिष्क तथा दृष्टिपटल की तंत्रिका

कोशिकाओं की कुछ आधारभूत क्रियाओं में परिवर्तन होने से कम प्रकाश में वस्तुओं को देखने की योग्यता में दिन प्रतिदिन ह्रास होता जाता है। अधिकांश लोग जरा दूरदृष्टि नामक रोग से ग्रस्त हो जाते हैं।

• अजीब हरकतें करना ⇒

वृद्धावस्था में व्यक्ति अजीब हो जाता है और अजीब तरह की क्रियाएँ भी करते हैं, जैसे चीजे फेंक देना, पानी गिरा देना, जो भी काम रहता है वह लापरवाही से करते हैं और उसका कारण Motor development का कारण होता है

यह है कि धार्मिक सिद्धांतों के प्रति निष्ठा कुछ घट जाती है। क्योंकि वृद्धों में आयु वृद्धि के साथ शारीरिक ह्रास भी हो जाता है जिसके कारण वे ज्यादा समय तक पूजा पाठ या भगवान की उपासना नहीं कर पाते हैं। तथा वे धार्मिक कार्य में अपना समय कम बिताते हैं और ज्यादा समय अपने नाती पोतों के लालन पालन में व्यतीत करते हैं जिसके कारण उनकी निष्ठा कम हो जाती है।

वृद्धावस्था के विकासात्मक कार्य

वृद्धावस्था मानव जीवन चक्र की वह अंतिम अवधि है। जब कि व्यक्ति अपने जीवन का सिंहावलोकन वर्तमान उपलब्धियों पर जीवित रहता है तथा अपने जीवन की अंतिम मंजिल (Last Destination of Life) को पूरा करना प्रारम्भ कर देता है।

वृद्धावस्था जीवन चक्र का "Closing Period" है विभिन्न व्यक्तियों का जिस आयु में शारीरिक तथा मानसिक ह्रास प्रारम्भ होता है उनमें बहुत भिन्नता होती है फिर भी साठ वर्ष की आयु को सर्वसम्मति से मध्यवय तथा वृद्धावस्था की विभाजक रेखा माना गया है। इस प्रकार परम्परा के अनुसार, वृद्धावस्था ७० वर्ष की आयु से लेकर मृत्यु पर्यन्त चलती है।

"

वृद्धावस्था के विकासात्मक कार्य व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से बहुत अधिक जुड़े होते हैं, दूसरी अवस्थाओं की अपेक्षा। वृद्धों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपनी घटती हुई शक्ति तथा गिरते हुए स्वास्थ्य में समायोजन करें। उनसे यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे ऐसी गतिविधियों को दूर जो उस कार्य से भिन्न हो,

वृद्धावस्था के मुख्य विकासात्मक कार्य निम्नलिखित हैं:-

1) शारीरिक मजबूती तथा स्वास्थ्य की गिरावट से समायोजन करना।

2) कार्यनिवृत्ति तथा घटी हुई आय से समायोजन करना।

3) जीवन साथी की मृत्यु से समायोजन करना।

4) संतुष्टिदायक रहन-सहन की व्यवस्था स्थापित करना।

5) स्वयं की आयु समूह के सदस्यों के साथ स्पष्ट सम्बद्धता स्थापित करना।

6) लचीले रूप से सामाजिक भूमिकाएँ स्वीकार करना।

2. शारीरिक मजबूती तथा स्वास्थ्य की गिरावट से समायोजन करना

वृद्धावस्था आने के साथ ही व्यक्ति के शरीर में बाह्य एवं आन्तरिक अनेक परिवर्तन होते है या यूं कहा जाय कि आयु के साथ शारीरिक परिवर्तन के फलस्वरूप ही व्यक्ति वृद्ध हो जाता है। प्रायः व्यक्ति के शरीर को देखकर प्रायः व्यक्ति "उसकी आयु का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

2. कार्यनिवृत्ति तथा घटी हुई से समायोजन करना

व्यक्ति जिनकी दिनचर्या में प्रायः और उत्तरदायित्वों की बहुत भरमार होती है पुरी या आधी कार्यनिवृत्ति जीवन का स्वर्णिम काल लगता है जब व्यक्ति के लिए काम का अधिक मूल्य होता है तब वह कार्यनिवृत्ति से मुश्किल से प्राप्त कर पाता है।

3. जीवन साथी की मृत्यु से समायोजन करना ⇒

चूंकि विवाह के अनुसार (It is customary) स्त्रियाँ अपनी ही आयु के अथवा कुछ अधिक आयु के पुरुषों से विवाह करती है और क्योंकि पुरुष की औसत रूप से स्त्रियों की पुरुषों के विधुर होने की अपेक्षा अधिक सामान्य है। हमारे देश में सामान्यतः पति - पत्नि के बीच आयु का अन्तर अधिक देखा जाता है अतः कुछ स्त्रियों पचास वर्ष की अवस्था में ही विधवा हो जाती है तथा कुछ 60 वर्ष की आयु में अर्थात् स्त्रियों को अपने पति की मृत्यु के पश्चात् लम्बा जीवन अकेले ही बिताना पड़ता है।

अथवा

प्र०2 सेवानिवृत्ति के प्रभाव एवं आर्थिक समायोजन का वर्णन कीजिये।

उ⇒ सेवानिवृत्ति का प्रभाव ⇒ सेवानिवृत्ति से तात्पर्य है काम या सेवा से मुक्त होना, जिसकी आयु 58-65 के बीच मानी जाती है। एक व्यक्ति किस आयु तक कार्य कर सकता है। एवं उसमें उत्पादन क्रियाशीलता कितनी है।

सेवानिवृत्ति के पश्चात् जीवन शैली में किस प्रकार का परिवर्तन आवश्यक है, वे स्वयं को किस प्रकार समायोजित करेंगे आदि बिन्दुओं पर विचार कर सेवानिवृत्ति सम्बन्धी परिचर्चा की जाती है:-

- सेवानिवृत्ति की आयु
- सेवानिवृत्ति का सम्बन्ध मानसिकता से है।
- सेवानिवृत्ति का सम्बन्ध उत्पादन शीलता से है।
- स्वास्थ्य
- कार्य की क्षमता एवं कार्य करने की निरन्तरता

"सेवानिवृत्ति का प्रभाव"

1) आर्थिक स्थिति निम्न होना।

2) पारिवारिक समायोजन में कठिनाई ।

3) अलगाव की स्थिति (सामाजिक) ।

4) हिनता की भावना ।

5) मानसिक तनाव ।

1) आर्थिक स्थिति निम्न होना ⇒ सेवानिवृत्ति के पश्चात् व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में बदलाव आ जाता है। व्यक्ति के पास यदि पूर्व से एकत्रित की गई पर्याप्त धनराशि होती है। तो उसे कठिनाइयों का सामना कम करना पड़ता है।

2) पारिवारिक समायोजन में कठिनाई :— सेवानिवृत्ति से पूर्व व्यक्ति सेवानिवृत्ति के पश्चात् के दैनिक जीवन हेतु कई तरह की सुखद अवधारणायें बना लेता है। वह सोचता है, कि वह अपने परिवार के साथ अधिक से अधिक समय व्यतित करेगा। किन्तु वास्तविकता कुछ और होती है।

(3) अलगाव की स्थिति (सामाजिक) ⇒ सेवानिवृत्ति के पश्चात् कई बार ऐसा होता है कि व्यक्ति का उसके परिवार के सदस्य सेवानिवृत्ति के पश्चात् बेकार या अनुपयोगी समझने लगते हैं। ऐसे में वह उन्हें वृद्ध छोड़ देते हैं। जिसे वृद्ध व्यक्ति में परिवार एवं सामाजिक अलगाव उत्पन्न हो जाता है।

(4) हीनता की भावना ⇒ सेवानिवृत्ति के पश्चात् व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर हो जाता है। और आयु के अनुसार उसकी शारीरिक क्षमताओं में कमी आने लगती है जिससे उसे दूसरों पर आश्रित रहना पड़ता है। जिस वजह उसमें हीनता की भावना आने लगती है। वह सोचता है कि वह अब किसी काम का नहीं रहा वह कुछ कर नहीं सकता उसका जीवन व्यर्थ है।

(5) मानसिक तनाव ⇒ सेवानिवृत्ति पश्चात् व्यक्ति के सामने उसे कठिनाईयाँ आती है जैसे आर्थिक समस्या हीनता की भावना, समयोजन की समस्या परिवार जनों से अलगाव आदि के कारण व्यक्ति मानसिक रूप से तनाव ग्रस्त हो जाता है।

आर्थिक समायोजन

वृद्धावस्था में व्यक्ति में शारीरिक ह्रास के कारण गत्यात्मक शक्ति में भी कमी देखी जाती है। इसी कारण व्यक्ति की काम करने की तत्परता में कमी आ जाती है। इस अवस्था में व्यक्ति को सरकारी सेवा से निवृत्ति हो जाती है। लेकिन फिर भी वह पहले की तरह कार्य करने के बारे में सोचते हैं। तथा वह यह सोचते है, कि इस अवस्था में सेवानिवृत्ति के बाद उन्हें अपनी जीविकोपार्जन के लिए परिवार पर बोझ ना बनना पड़े। वृद्धावस्था में व्यक्ति की पेंशन भी कम हो जाती है। जिस कारण वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाता है। इसलिए इस अवस्था में व्यक्ति को वित्तीय समायोजन इस प्रकार निम्न तरीके से करना चाहिए -

1) अपनी प्राप्त आय से संतुष्ट रहना।
2) आर्थिक रूप से अधिक से अधिक आत्मनिर्भरता।
3) विभिन्न प्रकार की रुचियां विकसित करना।
4) अपनी वर्तमान अवस्था से संतुष्ट रहना
5) खुश रहना।
6) अपनी कार्य अवस्था में एकत्रित बचत का उपयोग इस अवस्था में करना।
(7) अपने बच्चों के व्यापार या व्यवसाय में थोड़ी मदद कर अपना समय व्यतीत करना।
(8) योजनाबद्ध तरीके से आर्थिक नियोजन करना।
(9) 'धान-दक्षिणा' हेतु नियोजन करना।
(10) धन कमाना एवं वास्तविकता को स्वीकार करना।

प्र० 3 अथवा Date: / / Page no: 12

प्र०6 सेवानिवृत्ति की विभिन्न अवस्थाओं में से किन्हीं दो का विस्तृत वर्णन कीजिए।

उ०⇒ वयस्क व्यक्तियों को समझने के लिए उनमें समायोजन एवं आपसी सम्बन्धों को जानना आवश्यक है।

अतः सेवा निवृत्ति की विभिन्न अवस्था को समझने के लिए उसके जीवन की विभिन्न प्रक्रिया को समझना है।

" रोबर्ट ओचले " 1982 - 85 तक अध्ययन करने के बाद उनके जीवन को एक प्रक्रिया न मानकर इसे सामाजिक भूमिका एवं समायोजन की अवस्था कहा है। किसी भी व्यक्ति के लिए सेवानिवृत्ति एक व्यक्तिगत प्रारूप या स्वास्थ्य है जो कि व्यक्ति में भिन्नता को बनाए रखता है। सेवानिवृत्ति का संबंध आयु से, जो व्यक्ति समान होते हुए भी उसका विभिन्न अवस्थाओं से गुजरना एक अलग प्रक्रिया को दर्शाता है।

सेवानिवृत्ति की अवस्थाएँ :—

1. The disenchantment Phase (अलगाव की अवस्था)
2. The Reorientation Phase (पुनः पुर्नग्राही की अवस्था)

अलगाव की अवस्था

1. The disenchantment Phase

अलगाव कि अवस्था - कुछ व्यक्तियों के लिए सेवानिवृति एक आसान अनुभव नहीं होता है क्योंकि अनिश्चितता निराशा एवं उपलब्धियों का अभाव उसे अंदर से कठोर रखता है।

इस अवस्था में व्यक्ति स्वयं को निचा अनुभव करना तथा संवेगिक रूप से स्वयं को कमजोर मानना आम लक्षण देखा जाता है व्यक्ति का स्वास्थ्य सीमित आय - युक्त जीवन शैली एवं अनजानपन का प्रभाव पड़ता है कुछ वृद्ध व्यक्ति भ्रमण गत्यात्मक क्रियाएँ इत्यादि के बारे में सेवानिवृत्ति से पूर्व कल्पना करते है परन्तु सेवा निवृत्ति के बाद उनमे वह मौलिक जोश नहीं होने के कारण दुः ख पश्चात्ताप की भावना से ग्रसित हो जाते है।

एक व्यक्तिगत अध्ययन के अन्तर्गत यह तथ्य सामने आया है कि व्यक्ति एक ही काम को बार - बार करना पसंद करने लगते है। जैसे:- घर को पेंट करना, पेड़ पौधो में पानी डालना इसके बावजूद स्वयं को अलग - अलग महसूस करते है। एक टिचर रिटायर्ड होने के बाद अकसर कहता है कि

I miss my students.

I miss was being a part of student life

विद्यार्थी जीवन का एक हिस्सा होने के नाते उसे miss करता है।

2. The reorientation phase
(पुन: पूर्वाग्राही की अवस्था)

स्थिति पर न हो धमाकेदार तरीके से हुई है उन्हे इस अवस्था विशेष में समाये रहना आवश्यक हो जाता है इस अवस्था में अपने अनुभव के आधार पर सेवानिवृत्ति जीवन के विकल्पों के बारे में वास्तविक दृष्टिकोण विकसित कर लेता है तथा प्रतिदिन नए - नए कार्यक्रम सम्बन्ध दूसरे की मदद करना समुदाय से जुड़ना जैसी गतिविधियों में निजात करना है कुछ व्यक्ति दूसरा करीयर करने के लिए सेवानिवृत्ति को अपनी सुविधानुसार एक प्रारूप प्रदान करते है, जो कि वेतन या ऐच्छिक आधार पर रहती है। ऐसे व्यक्ति औपचारिक या अनौपचारिक तरीके से कार्यक्रम की योजना बनाते हुए अपनी सेवाएँ प्रदान करते है इस तरह ये व्यक्ति के स्व वास्तविकता के द्वारा अपनी आवाज राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक क्षेत्रों में पहुंचाने का काम करते हैं। ऐसे व्यक्तियों पर श्रद्धा, विश्वास एवं उन्हे ताकत के रूप में देखता है।

प्र॰ 7 वृद्धावस्था में पार्किन्सन को विस्तृत रूप से समझाइये ।

उ॰ पार्किन्सन बीमारी क्या है ⇒

पार्किन्सन बीमारी दूसरा सबसे आम न्यूरोडिजेनारेटिव डिसऑर्डर है। यह रोग एक ऐसी बीमारी है, जो मनुष्य के उस हिस्से को प्रभावित करती है, जो हमारे शरीर के अंगों को संचालित करता है। इसके लक्षण इतने कम होते है कि शुरुआत में आप इसे पहचान भी नहीं पायेंगे। पर जैसे-जैसे समय निकलता है आपको हाथ पैरो मे कमजोरी महसूस होने लगती है और इसका असर आपके चलने फिरने बात करने, सोने, सोचने से लेकर लगभग हर काम पर पड़ने लगता है।

यह बीमारी अक्सर 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र के होने पर होती है पर कभी-कभी आनुवंशिकता के चलते भी आप बचपन में ही ~~कम~~ बीमारी मे ही इस बीमारी के कम बारे मे करीबन 5000 BC (5000 ईसा पूर्व) में लोगों को ज्ञात था उस समय एक प्राचीन भारतीय सभ्यता ने इस बीमारी का नाम कंपवात रखा था जिसका इलाज उस पौध्यों के बीजों से किया जाता था जिससे थेराप्यूटिक होता है जिसे आजकल लेवोडोपा के नाम से जाना जाता है पार्किन्सन बीमारी का नाम ब्रिटिश डॉक्टर जेम्स पार्किंसन के नाम पर रखा गया था जिन्होंने 1817 मे पहली बार इस बीमारी

को विस्तार से दोकिंग पार्किंसन के रूप में वर्णित किया था
यह बीमारी अक्सर 60 वर्ष और उससे अधिक उम्र के होने पर होती है पर कभी-कभी आनुवंशिकता के चलते भी बाल्य बचपन में ही व्यक्ति बीमारी का शिकार हो सकते हैं, परन्तु 60 वर्ष की आयु वाले लक्षण (Symptoms of Parkinson's disease in hindi) इसकी तुलना में अधिक गंभीर होते हैं। वयस्क, शुरुआत, पार्किंसन् की बीमारी सबसे आम है, लेकिन शुरुआत में किशोर - शुरुआत पार्किंसन - रोग (21-40 साल के बीच शुरू) और किशोर - शुरुआत पार्किंसन रोग (21 साल से पहले शुरू हो सकता है) हो सकता है पार्किंसन बीमारी की तीव्रता व्यक्ति - व्यक्ति के साथ लम्बा और अच्छा जीवन जी लेते हैं और कुछ लोग नहीं जी पाते कि शोध के अनुसार इस बीमारी के साथ जीवन जीने की संभावनायें लगभग। उतनी ही है जितनी सामान्य जीवन सम्भावना। पार्किंसन रोग के लिए कोई इलाज नहीं है लेकिन इसके लक्षणों को नियंत्रित करके इसका इलाज किया जा सकता है।

पार्किन्सन्स बीमारी के लक्षण =)

पार्किन्सोनिज्म का आरम्भ आहिस्ता - आहिस्ता होता है पता भी नहीं पड़ता कि कब लक्षण शुरू हुए। अनेक सप्ताहों व महीनों के बाद जब लक्षणों की तीव्रता बढ़ जाती है तब अहसास होता है कि कुछ गड़बड़ है। डॉक्टर जब हिस्ट्री (इतिवृत्त) कुरेदते हैं तब मरीज व घरवाले पीछे मुड़ कर देखते हैं याद करते हैं और स्वीकारते हैं कि हां सचमुच ये कुछ लक्षण, कम तीव्रता के साथ पहले से मौजूद थे। लेकिन तारीख बताना सम्भव नहीं होता। कभी - कभी किसी विशिष्ट घटना से इन लक्षणों का आरम्भ जोड़ दिया जाता है - उदा. के लिए कोई दुर्घटना, चोट, बुखार आदि। यह संयोगवश होता है। उक्त तात्कालिक घटना के कारण मरीज का ध्यान पार्किन्सोनिज्म के लक्षणों की ओर चला जाता है, जो कि धीरे - धीरे पहले से ही अपनी मौजूदगी बना रहे थे। बहुत सारे मरीजों में पार्किन्सोनिज्म रोग की शुरूआत कम्पन से होती है। कम्पन अर्थात् धुजनी या धुजन या ट्रेमर या कांपना। पार्किंसन किसी को तब होता है जब रसायन पैदा करने वाली मस्तिष्क की कोशिकाएँ गायब होने लगती है।

पार्किंसन बीमारी के लक्षणों से निम्न लक्षण शामिल हो सकते है:-

1) कम्पन
2) गति धीमी हो जाना (ब्रेडकेनेसिया)
3) मांसपेशियो का कठोर हो जाना
4) संतुलन मे परेशानी
5) स्वचालित कार्यो का न होना
6) बोली मे बदलाव
7) लिखावट मे बदलाव

1) कम्पन ⇒

यह लक्षण इस बीमारी का सबसे आम लक्षण है, जो आमतौर पर शरीर के किसी एक अंग मे शुरू होता है या अक्सर आपके हाथ या उंगलियां में होता है। यह अक्सर तब होता है जब आपका हाथ रेस्ट मोड पर होता है।

2) गति धीमी हो जाना (ब्रेडकेनेसिया)

जैसे समय बीतता है पार्किंसन बीमारी के कारण मनुष्य की कार्य करने की गति धीमी होती जाती है जिसमें समय कार्य भी कठिन लगने लगते हैं और कार्य को खत्म करने मे समय लगने लगता है।

3) धीमी गतिविधि :- (ब्रेडीकीनेसिया)

यह बीमारी आपके हिलने डुलने और काम करने की दीमता को कम कर सकती है जिसके कारण एक आसान

5. कठोर मांसपेशिया ⇒
आपके शरीर के किसी भी हिस्से में मांसपेशियां में अकड़न हो सकती है। कठोर मांसपेशियो आपकी गति को सीमित कर सकती है। और दर्द का कारण बन सकती है।

4. संतुलन मे परेशानी ⇒
पार्किंसन रोग के परिणामस्वरूप आपका शरीर झुक सकता है या असंतुलन की समस्या हो सकती है

5. स्वचलित गतिविधियां या कार्यो का न होना
पार्किंसन बीमारी में अचेतन कार्य करने की क्षमता में कमी आ सकती है, जिनमें पलके झपकाना, मुस्कुराना या हाथों को हिलाते हुए चलना शामिल है।

6) बोली मे बदलाव ⇒ पार्किंसन रोग के परिणामस्वरूप उच्चारण सम्बन्धी समस्याएं हो सकती है। आपका स्वर धीमा, तीव्र और अस्पष्ट हो सकता है या आपको बात करने से पहले हिचकिचाहट हो सकती है।

7) लिखावट में बदलाव ⇒
लिखावट छोटी हो सकती है और लिखने में तकलीफ हो सकती है।

पार्किंसन रोग के जोखिम कारक ⇒

1) पार्किंसन रोग के जोखिम कारको में निम्न शामिल है:-

बढ़ती आयु :— पार्किंसन रोग युवाओं में बहुत ही कम पाया जाता है। यह आमतौर पर जीवन के मध्य या आखिरी पड़ाव में शुरू होता है और उम्र के साथ जोखिम बढ़ता रहता है।

2) अनुवंशिकता :— आपके किसी करीबी रिश्तेदार के पार्किंसन रोग से ग्रसित होने के कारण आपको यह रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

3) पुरुषों को जोखिम अधिक होना :— महिलाओं की तुलना में पुरुषों में पार्किंसन रोग विकसित होने की अधिक संभावना है।

4) विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आना ⇒

वनस्पतिनाशकों और कीटनाशकों के निरंतर संपर्क में आने से आपके पार्किंसन रोग से ग्रसित होने का खतरा बढ़ता है।

पार्किंसन रोग होने से कैसे रोक सकते है :-
इस बीमारी का कारण अज्ञात है, चूंकि इसलिए इसकी रोगथाम के तरीके भी एक रहस्य ही है। हांलाकि कुछ शोधों से पता चला है कि कॉफी चाय और कोका-कोला मे पायी जाने वाली कैफीन पार्किंसन रोग के विकास के जोखिम को कम कर सकती है।

पार्किंसन रोग का उपचार

पार्किंसन रोग को ठीक नहीं किया जा सकता लेकिन दवाएँ आपके लक्षणों को नियंत्रित करने मे मदद कर सकती है कुछ गंभीर मामलों मे, सर्जरी की सलाह दी जा सकती है।

दवाईयों :- दवाएं आपके मस्तिष्क में डोपामाइन की आपूर्ति को बढ़ाकर आपकी चाल गतिविधि और कम्पन से जुडी समस्याओं से राहत दिलाने मे मददगार रहती है।

दवाईया
i) कार्बिडोपा - लेवोडोपा
ii) डोपामाइन एगोनिस्ट
iii) एमएओ बी अवरोधक
iv) केटेकोल ओ - मेथिलट्रांसफेरेज
v) एन्टिकोलिनर्जिक
vi) एमान्टाडाइन

अथवा

प्र. 10 मृत्यु की विभिन्न अवस्थाओं समझाइये।

उ०⇒

" कदाचित वृद्धावस्था की सर्वाधिक गंभीर समस्या मृत्यु है जिसके विचार से वृद्ध व्यक्ति निरंतर भयाक्रांत रहता है अंततः वह एक दिन आ धमकती है जिसे हम जीवन की संध्या कहते हैं और व्यक्ति की जीवनलीला समाप्त हो जाती है इस घटना को मृत्यु की संज्ञा दी गई है। विशेषज्ञों, विशेष रूप से चिकित्सकों का मानना है कि मृत्यु यकायक नहीं घटित होती वरन् यह एक प्रक्रिया है। हृदय, मस्तिष्क तथा कोशो के स्तर पर मृत्यु का विश्लेषण किया गया है अतः मृत्यु के चार प्रकार बतलाये गये हैं:-

- क्लिनिकल मृत्यु (Chinical Death)
- मस्तिष्कीय मृत्यु (Brain Death)
- जैविक मृत्यु (Biological Death)
- सामाजिक मृत्यु (Social Death)

मृत्यु का सामना करना - मनोवैज्ञानिक मुद्दे :-

मृत्यु तथा प्रियजनों की कमी का सामना करना - सभी व्यक्तियों का इस मुद्दों के सामना करने का तरीका भिन्न - भिन्न होता है।

1.) स्वयं की मृत्यु का सामना करना : यदि कोई

भी बीमारी न हो, तो प्रायः वृद्ध लोग सौ साल की आयु के आसपास अपनी सामान्य मृत्यु मरते है इन लोगो में बौद्धिक क्षमता का ह्रास व खाने पीने में रुचि का अभाव देखा गया है। कुछ लोग जो अपने आपको मृत्यु से प्रत्यक्षता का अहसास हुआ चमकीली रोशनियों तथा रहस्यमय बाते दिखाई दी इन्हे मृत्यु के समय होने वाले भय से जोड़कर देखा जाता है।

2.) जीवन के विभिन्न चरणों में शोकाकुलता ⇒ प्रौढ़ावस्था

अपनी शिक्षा तथा अपना कैरियर व गृहस्थ जीवन में व्यस्त होने के कारण जीवन जीने के लिये उत्सुक रहते है यदि वे किसी गंभीर बीमारी से ग्रस्त हो जाते है। मध्यावस्था में प्रायः शरीर बढ़ती आयु के चिन्ह दिखाने लगता है और उन्हे इस बात का अहसास हो जाता है कि वे अब मृत्यु के लिए अग्रसर है और वे यह सोचने लगते है कि अपने आयु के बचे हुए समय को वह किस प्रकार प्रयोग कर सके। अक्सर अपने वृद्ध अभिभावकों की मृत्यु के बाद यह सोचने लगते हैं कि हम इनके बाद मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे है।

मृत्यु के चरण (Stages of Dying): किसी भी रोगी के जीवन में गम्भीर बीमारी तथा मृत्यु के बीच पाँच चरण आते हैं, जो निम्नानुसार हैं:—

1. प्रथम चरण → अस्वीकार करना (State I (Denial)): जब किसी रोगी को यह पता चलता है कि वह गम्भीर रूप से बीमार है, तो उन्हें प्रायः आघात लगता है या अस्वीकार कर देते हैं। यह अवस्था कुछ दिनों से कई महिनों तक चलती है। परन्तु केवल 1 प्रतिशत मृत्युपर्यन्त यह स्वीकार नहीं कर पाते कि वे मरने वाले हैं।

2. द्वितीय चरण : रोष या क्रोध State-II (Anger) जब रोगी इस अस्वीकारिता को छोड़ देते हैं तो उसके बाद उनमें रोष उत्पन्न होता है एवं जिद्दी, हिंसक या फिर न सम्भलने योग्य हो जाते हैं। इन स्थितियों में अस्पताल के स्टाफ को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

3. तृतीय चरण : सौदा करना State-III (Bargaining) इन सभी चरणों के बाद वे सौदे बाजी या फिर सौदे या समझौते की स्थिति में आ जाते हैं, इस स्थिति में वे :—

- अपनी उम्र बढ़ाने के लिए प्रार्थना करते हैं।
- अपने अंगों को दान करना चाहते हैं।
- बहुत अच्छे इंसान हो जाते हैं।
- हर सप्ताह चर्च या मंदिर जाते हैं।

इस स्थिति में वे अपने जीवन काल को बढ़ाने के लिए किसी भी वस्तु को पाने के लिए तैयार रहते हैं।

4. चतुर्थ चरण : विषाद से ग्रस्त होना Stage - IV Depression

जब रोगी अस्वीकार की अवस्था में होते हैं तो सोचते हैं 'मैं नहीं जब रोष की अवस्था में होते हैं तब सोचते हैं "मैं ही क्यों" जब वे सौदे की अवस्था में आते हैं तो सोचते हैं हां मैं परन्तु और जब सभी चरण आते हैं, तो अंतिम चरण में सोचते हैं 'हां मैं' इस स्थिति में वे विषाद ग्रस्त हो जाते हैं।

5. पंचम चरण : स्वीकारना (Stage V (Acceptance):

जब डॉक्टर रोगी की आरंभिक शोक में मदद करते हैं, तो रोगी प्रायः अपने निकट संबंधित को अधिक अंतिम बार देखना चाहते हैं और उसके बाद बच्चों और अंत के समय एक व्यक्ति जिसे वे सबसे ज्यादा प्रेम करते हैं।

GOVT GIRLS COLLEGE KHARGONE

PAPER- I

C.C.E of HOME SCEINCE

NAME - SAPNA GANGLE

CLASS - B.A III rd year

SUBJECT - HOME SCEINCE

Roll No. - 9082367

2021. 22

Submitted to - MAMTA GOYAL

Shrinath

Topic ______ Date ______ Page ______

9/10

Q. 4 भोजन के कार्य लिखिए।

Ans. ⇒ भोजन के कार्य

शारीरिक कार्य	सामाजिक कार्य	मनोवैज्ञानिक
(i) ऊर्जा प्रदान करना	(i) संस्कृति का प्रतीक	(i) संवेगो का प्रकटीकरण।
(ii) शरीर की वृद्धि, विकास व मरम्मत	(ii) आर्थिक स्तर का प्रतीक	(ii) ~~संवेगो का~~ सुरक्षा की भावना का विकास
(iii) आंतरिक शारीरिक क्रियाओ का संचालन	(iii) दोस्ती व आतिथ्य का प्रतिक	(iii) बल के रूप मे भोजन का प्रयोग
(iv) रोगो से शरीर की रक्षा		

(i) शारीरिक कार्य (Physiological functions) :⇒ हमारे द्वारा गृहण किया गया भोजन ही हमारे शरीर के वृद्धि, विकास क्रियाशीलता, स्वास्थ्य रक्षा मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। भोजन द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित शारीरिक कार्य सम्पन्न किये जाते है –

⇒ शरीर को ऊर्जा प्रदान करना :⇒ विभिन्न शारीरिक क्रियाकलापो जैसे चलने, बैठने कार्य करने, दैनिक गतिविधियो के अतिरिक्त विभिन्न आंतरिक शारीरिक क्रियाओ जैसे – श्वसन, भोजन का पाचन, अवशोषण उत्सर्जन आदि के लिए भी ~~के~~ ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जो कि हमे भोजन के कार्बोहाइड्रेट व वसा समूह से प्राप्त होती है।

⇒ शरीर निर्माणक कार्य :⇒ भोजन मे उपस्थित प्रोटीन व खनिज लवण शरीर का निर्माण व उसकी वृद्धि विकास का कार्य करते है साथ ही पुरानी कोशिकाओ के ~~क~~ क्षय होने पर उनके स्थान पर नवीन कोशिकाओ का निर्माण कर

शरीर के मेन्टेनेन्स का कार्य भी करते हो, गर्भ मे भ्रूण माँ के भोजन से पोषण प्राप्त करता है और एक सूक्ष्म अण्डाणु से 9 माह मे एक पूर्ण मानव शिशु की संरचना जिसका वजन 2.5 से 3 किलोग्राम एवं लंबाई 18 से 20 इंच होती है का जन्म होता है यही शिशु वयस्क होने पर 5-6 फीट लंबाई व 50-75 किलो वजन वाले युवा के रूप मे परिवर्तित हो जाता है भोजन के प्रोटीन व खनिज तत्व ही इस परिवर्तन के लिए उत्तरदायी होते है जो कि भोजन मे उपलब्ध दूध व दूध से बने पदार्थो, अण्डा, मांस, मछली व दालो, सोयाबीन व सूखे मेवे आदि से प्राप्त होते है

(i) रोगो से रक्षा एवं स्वास्थ्य :→ भोजन मे उपस्थित विभिन्न प्रकार के विटामिन शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता मे वृद्धि करते है जिससे संक्रामक तथा कई विटामिन की कमियो से होने वाले रोगो से शरीर की रक्षा होती है एवं व्यक्ति स्वस्थ रहता है भोजन मे उपस्थित फल एवं सब्जियाँ तथा दूध विटामिन प्राप्ति के समृद्ध स्रोत है

(ii) आंतरिक शारीरिक क्रियाओ का नियमन एवं नियंत्रण :→ भोजन मे उपस्थित प्रोटीन, खनिज लवण तथा विटामिन विभिन्न आंतरिक शारीरिक क्रियाओ का संचालन नियमन व नियंत्रण करते है जल संतुलन का नियमन, शारीरिक तापक्रम का नियमन उत्सर्जन, हृदय की धड़कन, श्वसन गति का नियमन, रक्त स्राव होने पर रक्त का थक्का जमना जैसे स्वस्थ जीवन के लिए आवश्यक कार्य भोजन मे उपस्थित पोषक तत्वो के माध्यम से ही संभव होते है

(ii) सामाजिक कार्य (Social functons) :

(i) सामाजिक संबंधो मे प्रगाढ़ता :→ भोजन शारीरिक आवश्यकताओ को पूर्ण करने के साथ ही सामाजिक संबंधो को मजबूत बनाने मे भी मदद करता है

सदियो से समाज मे विशेष अवसरो जैसे जन्मदिन, विवाह, नौकरी मे पदोन्नति, वैवाहिक वर्षगाँठ, संतान प्राप्ति जैसे अवसरो पर भोज का आयोजन किया जाता है।

(ii) परिवार की आर्थिक प्रतिष्ठा का प्रतीक :- विशेष अवसरो पर आयोजित भोजन मे महँगे व स्वादिष्ट व्यंजनो को शामिल करना परिवार की आर्थिक प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, यद्यपि इसका मध्यम व निम्न मध्यम आय वर्गीय परिवारो की आर्थिक स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा इस तरह से खाद्य सामग्री का अपव्यय भी होता है अतः समाज मे दिखावे व झूठी प्रतिष्ठा के लिए किये जाने वाले बड़े भोज आयोजनो को हतोत्साहित करने की आवश्यकता है।

(iii) भोजन संस्कृति व आतिथ्य का प्रतीक :- हमारे देश मे अतिथि को देवतुल्य माना गया है अतः उनके सत्कार के लिए उनके साथ समक्ष विशेष भोजन, चाय, कॉफी व शर्बत आदि पेय परोसे जाते है अलग-अलग संस्कृति की पहचान बन जाते है विशेष अवसरो पर एवं विशिष्ट अतिथियो के सत्कार के लिए अपनी संस्कृति अनुसार विशिष्ट व्यंजनो को भोजन मे सम्मिलित किया जाता है।

(iv) आर्थिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मुद्दो पर सकारात्मक प्रयास मे सहायक :- विभिन्न आर्थिक, सामाजिक मुद्दो पर विचार-विमर्श हेतु भी राष्ट्रिय या अन्तर्राष्ट्रीय पक्षो के बीच सौहार्द्रपूर्ण व आरामदायक वातावरण बनाने के लिए सभा, सम्मेलन आदि के बीच भोजन, जलपान आदि की व्यवस्था की जाती है ऐसे अवसरो पर परोसे जाने वाले व्यंजन रुचिकर, तृप्ति व संतुष्टि देने वाले हो तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से भी पोषक तत्वो से परिपूर्ण होने चाहिए।

(iii) मनोवैज्ञानिक कार्य (Psychological functions) :-

भोजन शारीरिक व सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ ही मन को संतुष्टि प्रदान करने का कार्य भी करता है कहावत है कि "दिल का रास्ता पेट से होकर जाता है" अर्थात् जब व्यक्ति को भोजन स्वादिष्ट व उसकी पंसद का मिलता है तभी उसका दिल खुश व संतुष्ट होता है वरना पेट तो भर जाता है पर तृप्ति नही मिलती।

(i) भोजन संवेगो के प्रकट करने का माध्यम :- विभिन्न समुदायो मे दुःख, खुशी के विशेष अवसरो पर कुछ खास तरह के भोज्य पदार्थ ही बनाये जाते है, जैसे घर मे किसी की मृत्यु होने पर मसालो का उपयोग न कर उबली दाल और रोटी के उपयोग को उन दुःख के क्षणो से जोड़ दिया गया है उसी तरह खुशी के अवसर पर मिठाई व विभिन्न व्यंजनो आदि को खुशी के क्षणो से जोड़ दिया गया।

(ii) सुरक्षा की भावना का प्रतीक :- व्यक्ति को अपनी संस्कृति व रीति-रिवाजो के अनुरूप जाना-पहचाना भोजन, यदि घर से बाहर यात्रा भ्रमण आदि के दौरान मिल जाता है तो उससे सुरक्षा की अनुभूति होती है इसी प्रकार छोटे बच्चो को माँ का स्तनपान मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करता है।

(iii) बल (Force) के रूप मे भोजन का प्रयोग :- इतिहास साक्षी है कि भोजन का प्रयोग दुश्मन की सेना को उससे वंचित कर युद्ध जीतने के लिए भी किया जाता है इसी तरह भूख हड़ताल कर अपनी माँगो को मनवाने के लिए भी भोजन को हथियार के रूप मे इस्तमाल किया जाता है।
परिवारो मे बच्चो को गलती करने पर उनके मनपसंद भोजन जैसे आइसक्रीम, चॉकलेट आदि से निर्धारित समय के लिए वंचित कर उन्हे सुधारने की कोशिश की जाती है।

Shrinath

Topic _____ Date _____

_____ Page _____

Q.(2) प्रोटीन कैलोरी कुपोषण लिखिये।

Ans. → यह पोषण की वह स्थिति है जिसके कारण व्यक्ति के ~~स्वास्थ्य~~ स्वास्थ्य में गिरावट आने लगती है और इसके कारण शरीर रोग ग्रस्त हो जाता है यह एक या एक से अधिक पोषक तत्वो की कमी या अधिकता अथवा असंतुलन के कारण होती है।"

अधिकांश, भारतीयो के भोजन में चाहे वह गरीब हो या अमीर, वृद्ध हो या युवा, स्त्री हो या पुरुष, गर्भवती माता हो या धात्री माता और शिशु एक या अधिक पोषक तत्वो की कमी या अधिकता रहती है विशेषकर बहुसंख्य निम्न अधिक वर्ग के लोगो का भोजन गुणात्मक (qualitative) व परिमात्मक (quantitative) दोनो दृष्टि से अपर्याप्त रहता है

Shrinath

Topic _____ Date _____

_____ Page _____

Q.(3) लौह लवण के कार्य व कमी को बताईये।

Ans.⇒

लौह लवण के कार्य (Functions of Iron)

(1) हीमोग्लोबिन का निर्माण (Formation of Haemoglobin):-

लौह हीमोग्लोबिन का अत्यंत आवश्यक खनिज लवण है हीमोग्लोबिन मे हिम लौह तथा ग्लोबिन प्रोटीन हो एक स्वस्थ वयस्क व्यक्ति के रक्त मे 14-16gm प्रति 100 मिलि हीमोग्लोबिन की मात्रा होनी चाहिए।

शरीर मे हीमोग्लोबिन का मुख्य कार्य ऑक्सीजन व कार्बन डाय ऑक्साइड का आदान-प्रदान करना है हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन से संयोग कर ऑक्सी हीमोग्लोबिन तथा कार्बन डाय ऑक्साइड से जुड़कर कार्बोक्सी हीमोग्लोबिन नामक अस्थायी यौगिक बनाने की क्षमता रखता है

हीम + ग्लोबिन = हीमोग्लोबिन

(Heam) + (Globin) = (Haemoglobin)

(2) पेशीय संकुचन (Contraction of Muscles):- मॉसपेशियो मे मायोग्लोबिन (Myoglobin) के रूप मे लौह और प्रोटीन एक संयुग्मी प्रोटीन रहता है, जो मॉसपेशियो मे ऑक्सीकरण एवं अवकरण की क्रिया को सम्पन्न करता है जिससे पेशियो के संकुचन क्रिया के लिए आवश्यक ऊर्जा मिलती है

(3) एन्जाइम्स का निर्माण (Formation of Enzymes):-

कोशिकीय श्वसन मे प्रतिकर्मक के रूप मे काम करने वाले "साइटोक्रोम्स" (Cytochromes) का निर्माण लौह तत्व एवं प्रोटीन से मिलकर ही होता है प्रोटीन, तथा कार्बोहाइड्रेट के ऑक्सीकरण प्रक्रिया मे भाग लेने वाले उत्प्रेरक एन्जाइम्स कैटेलेज व पेरॉक्सिडेज का निर्माण भी लौह से ही

होता है

(4) प्रतिरक्षी कोशिकाओ का निर्माण (formation of Antibodies)

प्रतिरक्षी कोशिकाएँ शरीर का सुरक्षा कवच (Protective Layer) तैयार करती है जिससे शरीर को विभिन्न रोगो से लड़ने की शक्ति मिलती है। इन प्रतिरक्षी कोशिकाओ (Anti Bodies) के निर्माण मे भी प्रोटीन व लौह तत्व का उपयोग होता है

लौह लवण की कमी

शरीर मे लौह की कमी का सीधा संबंध रक्त की कमी से है रक्त कोशिकाएं लौह की कमी के कारण पीली और कमजोर बनती है ऐसी कोशिकाएँ शारीरिक क्रियाओ के फलस्वरूप उपजी कार्बन डाईआक्साइड को फेफड़ो तक पहुँचाकर शुद्ध ऑक्सीजन मे नही बदल पाती। परिणामत: आक्सीजन की मात्रा घट जाने से शरीर की प्रक्रियाएं मन्द पड़ जाती है

Shrinath

Topic ________ Date ________

Page ________

Q.(21) भोजन संरक्षण के उद्देश्य समझाइये।

Ans. ⇒ (1) वर्षभर सभी भोज्य पदार्थ उपलब्ध कराना :⇒ अधिकांश खाद्य पदार्थ जैसे - आलू - प्याज, अनाज, तिलहन, दलहन आदि की फसल वर्ष मे केवल एक बार होती है। अतः उन्हे वर्षभर उपलब्ध कराने हेतु इनका संरक्षण आवश्यक होता है।

(2) पोषक मूल्यो मे वृद्धि :⇒ आम व अन्य फलो का अचार, मुरब्बा, जैम - जैली के रुप मे संरक्षण करके तथा हरी पत्तेदार सब्जियो को मौसम के समय सुखाकर पूरे वर्ष रोटी, पराठा या दाल आदि मे मिश्रित कर भोजन का पोषण मूल्य बढ़ाया जा सकता है।

(3) दैनिक आहार मे विविधता लाना :⇒ संरक्षित खाद्य पदार्थो का उपयोग कर दैनिक आहार मे विविधता लाई जा सकती है जिससे भोजन की एकरसता समाप्त होती है और व्यक्ति की भोजन करने की इच्छा मे वृद्धि होती है। आचार मुरब्बे, चटनियाँ क्षुधावर्धक का कार्य करते है।

(4) खाद्य सामग्री को नष्ट होने से बचाना :⇒ भोजन संरक्षण के द्वारा मौसम मे सब्जी, फलो का तात्कालिक आवश्यकता से अधिक उत्पादन होता है तब इनका संरक्षण नही करने पर ये नष्ट हो जाती है। अतः इन्हे खाद्य संरक्षण व खाद्य प्रसंस्करण आदि तकनीको से नष्ट होने से बचाना आवश्यक है।

(5) आर्थिक बचत :⇒ उत्पादन के मौसम मे अनाज व अन्य खाद्य सामग्री तुलनात्मक रुप से सस्ती मिलती है। अतः उसी समय खरीदकर उचित संग्रहण व संरक्षण तकनीक का उपयोग कर आर्थिक बचत की जा

सकती है और जब अधिक गर्मी या बरसात मे बाजार मे सब्जी, फल आदि बहुत महंगे हो जाते है। संरक्षित खाद्य सामग्री का उपयोग किया जा सकता है।

(6) पोषण स्तर मे सुधार मे सहायक :→ कुपोषण देश की एक गंभीर समस्या है संरक्षित खाद्य पदार्थों का उपयोग कर कुछ हद तक बच्चो, गर्भवती व धात्री महिलाओ के पोषण स्तर को सुधारा जा सकता है। दूध पाउडर, अण्डे का पाउडर, मछली का पाउडर, भूने चने, मूंगफली आदि का उपयोग कर पोषाहार तैयार किया जा सकता है।

(7) आपातकाल मे भोजन उपलब्ध कराने मे सहायक :→ प्राकृतिक आपदा के समय संरक्षित भोज्य पदार्थ, डिब्बो या पैकेटो मे बंद कर जरूरतमंद लोगो तक पहुँचाया जाता है। जिससे उनकी भोजन संबंधी तात्कालिक आवश्यकता पूर्ण करना संभव होता है।

(8) यात्रा प्रवास के समय उपयोगी :→ लंबी यात्रा, पर्वतारोहण, प्रवास आदि के समय संरक्षित खाद्य पदार्थ काफी उपयोगी होते है।

(9) रोजगार का अवसर :→ खाद्य परिरक्षण की तकनीको का प्रशिक्षण प्राप्त कर खाद्य परिरक्षण इकाई की स्थापना कर अपने लिए व अन्य लोगो के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये जा सकते है।

(10) समय, धन व शक्ति की बचत मे सहायक :→ परिरक्षित खाद्य पदार्थों के उपयोग से समय व शक्ति की बचत तो होती है साथ ही यदि मौसम के समय घर मे ही खाद्य परीक्षण / संग्रहण किया जाता है तो धन की बचत भी होती है।

Shrinath

Topic

Date

Page

Q.5 आयोडीन की कमी, प्राप्ति साधन के बारे मे लिखिये।

Ans. → आयोडीन की कमी

(1) यदि भोजन से आयोडीन की पूर्ति नही हो पाती है तो थायरोक्सिन बनाने के लिए थॉयराइड ग्रंथि को ज्यादा प्रयास करना पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप ग्रंथि की कोशिकाएँ निरंतर विभाजित होती रहती है और ग्रंथि का आकार बड़ा होकर एक बड़ी गाँठ की तरह हो जाता है इसे घेघा या गलगण्ड कहते है।

(2) थायराइड ग्रंथि श्वास नली के ऊपरी भाग मे ही होती है, अतः इसका आकार बढ़ने से श्वास नली पर दबाव पड़ता है एवं श्वास लेने मे कठिनाई होती है आयोडीन युक्त आहार के सेवन से इस रोग को दूर किया जा सकता है सामान्य अवस्था मे वयस्क व्यक्ति की थायराइड ग्रंथि का वजन 25 ग्राम होता है लेकिन गॉयटर मे इसका वजन 200 से 250 ग्राम मानो 10 गुना तक बढ़ जाता है।

(3) क्रेटिनिज्म :→ जिन बच्चो की माताओ को गर्भकाल के दौरान पर्याप्त मात्रा मे आयोडीन की आपूर्ति नही होती है, उन बच्चो को "क्रेटिनिज्म" बीमारी की संभावना अधिक रहती है जिसके लक्षण निम्नानुसार है—

(i) बच्चे का शारीरिक व मानसिक विकास अवरुद्ध हो जाता है
(ii) बच्चे मे बौनापन अर्थात कद बहुत ही छोटा रह जाता है
(iii) बच्चे की चयापचय की दर अत्यंत कम हो जाती है
(iv) मांसपेशियाँ ढीली व कमजोर हो जाती है
(v) त्वचा सूखी, मोटी व खुरदुरी हो जाती है
(vi) बाल रूखे, चमकहीन तथा भूरे हो जाते है
(vii) चेहरा उदास व लावण्यहीन हो जाता है

(4) मिक्सीडिया :→ वयस्क लोगो मे लंबे समय तक आयोडीन की कमी से यह बीमारी होती है

इसके लक्षण निम्नानुसार है—

Shrinath

Topic
Date
Page

~~भोजन कार्य लिरे~~

(i) शरीर मे सूजन हो जाती है
(ii) थकान, सुस्ती रहने के कारण व्यक्ति उत्साहहीन आलसी दिखता है चेहरा उदास व भावहीन दिखता है
(iii) शरीर का तापक्रम कम हो जाता है तथा रोगी को गर्मी मे भी ठंड का अनुभव होता है
(iv) बालो की चमक समाप्त हो जाती है तथा बाल कड़े व क्षय हो जाते है बाल झड़ने लगते है
(v) आवाज भारी हो जाती है
(vi) शरीर की मांसपेशियां कमजोर एवं दुर्बल हो जाती है
(vii) हृदय गति मंद हो जाती है
(viii) त्वचा सूखी, खुरदुरी व कांतिहीन हो जाती है

आयोडीन प्राप्ति के साधन (Sources of Iodine)

जिन स्थानो के जल एवं मिट्टी मे आयोडीन पाया जाता है वहां उगाये जाने वाले फल एवं सब्जियो मे आयोडीन विद्यमान रहता है, आमतौर पर समुद्री जल तथा उसके आसपास की भूमि मे आयोडीन प्रचुर मात्रा मे रहती है इसलिए समुन्द्री नमक, समुद्री मछलियां तथा समुद्री घास आयोडीन प्राप्ति के सर्वोत्कृष्ट साधन है। समुद्र किनारे पाले जाने वाले दुधारु पशुओ के दूध तथा वहां उगाए जाने वाले फल, सब्जियो मे भी पर्याप्त मात्रा मे आयोडीन मिलता है लेकिन हिमालय की तराई के क्षेत्रो व अन्य पर्वतीय क्षेत्रो की मिट्टी व पानी मे आयोडीन नही होता। अतः इन क्षेत्रो मे उगाये जाने वाले फल, सब्जियो, दूध व वहां के जल मे आयोडीन अनुपस्थित रहता है अतः ऐसे स्थानो मे आयोडीन युक्त नमक की आपूर्ति कर आयोडीन की कमी को दूर किया जाता है

सत्र 2021-22

Date:
Page No.:

CCE

नाम सुनिता गेहलोद

पिता श्री नवलसिंग गेहलोद

कक्षा :- M.A. IV सेमेस्टर
समाजशास्त्र

विषय :- प्रश्न पत्र :- औद्योगिक समाजशास्त्र

रोल नं. :- 3082004g

DA :- 1718703

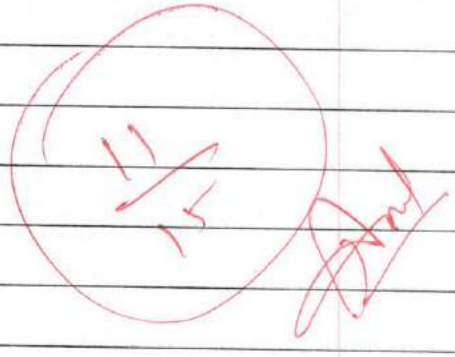

penkraft

Date:
Page No.:

penkraft

Date:
Page No.:

9. (2) औद्योगिक समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए तथा महत्व ~~इसकी~~ इसकी प्रकृति और क्षेत्र की विवेचना कीजिए।

उत्तर:- ~~*~~ औद्योगिक समाजशास्त्र की परिभाषा :-

औद्योगिक समाजशास्त्र आज तीव्रता मे बदते हुए औद्योगिक व नगरीय समाजों मे ~~a~~ महत्व पूर्ण स्थान रखता है। विकसीत देशो मे तो यह विज्ञान इतना अधिक विकसीत है कि अनेक विश्वविद्यालय इसे एक पृथक सामाजिक विज्ञान के रूप मे स्वीकार करते है।

~~*~~ औद्योगिक समाजशास्त्र का महत्व :-

(1) औद्योगिक समाज मे स्थायित्व :- समाज के लिये गतिशीलता एक अनिवार्य गुण है, परन्तु प्रगति के लिये कुछ कुछ स्थिरता आवश्यक है। स्थिरता से तात्पर्य है कि परिवर्तन किसी सुव्यवस्थित प्रतिमान के अनुसार हो जिसमे कि प्रगति सम्भव हो। औद्योगिक समाजशास्त्र का अध्ययन करने पर उन सामाजिक नियमो का ज्ञान होता है जो एक औद्योगिक समाजशास्त्र मे स्थिरता प्रदान करते है।

(2) औद्योगिक नियोजन ~~के~~ मे सहायक :- वर्तमान युग है, बीसवी शताब्दी सेवाएं स्तर से नियन्त्रित परिवर्तन के लिये प्रमुख मानी जाती है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे नियोजन स्थित है तथा उद्योग इसके कोई अपवाद नही है नियोजन के होने पर औद्योगिक प्रगति नही हो सकती। इसी के द्वारा उन नियमों का ज्ञान होता है जिसके द्वारा उद्योग मे विभिन्न परिस्थिति एवं कारकों मे अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

(3) औद्योगिक समस्याओ के निराकरण मे सहायक :- यह शास्त्र

penkraft

औद्योगिक समाज की समस्याओं को सुलझाने में सहायता करता है। वर्तमान समय में औद्योगिक क्रान्ति के कारण मानव समाज में सामाजिक संरचना, स्थिति, श्रम विभाजन, परिवर्तन तथा गतिशीलता आदि में काफी तीव्र परिवर्तन होने के कारण बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो गयी हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिये औद्योगिक समाजशास्त्र का ज्ञान होना आवश्यक है।

(4) वैज्ञानिक ज्ञान वृद्धि :- वर्तमान युग विज्ञान का युग है। विज्ञान जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य-कारण संबंध खोजने की एक विधि है। किसी भी राष्ट्र की प्रगति औद्योगिक प्रगति से ज्ञात की जा सकती है। औद्योगिक समाज की संस्थाओं, सामाजिक नियन्त्रण, परिवर्तन, गतिशीलता, अन्तःक्रिया, समस्याओं तथा उनके समाधान का वैज्ञानिक अध्ययन इस शाखा के अन्तर्गत किया जाता है। अतः यह इन सभी पहलुओं के बारे में हमारे वैज्ञानिक ज्ञान की वृद्धि करता है।

(5) सामान्य ज्ञान में वृद्धि :- औद्योगिक समाजशास्त्र मानव ज्ञान में एक नवीन पहलू का निर्माण करता है। सामान्य समाजशास्त्र का अध्ययन भी औद्योगिक समाजशास्त्र के ज्ञान के बिना अधूरा है।

(6) व्यक्तित्व संकलन में सहायता :- इसके विघटित होने पर सामाजिक विघटन भी अवश्य होगा। मनुष्य के व्यक्तित्व को संगठित व संकलित करने के लिये कैसी परिस्थितियाँ कार्य करने के लिये होनी चाहिये, इसका पता होना आवश्यक है तथा यह हमें इस शाखा द्वारा पता चलता है। ऐसे ज्ञान की सहायता से नगरीय व्यक्तित्व को अधिक संकलित रखा जाता है।

penkraft

Q.(2) श्रम संगठन से आप क्या समझते हैं तथा इसके कार्यों का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर :- ★ श्रम संगठन से आप क्या समझते हैं :- श्रम की दशा को सुधारने के लिये विश्व सन् 1818 में रॉबर्ट ओवेन ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने का प्रयत्न किया था। सन् 1866 में एक अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन हुआ था। जिसमें यह प्रयास प्रस्ताव रखा गया कि संसार के सभी देशों में श्रमिक विधान बनाये जायें। समय-समय पर कई सम्मेलन आयोजित किये गये। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ठोस कदम प्रथम महायुद्ध के बाद उठाया गया। युद्ध के बाद वार्सा की संधि में यह निश्चित किया गया है कि संसार में स्थायी शान्ति के लिये सामाजिक न्याय आवश्यक है और संसार के श्रमिक की दशा में सुधार हेतु एक स्थायी संगठन बनाया। अतः 21 जून, 1919 के प्रमुख देशों ने श्रमिक की में सुधार हेतु एक स्थायी संगठन बनाया। अतः अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन लीग ऑफ नेशन्स का एक प्रमुख अंग बन गया। संगठन बनाते समय संगठन के उद्देश्यों का स्पष्ट उल्लेख किया गया है, संगठन को ऐसे कार्य करने चाहिये जो श्रमिक के कार्य करने के घंटों को नियन्त्रित कर सके तथा श्रम की पूर्ति पर नियन्त्रण करना, उचित मजदूरी, रोजगार की सुरक्षा, बाल तथा महिला श्रमिकों का शोषण रोक सके। यह संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ से पूर्णतः संबंधित है। यह संगठन राष्ट्रों का ऐसा संघ है जो सरकारों द्वारा आर्थिक सहायता प्राप्त करता है और प्रजातान्त्रिक आधारों पर सरकारी व सेवायोजकों को श्रम संगठनों के द्वारा नियंत्रित करता है। इसका उद्देश्य सभी देशों में सामाजिक न्याय करना है तथा इसके लिये यह श्रम और सामाजिक दशाओं से संबंधित तथ्य एकत्रित करता है। दिसम्बर, 1969 में 111 राज्य इसके सदस्य हैं।

penkraft

Date:
Page No.:

★ श्रम संगठन कार्यों का वर्णन :-

(1) अन्तर्राष्ट्रीय संगठन :- राष्ट्रो को सामाजिक औद्योगिक एवं सामाजिक संगठन संबंधी बहुमूल्य सुझाव देकर उनको अमूल्य सेवा देना। यह संगठन श्रम-कल्याण एवं औद्योगिक उन्नति की वृद्धि से सदस्य देशो को समय-समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव प्रदान करती है।

(2) कार्य भूमि :- यह सहायता प्राप्त करने वाले इच्छुक सदस्य देशो को शिष्ट-मण्डल के माध्यम से सहायता प्रदान करता है। यह शिष्ट-मण्डल उस देश मे जाकर वहाँ की दशाओ का अध्ययन करके अपने सुझाव देता है, जिससे अनेक विचारो का विवरण आधारित कार्यों पर निर्भर करता है।

(3) आर्थिक प्रणालि श्रम संगठन :- बेरोजगारी, सामाजिक सुरक्षा, समाज कल्याण, श्रम संगठन तथा अन्य सम्बन्धित विषयों पर बहुमूल्य साहित्य प्रकाशित करके यह संगठन श्रम-शक्ति की विशेष रूप से सेवा करता है। इस संगठन की सहायता से विभिन्न देशों की आर्थिक, सामाजिक एवं श्रम संबंधी समस्याओं के ज्ञात होने के साथ होता है।

(4) श्रम कल्याण विभाजन :- संसार की आर्थिक एवं श्रम समस्या का अध्ययन करके उनके समाधान परामर्श देना। जिससे प्रत्येक देश मे समस्त देशी-विदेशी कार्यों मे गुणो का रूपान्तरण किया के लिये अपने विषयो पर निर्भर करता है जिससे कोई भावात्मक वार्तालाप समता का आधारभूत विषयों पर श्रम विभाजन के लिये चलाये जाते है।

penkraft

Date:
Page No.:

प्र. 13) कार्य से क्या आशय है कार्य के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण या कार्य की प्रकृति व कार्य की नैतिक के मानदण्ड ?

उत्तर : ☆ कार्य से क्या आशय :– सभी प्रकार के समाजो मे चाहे वे प्राचीन हो या आधुनिक, व्यक्तियों को अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये कुछ कार्य करना पड़ता है। कार्य मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण गतिविधि है तथा यही सामाजिक संरचनाओ का भी आधार है। लेकिन सभी समाजो मे कार्य की प्रकृति, स्वरूप उद्देश्य व तौर-तरीके एक जैसे नही होते।

☆ कार्य की अवधारणा :– निश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिये किये गये प्रयास करना है। कार्य शब्द जितना सरल है उतना ही यह पावन के लिये मनुष्य विभिन्न कार्य करना है। कार्य शब्द। यह अस्पष्ट शब्द है कि जनसहज आवश्यकोई शक्ति का उपयोग होता है। परिश्रम तथा प्रयास को उपयोग किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये किया जाता है।

मानवशास्त्री रेमण्ड फिर्थ ने कार्य को मनुष्य की आय उत्पन्न करने वाली क्रिया बताया है। उनके अनुसार :– "कार्य एक उद्देश्यपूर्ण क्रिया है जिसमें आनन्द अथवा अवकाश त्यागकर शक्ति का उपयोग किया जाता है।

☆ हेनरी अरवान :– के अनुसार, "कार्य एक मांसपेशियो द्वारा की गयी प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप थकान और खुशी का अनुभव होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओ से यह स्पष्ट हो जाता है कि कार्य एक लक्ष्य होता है तथा उसका परिणाम भी यह किसी न किसी रूप मे समाज मे उपयोगिता रखता है। अतः कार्य मनुष्य की अत्यन्त महत्वपूर्ण कही जा सकती है। और यही सामाजिक संरचना को प्रमुख आधार है।

penkraft

Date:
Page No.:

★ कार्य के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण :- समाज के क्रमिक विकास के अनुसार कार्य के प्रति लोगों की धारणायें व दृष्टिकोण बदलते रहते हैं तथा समाजशास्त्रीय तत्वों का प्रभाव भी कार्य के स्वभाव पर पड़ता है। कार्य के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण को निम्नलिखित शीर्षकों में विभक्त किया गया है :-

(1) कार्य ही मानव व्यक्तित्व का निर्माता है :- कुछ व्यक्तियों का विचार है कि कार्य का सीधा सम्बन्ध मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास से है। व्यक्ति जिस वातावरण में रहकर कार्य करता है इस सम्बन्ध में मार्शल ने लिखा है, "कार्य चरित्र के लिये इसलिये वह प्रगति के लिये एक आवधारणा आवश्यकता है।" समाजशास्त्र बोगार्डस का भी विचार है कि "व्यावसायिक गतिविधि की आदतों और परिवेश में जीवन ढल जाता है।" इस सन्दर्भ में एडम स्मिथ ने ठीक ही लिखा है कि "मनुष्यों की अधिकांश सुख-दुःख और जानकारी अनिवार्यतः धन के धन्धों में ढलती है।"

(2) कार्य में कष्ट ही कष्ट है :- औद्योगीकरण के विकास की प्रक्रिया को ध्यान रखते हुये कुछ विचारकों ने कहा है कि कार्य में कष्ट है तथा इसमें अमानवीय भी शामिल है। मनुष्य परस्पर बंधे हो अवश्य होते हैं परन्तु केवल कागजी कामों के आदेशों के माध्यम से होता है। अमरीकन समाजशास्त्री वेब्लेन ने लिखा है कि यांत्रिक रोजगार और धंधे मनुष्य के चिन्तन को भी यांत्रिक बना देते हैं। कार्ल पोलेनी ने लिखा है, औद्योगीकरण के कारण सामाजिक संगठन अस्त-व्यस्त हो गया है।

penkraft

Date:
Page No.:

(3) कार्य मे क्रीडा का भी समावेश है :- कार्य मे कष्ट ही कुछ है, यह विचार था। काफी लोकप्रिय रही है, परन्तु धीरे-धीरे यह अनुभव किया जाने लगा कि कार्य मे मनोविज्ञान भी है। विज्ञान और उत्पादन के क्षेत्र मे जो आविष्कार हुए है उनके पीछे क्रीडा का महत्वपूर्ण रहा है। कार्यो से मुक्ती मिलनी चाहिये। उसके रहन-सहन के आर्थिक स्तर मे वृद्धि होनी चाहिये, तथा उसे श्रेष्ठ, सफलतापूर्ण अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करने के लिए उठाना चाहिए।

(4) कार्य एक सृजनात्मक क्रिया है :- आधुनिक उत्पादन प्रणाली मे शारीरिक श्रम के बहुत अधिक महत्व नही है। लेकिन मानवो को अपने काम मे निरन्तर नयी-नयी चुनौतियो का सामना करना पड़ता है। विन्सेंट मेयर्स का मत है कि स्वचालन एक सम्पूर्ण की एक ऐसी कड़ी है जो युगान्तर मे कार्य के सम्बन्धो को ही मूलत: बदल देगी। एरिक फ्राम का कथन है कि, मनुष्य स्वयं मे साध्य है। अत: उसका साधन के रूप मे प्रयोग नही किया जाना चाहिए। जीवन का लक्ष्य मनुष्य की सृजनात्मक शक्ति को उद्घाटित करना है।

अत: कार्य समस्त मानवीय जीवन की आधार शिला है और इस सन्दर्भ मे यह कहा जा सकता है कि श्रम (कार्य) ने ही मनुष्य का निर्माण किया है।

penkraft

Date:
Page No.:

प्र.(4) भारत में महिला श्रमिकों की प्रमुख समस्या क्या है, उसके समाधान हेतु उपाय सुझाइये।

उत्तर: भारत में महिला श्रमिको की समस्या :- विभिन्न उद्योगों में कार्यरत महिलाओं की मुख्य समस्याएँ निम्न प्रकार है :-

(1) अल्प वेतन :- महिलाओं को पुरुषों की अपेक्षा कम वेतन दिया जाता है, जबकि महिलाओं के कार्य पुरुषों के समान ही कराया जाता है जो अनुचित है। औद्योगिक व्यापलय ने भी सेवायोजको की इस नीति को अनुचित बताया है।

(2) कठोर कार्य :- महिलाओं के लिये यह एक प्रमुख समस्या है। सन् 1948 के अधिनियम के अनुसार स्त्रियों महिलाओं से भी वे सब कठिन परिश्रम वाले कार्य कराये जाते है जो पुरुषों के करने योग्य होते है।

(3) बेकारी :- महिलायों के लिये यह एक प्रमुख समस्या है सन् 1948 के अधिनियम के अनुसार स्त्रियों व पुरुषों को समान कार्य के लिये समान वेतन की नीति निर्धारित की जाती है। इससे स्त्रियों को प्रसूति कालीन अवकाश व मातृत्व के लाभ आदि सुविधाएँ भी देनी पड़ती है। अतः सेवायोजकों ने अपने लाभ को दृष्टिगत करते हुए महिलाओं को काम देना कम कर दिया है। खानों के अन्दर कार्य करना महिलाओं के लिये वर्जित है इसलिये अतिरिक्त निम्न वर्ग की महिलाओं आशिक्षित होती है, जबकि औद्योगिक निर्माण का कार्य अधिक जटिल होता जा रहा है, उसको केवल प्रशिक्षण प्राप्त शक्ति ही कर सकती है। अतः महिलाओं में बेकारी की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है।

penkraft

Date:
Page No.:

(4) नैतिक पतन :- औद्योगिक क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं में अधिकतर महिलाओं का नैतिक पतन हो जाता है। अनेकों महिलाएँ ऐसी हैं जो मध्यस्थों नियोजकों की बेईमानी के कारण रात्रि में अनैतिक जीवन व्यतीत करती है।

(5) अस्वास्थ्य :- यह भी एक गंभीर समस्या है, क्योंकि जो महिलाएँ खानों, कारखानों व अन्य उद्योगों में कार्य करती है, वे गृहस्थी के कार्य से मुक्त नहीं हो जाती वरन् बाहर व अन्दर दोनों स्थानों स्थानों पर अपने उत्तरदायित्व पूर्ण करना पड़ता है। बार-बार सन्तान को जन्म देने से कुपोषण से इलाज की उपेक्षा के कारण प्रायः महिलाएँ अस्वस्थ रहती है। अतः कार्य की क्षमता कम होती है।

* महिला श्रमिकों समाधान हेतु उपाय :-

स्त्री श्रमिक की दशा में सुधार हेतु निम्न उपाय है:-

(1) पर्याप्त आय :- परिवार के प्रमुख सदस्य की आय इतनी अवश्य हो कि वह अपनी व परिवार की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके। यदि ऐसा होगा तो महिलाओं को कार्य का मौका।

(2) स्त्री श्रमिकों को संरक्षण :- महिलाओं को संरक्षण देने हेतु केन्द्र तथा राज्य सरकारों को समुचित अधिनियम पारित करने चाहिये। ऐसा प्रबन्ध हो कि वे घर पर ही सम्मानपूर्वक कार्य कर सके।

penkraft

(3) निरीक्षकों की संख्या मे वृद्धि :- निरीक्षण अधिकारियों की संख्या मे वृद्धि की जाये जिससे निरीक्षण कार्य नियमित व कठोरता से चलता रहे। जिससे कोई आधारित क्षमता की स्थापना कारण बनाया जा सकता है। निरीक्षकों के आधारित कार्यरत क्षमता को प्रभावित होता है।

(4) समान अधिकार :- भारतीय संविधान मे स्त्री व पुरुष दोनों को समान अधिकार प्राप्त है। अतः व्यावहारिक रूप मे समान कार्य के लिए दोनों का वेतन एक समान किया जाता है। जिससे श्रमिकों का अधिकार विचारक क्षमता की स्थापना कार्य बनाया जाता है।

(5) कुछ उद्योगो मे प्राथमिकता :- कुछ उद्योगो मे महिलाओ को ही प्राथमिकता दी जाये जैसे - प्राथमिक व पाठशालाएँ, टेलीविजन एवं तार विभाग, अस्पताल मे नर्स व परिचारिकाएँ आदि जिससे कुछ उद्योगों मे कार्यरत क्षमता महिलाओ को सर्वप्रथम कार्यरत क्षमता श्रम महिला आदि विचारक बनाया जाता है।

(6) संरक्षण :- प्रसूत काल मे महिलाओ को कार्य से हटाना एक दण्डनीय अपराध घोषित होना चाहिये, उनके निरीक्षण की विशेष व्यवस्था की जाये।

penkraft

Date:
Page No.:

प्र.(5) श्रम सुरक्षा एवं समाज कल्याण के द्वारा उठाये गये कुछ महत्वपूर्ण वर्णन के बाद जानकारी।

उत्तर: श्रम कल्याण कार्य की निम्न विशेषताएँ होती हैं:-

(1) श्रम कल्याण कार्य का अर्थ कुछ विशेष सुविधाओं से है जो श्रमिकों को प्रदान की जाती है।

(2) इन विशेष सुविधाओं का उद्देश्य सम्बन्ध कार्य करने की उन्नत दशाओं में है।

(3) विशेष सुविधाओं का उद्देश्य श्रमिकों के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, नैतिक, बौद्धिक और सामाजिक जीवन की उन्नति है।

(4) इससे श्रमिकों का जीवन स्तर ऊँचा होता है और उनका दृष्टिकोण विस्तृत होता है,

(5) श्रम कल्याण कार्य केवल मालिकों से ही सम्बन्धित न होकर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन से भी सम्बन्धित होती है।

(6) इस कार्य में के का उद्देश्य सामाजिक असंतोष और क्रान्ति को समाप्त करना है,

(7) ये कल्याण कार्य ऐच्छिक संस्थाओं के द्वारा भी किये जा सकते हैं।

(8) जिसमें कोई बातावरण क्रियारत क्षमता का रूपान्तरण विचारक क्षमता का रूपान्तरण किया को रूपान्तरण विभिन्न रूपों पर सामाजिक विचारक कार्यरत क्षमता का विभिन्न विचारक बनाया जाता है।

(9) श्रमको विचारक क्षमता की रूपान्तरण कार्यों पर निर्माण विचारक क्षमता का सम्मान नीति का आयोजन होता है।

(10) श्रम विभाजन के रूपों का वर्तमान क्रिया का आधारित क्षमता का रूपों पर विभाजन कार्यरत क्षमता होता है।

Date:
Page No.:

* श्रम कल्याण का उद्देश्य :- श्रम कल्याण कार्यों के उद्देश्यों को निम्न रूपों में बाँटा जा सकता है :-

(1) श्रमिकों को कार्य की मानवीय दशाएँ उपलब्ध करना,
(2) कार्यकुशलता में वृद्धि करना,
(3) नागरिकता की भावना का ज्ञान कराना,
(4) श्रमिकों, मालिकों और सरकार के बीच स्वास्थ्य सम्बन्धों को निर्माण करना,
(5) राष्ट्रीय उत्पादन को प्रोत्साहित करना, तथा
(6) अनुकूल सामाजिक परिस्थितियाँ उत्पन्न करना।

* श्रम कल्याण कार्यों का वर्गीकरण :- श्रम कल्याण कार्य अत्यन्त ही व्यापक है, इन्हें सीमाओं में नहीं बाँधा जा सकता सुविधा की दृष्टि से श्रम कल्याण कार्यों के तीन भाग किये जा सकते हैं :-

(1) वैधानिक :- इसके अन्तर्गत शासन की ओर से श्रमिकों की भलाई के लिए किये जाने वाले कार्यों को सम्मिलित किया जाता है।

(2) ऐच्छिक :- ऐच्छिक कल्याण कार्यों का उद्देश्य परोपकार होता है। मालिक अपने श्रमिकों की सुविधा के लिए अपनी इच्छा से जो कल्याण कार्य करते हैं, इन्हें ऐच्छिक श्रम कल्याण कार्य कहा जाता है।

(3) पारस्परिक :- पारस्परिक कल्याण कार्य श्रमिकों के परस्पर सहयोग द्वारा किये जाते हैं। इनका उद्देश्य आत्म-सहायता है।

penkraft